



मासिक
शिविरा
पत्रिका

वर्ष : 55 | अंक : 5 | नवम्बर, 2014 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10



राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह, 2014

दिनांक : 5 अक्टूबर, 2014

स्थान : वेटेनरी ऑडिटोरियम, बीकानेर



दाएँ : दीप प्रज्वलन करते हुए मुख्य अतिथि माननीय श्री अर्जुन मेहता, सांसद; विशिष्ट अतिथि माननीय डॉ. गोपालकुमार जोशी, विभागाध्यक्ष; समावेष्ट अध्यक्ष एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री ओंकार सिंह। **दाएँ :** कर्मचारियों के सम्मान में प्रकाशित पुस्तिका 'प्रशस्ति' का लोकार्पण करते हुए महोदय मेहता।



सम्मान समारोह में सम्बोधन करते हुए मुख्य अतिथि माननीय श्री अर्जुन मेहता, सांसद; विशिष्ट अतिथि माननीय डॉ. गोपालकुमार जोशी, विभागाध्यक्ष; समावेष्ट अध्यक्ष एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री ओंकार सिंह तथा अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री पी.सी. माथर।



ऑडिटोरियम में उपस्थित शिक्षा अधिकारी, निदेशक परिवार के सदस्य एवं सम्मानित कर्मचारी।



शिविर पत्रिका

मासिक

न हि ज्ञानेन सर्वेषां पवित्रमिह विद्यते - श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 88 अंक : 8 वार्षिक-मार्गशीर्ष २०७१ नवम्बर, 2014

प्रधान सम्पादक
ऑफिसर सिद्ध

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सायबसत

सहायक
एच. के. सिंह
सुकेस व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय हैं।
- बैंक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविर पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528876
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

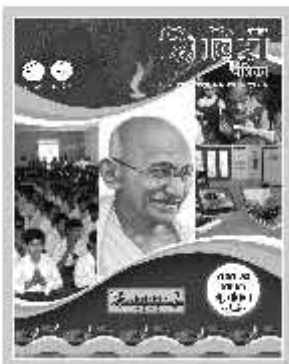
शिविर पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
-वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

विद्यार्थकल्प : मेख पृष्ठ			
● जीवन निर्माता हैं शिक्षक	5	● आनन्द प्राप्ति के सरल उपाय	33
आलेख		विश्वेश्वर करनसिंह चौहान	
● शिक्षक दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री जी का संबोधन	6	● सेनात अम्मापको द्वारा नैतिक शिक्षा	35
प्रस्तुति : प्रकाश पण्डित		सखनारायण पंवार	
● पढ़ने की अलख जग जाना ही सच्चा गुणत्व	9	● चार दशक पुष्पा पन्ना	36
डॉ. कृष्णाकमल पाठक		डॉ. रामाकिशन सोनी	
● गुरु नामक और उनका संदेश	15	● शिक्षा में एक प्रयोग ऐसा भी	38
हास्येक्ष भारद्वाज		डॉ. बालीप्रसाद पंचोली	
● महारत्ना ज्योतिषा फूलो	16	● सुखी व दीर्घ जीवन के उपाय	39
नारायण सास ठाक		अपराज कुमार जैन	
● बच्चों के चाचा नेहल	18	● शिक्षा मनीषी गीताना अशुल कलाम आचाद	40
गायत्री शर्मा		नगेन्द्र कुमार मेहता 'मन्व'	
● ननों के अधिकार	18	● रखें हम हाथों को स्वच्छ	41
जवा डेलर		कलणी दान कच्छावा	
● बच्चों के लिए सबसे बड़ा उपहार	19	● शिक्षक का व्यक्तित्व और विद्यार्थी का चरित्र	42
● बच्चों से कैसा व्यवहार करें	20	ब्याराम	
रूपनारायण काकरा		● गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आयाम	43
● शिक्षण में सांस्कृतिक मूल्यों पर बस	21	सीताराम उपाध्याय	
शोपेश सत्य शर्मा 'अक्षुर'		इमानी सांस्कृतिक धरोहर	
● मेरे अनुभवों की प्रार्थना-सभा	22	● मन में शीर्ष और चित्त में उमड़ा भक्ति	45
सबनलाल जोशी		का चार-चित्तीकाद	
● बाल मन्दूर : एक व्यथा	24	प्रकाश पण्डित	
रामगोपाल 'राही'		उमन्व	
● भारतीय नारी : एक परिचय	25	● शिविर पंचांग (नवम्बर-दिसम्बर 2014)	8
डॉ. विद्या स्वनीकत पालीवाल		● रफ्त	12
● विद्यालय में स्वरूप अनुशासन कैसे ?	27	राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक	
नीना राठी		एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह, 2014	
● समान का दर्शन है शिक्षा	28	ओमप्रकाश सत्सत्त	
प्रह्लाद शर्मा		● शाला प्रांगण से	44
● शिक्षा, शिक्षक और समान	29	● हमारे मामलाह	49
नटवर तेली		इस माहका नीति	
● शब्द शब्द के रोग एवं उनकी रोकथाम	30	● गुरु कृपा से मन की गहर निर्मल बल से भर ले	11
डॉ. एच.एन.एस. घटनागर		प्रकाश चन्द सक्सेना	
● अध्यापन : व्यक्तित्व या सेवा	32	पुस्तक समीक्षा	47
प्रो. (डॉ.) जयनाथल बाहेती		● शिक्षक दिवस प्रकाशन-2014	
		संपीकक : डॉ. रमेश मोहन घटनागर	
		प्रतिष्ठित	
		● पत्रों का संसार	50

अध्यक्ष :

अधिनाल कुमावत, जयपुर मो. 09361355185



पाठकों की बात

● राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और भूतपूर्व प्रधानमंत्री लालबहादूर शास्त्री को समर्पित, तथा 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन' पर केन्द्रित शिविर का अक्टूबर 2014 अंक सूचना, ज्ञान, किन्तन और विमर्श से सरोबोर रहा। 'मूल्यांकन की पृष्ठभूमि', 'क्या, क्यों और कैसे', 'गुणवत्ता-शिक्षा की ओर', 'सर्वांगीण विकास में मूल्य शिक्षा', जैसे विविध पक्षों को सूती हुई सामग्री ने शिक्षा के प्रमचाल को तोड़ने-काटने का काम किया। शास्त्री जी के रोचक प्रसंग के चरित्र 'प्रीति शिक्षा' तथा 'चरित्र प्रधान शिक्षा' के प्रबल पक्षधर बापू की रीति-नीति को विस्तार से व्याख्यायित किया जाना भी बेबाक सूचना का अहसास कराता है। समग्रता से परिपूर्ण प्रस्तुति एवं श्रमसाध्य विशेषांक पर हार्दिक बधाई।

—भगवती प्रसाद गौतम, कोटा

● बधाई और धन्यवाद कि इस बार शिक्षक दिवस प्रकाशन की पांच पुस्तकें प्रकाशित होवे ही अबिलम्ब उनकी लेखकीय प्रतिभां लेखकों के पास भिजवाई। यह गुरुतर कार्य आपने इतना शीघ्र सम्पन्न किया कि विभागीय इतिहास में पहली बार इतनी तत्परता देखने में आई। पुस्तकों का मुद्रण, प्रस्तुतिकरण और संपादन सराहनीय है। शिक्षा निदेशक महोदय के द्वारा आयुष्म के रूप में प्रेरक संदेश अतीव उत्साहवर्धक और इस योजना के दीर्घजीवी होने का प्रबल प्रमाण है।

—डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा, गिरूप

● शिविर पत्रिका अक्टूबर 2014 का मुख पृष्ठ बहुत ही आकर्षक कोलाज के साथ संग्रहणीय अंक था। शिक्षक दिवस समारोह पर आवोचित शिक्षक पुरस्कार आवोचन की रिपोर्ट सजीव लगी। 'मंगल भवन अमंगलहारी' सराहनीय है। मंगलग्रह पर एशिया में भारत को प्रथम सफलता को जिस रोचक तरीके से प्रस्तुत किया है उसकी प्रशंसा शब्दों में किया जाना असंभव है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विशेषांक का प्रत्येक आलेख ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणास्पद है।

—मनमोहन अभिलषी, भरतपुर

● शिविर पत्रिका माह अक्टूबर 2014 का अंक

साज-सजा आवरण पृष्ठ, दिशाकल्प, 'मेरा पृष्ठ' अति उत्तम लगे। इस अंक के सभी आलेख पठनीय हैं। 'चरित्र प्रधान शिक्षा चाहते थे गांधी' आलेख सराहनीय है। 'रीडिंग कैम्पेन : एक नवाचार' के लिए शमीन परिहार को बधाई। आशा है ऐसी ही प्रेरक सामग्री के साथ शिविर के आगामी अंक भी शिक्षा जगत में अपनी सुगन्ध फैलाते रहेंगे।

—मईनुदीन कोहरी, बीकानेर

● 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन' पर केन्द्रित शिविर अक्टूबर अंक आकर्षक मुखावरण के कारण विशिष्ट और संग्रहणीय बन गया है। शिविर के वरिष्ठ संपादक श्री ओमप्रकाश सारस्वत का आलेख 'चरित्र प्रधान शिक्षा चाहते थे गांधी' ज्ञानवर्धक लगा। प्रकृति के साथ शिक्षा को किस प्रकार जोड़ा जाए। यह रचना शिक्षकों का मार्गदर्शन करती है।

—संजीव मदान, रायचिसर-सुरतगढ़

● शिविर अक्टूबर 2014 अंक 'शिक्षकों के सम्मान में खिले सुमन' में प्रमुख शासन सचिव श्री पवन कुमार गोबिल के विचार प्रेरक हैं। 'बच्चा अपने अभिभावक की बात को मले ही सही न माने, मगर शिक्षक की बात को सही मानता है।' कहकर प्रमुख शासन सचिव श्री गोबिल ने बाल जीवन में शिक्षक के महत्त्व को दर्शाते हुए शिक्षकों को बिम्बेदारी का बोध कराया। अंक की सम्पूर्ण सामग्री उपयोगी और जानकारी प्रदान करने वाली है।

—गिरिजा शंकर मिश्र, नीम का थाना

● शिविर पत्रिका अक्टूबर 2014 का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विशेषांक के मुख्य पृष्ठ पर गांधीजी का चित्र एवं प्रार्थना करते बच्चे बहुत ही सुन्दर सुशोभित हो रहे थे। पत्रिका में उत्तरोत्तर श्रेष्ठ लेखों का प्रकाशन किया जा रहा है, इसके लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र हैं। इस अंक में डॉ. अमृता दाधीच का 'गुणवत्ता शिक्षा की ओर कदम', ओमप्रकाश सारस्वत का 'शिक्षकों के सम्मान में खिले सुमन' एवं 'मंगल भवन अमंगलहारी', शंकर सिंह सांद का 'विद्यालय अवलोकन' में 'संबलकर्ता की भूमिका' एवं शमीन परिहार का 'रीडिंग कैम्पेन एक नवाचार', शिवजी गौड़ का 'सी.सी.ई. की सफलता में समुदाय की भूमिका' आदि लेख विशेष सराहनीय हैं।

—डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत
श्रीश्रीराजी रा.उ.पा.वि., खोर्नीसल, जयपुर

विचारमं

तुमने बिना डेस को जीवन
देस तुम्हें क्या देगा?
अपना जीवन काव्य रचने को
जान तुम्हारा लेगा।

—राजवारी सिंह विजय

(हरिद्वार में स्वामी सत्यभिरामंद गिरि जी मठरुच द्वारा स्थापित बहुमुखिले भारत माता मन्दिर के तोरणद्वार पर ये पंक्तियां अंकित हैं।)



अनंद सिंह
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

जीवन निर्माता हैं शिक्षक

म व्यावधि अवकाश के पश्चात विद्यालय खुलने पर सभी शिक्षक भाई-बहनों का अभिनन्दन करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। वर्तमान सत्र के चार महीने से अधिक का समय व्यतीत हो गया है। अधिकांश राज्यस्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताएं भी सम्पन्न हो चुकी हैं। प्रथम एवं द्वितीय आवधिक परख के पश्चात अब अर्द्धवार्षिक परीक्षा नजदीक आ रही है। शरद ऋतु का आगमन हो रहा है। कहने का आशय यह है कि अब गम्भीरता पूर्वक अध्ययन-अध्यापन के दिन आ गए हैं।

गुरुजन शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख सूत्रधार हैं। विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र-छात्राओं में विद्या एवं उत्तम संस्कारों का बीजारोपण कर उनके उत्तम भविष्य का निर्माण करना उनकी ही दायिरी है। माता-पिता जीवनदाता हैं, मगर शिक्षक जीवन निर्माता। ये जीवन में जीने की कला भरते हैं जिससे जीवन सुखमय और यशमय हो जाता है। शिक्षकों को अपनी इस विशिष्ट स्थिति के भाव हर समय हृदय में संजोकर रखने चाहिए। इससे उन्हें निश्चय ही सुख व सुकून मिलेगा तथा उत्तम व अनुकरणीय कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

बद्यपि ग्रीष्मावकाश के पश्चात के सवा सी दिनों में विद्यालयों के अकादमिक एवं भौतिक परिवेश में काफी सुधार हुआ है तथापि इसमें निरन्तर सुधार की अपेक्षा है। स्वच्छ भारत अभियान इस दिशा में वरदान सिद्ध हुआ है। विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना-एन.एस.एस., समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं समावसेवा-एस.यू.पी.उ.सू.यू., स्कर्टजर्निंग-गार्डिंग कार्यक्रम स्वच्छ भारत अभियान में अग्रिम भूमिका निभा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि इन कार्यक्रमों के प्रभारी इस दिशा में वांछित पहल करेंगे। मुझे आपके अनुभवों एवं सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। आपके अनुकरणीय अनुभवों, Success Stories एवं सुझावों को हम सिखित पत्रिका के माध्यम से सबके साथ साझा करेंगे।

पिछले महीने, 5 अक्टूबर 2014 को राज्यस्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह का आयोजन बीकानेर में किया गया जिसमें 34 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। मंत्रालयिक कर्मचारी विभाग के मेरूदण्ड होते हैं। एक बात में मंत्रालयिक कर्मचारी साथियों से कहना चाहूंगा। शिक्षकों को अपना शिक्षण कार्य करते हुए वेतन, भत्तों, अवकाश, सेवा सत्यापन, पेंशन आदि की चिन्ता नहीं रहनी चाहिए। इससे वे बेहतर अध्यापन कर पाएंगे। वह चिन्ता मुक्ति उन्हें मंत्रालयिक कर्मचारी ही प्रदान कर सकते हैं। पिछले महीने निदेशालय में एवस्थान राज्य मानव अधिकार आयोग के माननीय सदस्य डॉ. एम. के. देवराजन ने कोर्ट लगाकर बच सुनवाई की। इसमें पेंशन स्वीकृत न होने के बहुत पुराने प्रकरण ध्यान में आए। मुझे लगा कि यदि किंचित अतिरिक्त संवेदनशीलता के साथ काम किया होता तो कदाचित्त यह स्थिति नहीं आती। दिशाकल्प का वह पृष्ठ मेरा अपना पृष्ठ है। अपने हृदय के उद्गार इस पृष्ठ के माध्यम से आप तक पहुंचाने का मेरा प्रयास रहता है। वह आदेश-परिपत्र का पृष्ठ नहीं है लेकिन गहराई से समझें तो उससे कहीं अधिक है। मुझे विश्वास है कि शिक्षा विभाग के मंत्रालयिककर्मी पूर्ण संवेदनशीलता के साथ सेवा सम्बन्धी प्रकरणों का निस्तारण करने में आगे आएंगे। इसी में उनकी एवं विभाग की शान है।

अन्त में संस्था प्रधान एवं शिक्षकों से मेरा अनुरोध है कि वे मिल बैठकर सत्र के शेष समय के लिए प्रभावी शिक्षण व अधिगम (Teaching and Learning) योजना बनाएं तथा पूरे मन से उस पर कार्य करें ताकि आने वाली अर्द्धवार्षिक परीक्षा में ही नहीं अपितु वार्षिक परीक्षा में उनके विद्यालय एवं विद्यार्थियों की उपलब्धि से उन्हें गौरव व गरिमा मिल सके।

शुभकामनाओं के साथ,


(अनंद सिंह)

“ गुरुजन शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख सूत्रधार हैं। विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र-छात्राओं में विद्या एवं उत्तम संस्कारों का बीजारोपण कर उनके उत्तम भविष्य का निर्माण करना उनकी ही दायिरी है। माता-पिता जीवनदाता हैं, मगर शिक्षक जीवन निर्माता। ”

शिक्षक दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री जी का संबोधन

बागबां ने सींचा तालीम का गुलिस्तां

□ प्रस्तुति : प्रकाश पंड्या

शिक्षक दिवस पाँच सितम्बर, 2014 का दिन भारत के शैक्षिक इतिहास में अविस्मरणीय दिन के रूप में सदा याद रहेगा। शिक्षक से देश के राष्ट्रपति बने महान विचारक, दार्शनिक और चिंतक डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन के जन्म दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाए जाने की सुदीर्घ परंपरा के इतिहास में कदाचित्त यह पहला अवसर रहा जब पूरे देश ने एक साथ शिक्षक दिवस के आयोजन को न केवल सहभागिता के साथ मनाया अपितु राष्ट्र की नई पीढ़ी बच्चों और इस पीढ़ी के माध्यम से देश के निर्माता शिक्षकों को एक मंच पर इस आयोजन में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी देश की नई पीढ़ी से रु-ब-रू हुए और संवाद के माध्यम से उन्होंने न केवल पुरखों के सपनों के भारत की अपनी कल्पना के अनुरूप निर्माण की रीज अभिलाषा से अक्कात कराया अपितु देश के भावी पीढ़ी की कल्पनाओं से भी रु-ब-रू हुए।

यह संवाद महब देश के शीर्षस्थ पद पर आसीन प्रधानमंत्री के रूप में एक एजनीतिज्ञ और विद्यार्थियों के बीच ही नहीं था अपितु यह संवाद सीख के चलप्रपात और चिन्तासाधनों के महासागर के मध्य हुआ। अब तक का अनुठा और अपूर्व संवाद था। लगभग 115 मिनट की अवधि में करोड़ों देशवासियों को ऐसा आभास हुआ कि फूलों की महक और कलियों की मुस्कान के बीच देश का बागबां तालीम के गुलिस्तां को शिख से सींच रहा हो। प्रधानमंत्री के साथ संवाद करने का अवसर पाकर तालीम के गुलिस्तां में महकते फूल और मुस्कान बिखेरती कलियां भी फूली न समाई नज़र आईं।

प्रधानमंत्री महोदय के तीस मिनट के अपने संबोधन और शेष समय में देश के विभिन्न प्रांतों के विद्यार्थियों की बेबाक और निःसंकोच अभिव्यक्ति संवाद में मानो अमृतकुंभ हाथ लगा। संबोधन और संवाद की चुगलबंदी में विद्यार्थी, शिक्षक और देश का आम नागरिक सभी केन्द्र में रहे—“एक भारत-ब्रेड भारत”



एक अक्षपक मालती खगिति की सार सम्भाळ करतो हुए अपने सामर्थ्य से पौधों को दी जागे वाली सुगन्ध -सुगन्ध स्याद से भगवान को प्रसंद आने वाले फूलों का सृजन कर सकता है फिर हमें तो परमात्मा ने कितने ही फूल दिए हैं। आइये, इन फूलों को संवारे और भारत माता के अलंकरण के लिए लगाएं।

—श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री, भारत सरकार

बनाने के सुनहरे सपने को मूर्त रूप देने की युक्तियां और रास्ते खुद-ब-खुद बहन में उभरते चले गए। आइये प्रधानमंत्री महोदय के उन वक्तव्यों और संवादों के माध्यम से उभरकर आए तथ्यों तथा राष्ट्रहित समर्पित सूत्रों पर दृष्टि डालें। निम्न व्यवहार और आचरण में ढालकर भारत को समग्र सामर्थ्यवान देश के रूप में प्रतिष्ठित करने की संकल्पना साकार की जा सकती है।

देश सेवा का मर्म : माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने न केवल विद्यार्थियों अपितु राष्ट्र निर्माता संज्ञा अभिहित शिक्षकों के साथ-साथ आम नागरिक के लिए देश सेवा का मर्म कार्य संस्कृति को बढ़ावा, ग्रामोपलसना और अनुशासन के साथ स्वच्छता, राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग सहित उनके संरक्षण संबर्द्धन में प्रत्येक नागरिक की निष्ठापूर्वक भूमिका के लिए समर्थित किया।

प्रधानमंत्री बनावट ट्रॉस्क टीचर की खूबियां : शिक्षक दिवस पर यद्यपि संबोधन देश के प्रधानमंत्री की हैसियत से रहा तथापि संपूर्ण संबोधन और विद्यार्थी-प्रधानमंत्री अंतःक्रिया में उनके भीतर दृढ़ता से खड़ा एक शिक्षक ही

अपनी अभिट छाप छोड़ने में सफल रहा। स्वयं प्रधानमंत्री ने अपने को टास्क टीचर निरूपित करते हुए कहा कि उन्हें अच्छी तरह पता है कि एक श्रेष्ठ शिक्षक में किन खूबियों का होना आवश्यक है। संबोधन के दौरान महत्वपूर्ण प्रसंग, संस्मरण और दृष्टांत सहित अपनी उच्च कोटि की सोच साझा करते हुए प्रधानमंत्रीजी ने इस आयोजन की प्रत्येक कड़ी को यह खोजने को मजबूर कर दिया कि यदि देश का प्रत्येक नागरिक उनके प्रत्येक विचारों को आत्मसात करने और उन्हें सहयोग करने का प्रण कर लें तो “एक भारत श्रेष्ठ भारत” की अभिलाषा को साकार होने में देर नहीं लगेगी।

अपनेपन के भाव का संजीवनी सूत्र : संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री महोदय द्वारा यह स्थापित करना की पूरा देश उनका परिवार है और इस परिवार से मिला अपनापन उन्हें दिन-रात काम करते रहने के बावजूद थकान का अनुभव नहीं होने देता। इसी पर एक संस्मरण सुनाते हुए उन्होंने कहा कि एक 5 साल की नन्हीं बालिका अपने 3 साल के छोटे भाई को उठाकर बसुरिकल पहाड़ी चढ़ रही थी। सामने से आ रहे महात्माजी ने बालिका से पूछा — “तुम्हें थकान नहीं लग रही” इस पर बालिका ने उत्तर दिया “वे मेरा भाई है।” महात्माजी ने फिर वहीं सवाल किया “मैं पूछ रहा हूं तुम्हें थकान नहीं लग रही।” बालिका ने फिर वहीं उत्तर दिया “वे मेरा भाई है।” महात्माजी का हर बार वहीं सवाल और बालिका का हर बार वहीं उत्तर। आखिर में महात्माजी ने कहा— तुम मेरा सवाल नहीं समझ रही। बालिका के आत्मीयता भरे उत्तर ने महात्माजी को सोचने को मजबूर कर दिया और कहा “मैं आपका सवाल समझती हूं, वे मेरा भाई है इसलिए मुझे थकान नहीं लग रही। महात्माजी को भी अपनेपन का मर्म समझ में आ गया। प्रधानमंत्री महोदय ने कहा जब कोई कार्य अपनेपन की भावना से किया जाए तो थकान का तो प्रश्न ही नहीं है। अपनेपन के भाव से तनाव और अवसाद खत्म हो जाते हैं।

डिग्री के साथ हुनर को तवज्जो :

प्रधानमंत्रीजी ने अपने संबोधन में केवल किताबी ज्ञान को जीवन की पूर्णता के लिए पर्याप्त न होना बताते हुए महान संत आचार्य विनोबा जी के निकटतम साथी दादा धर्माधिकारी जी का नौकरी की मांग के लिए उनके पास पहुँचे एक युवक का प्रसंग साझा करते हुए कहा कि वर्तमान समय में कौशल विकास की सबसे बड़ी जरूरत है। उन्होंने कहा कि एक एम.ए. पास युवक से जब पूछा गया कि तुम्हें आता क्या है? तो जवाब मिला “मैं एम.ए. पास हूँ” उससे पूछा गया “तुम्हें टाईपिंग आती है” उत्तर मिला “मैं एम.ए. पास हूँ। जीवन की सामान्य तकनीक हुनर और जीवनचर्या से जुड़े उनके हर सवाल पर युवक ने कहा - मैं एम.ए. हूँ। हुनर रहित डिग्रीधारी युवक से धर्माधिकारीजी ने कहा- तुम कैसे एम.ए. हो? तुम्हें आता क्या है? वर्तमान समय केवल डिग्री के सहारे जीवन नैया पार उतरने का समय नहीं है। बिना हुनर की डिग्री निरर्थक है।

बचत की नायाब युक्ति : प्रधानमंत्रीजी ने न केवल प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग पर बल दिया अपितु वर्तमान समय की नितांत आवश्यकता वाली सुविधाओं की बचत के नायाब नुस्खे भी बताए। नागपुर क्षेत्र का एक उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि पूर्णिमा की चांदनी रात में किस प्रकार वहां के नगर निगम ने बिजली बचत की युक्ति ढूँढ निकाली। उन्होंने कहा कि इस उपाय के साथ नवीन सोच अपनाते हुए इसे और अधिक कार्यशील तथा जीवन के लिए उपयोगी बनाने की पहल की गई तो बिजली बचत के साथ साथ उस समय का सीखने के अवसर के रूप में उपयोग आम के आम गुठली के दाम उक्ति को चरितार्थ कर गया। विद्यार्थियों के साथ आम नागरिक को भी प्रधानमंत्री ने यह आह्वान करके मौजूदा वक्त की जरूरत में सहभागी बनने का आमंत्रण दिया कि वे यदि अपने घर की बिजली बचा लेते हैं तो उस गरीब की कुटिया में भी रोशनी के इंतजाम में भागीदार बन जाएंगे, जिसे अब तक उजाले नसीब नहीं हुए।

टास्क टीचर के टॉप टिप्स :

- अच्छा विद्यार्थी बनना देश की सबसे बड़ी सेवा है।
- हम जैसे अनेक लोगों को बनाने में शिक्षक

की अहम भूमिका रही है। उनका ऋण हमें स्वीकार करना होगा।

- शिक्षक का विद्यार्थी से और विद्यार्थी का शिक्षक से बना रिश्ता अटूट रहना चाहिए।
- सारी दुनिया में योग्यतम शिक्षकों की बड़ी मांग है।
- क्यों न भारत सर्वश्रेष्ठ शिक्षक विश्व को उपलब्ध कराने में समर्थ हो।
- पीढ़ियों का निर्माण करने वाला होता है शिक्षक।
- शिक्षक का आचरण एक मां की तरह हो। जिस प्रकार एक मां अपने सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार करती है उसी प्रकार एक शिक्षक विद्यार्थियों के साथ भेदभाव न करे।
- जो लोग साल का सोचते हैं वे अनाज बोते हैं, जो लोग 10 साल का सोचते हैं वे फलों के वृक्ष बोते हैं लेकिन जो पीढ़ियों का सोचते हैं वे इंसान बोते हैं।
- समाज जीवन में शिक्षक के माहात्म्य को उजागर करें।
- हमारी शिक्षा प्रणाली को जीवन निर्माण के साथ जीवंत बनाना होगा।
- एक जमाना था जब समाज का सबसे आदरणीय व्यक्ति शिक्षक हुआ करता था। ये अपनेपन का सूचक है।
- आज भी कई बालक जो बात अपनी मां, अपने भाई-बहन को नहीं बता सकता उसे अपने शिक्षक को बताने के लिए लालायित रहते हैं।
- अत्यन्त सामर्थ्यवान विद्यार्थी शिक्षक बनना पसन्द क्यों नहीं करते? इस सवाल का जवाब खोजना होगा।
- आज विद्यार्थी में यह भाव जगाने की आवश्यकता है कि वह एक उत्तम शिक्षक बनकर देश और समाज के काम आने का प्रण कर सके।
- देश के गणमान्य लोगों से आग्रह है आप अधिकारी हों, डॉक्टर हों, इंजीनियर हों, वकील हों निकट के विद्यालय में सप्ताह में केवल एक पीरियड पढ़ाने का जिम्मा लीजिए।
- ऐसा अगर होने लग जाए तो कहीं भी अच्छे टीचर या टीचर न होने की समस्या स्वतः हल हो जाएगी।
- राष्ट्र निर्माण की संकल्पना को जन आंदोलन

में परिवर्तित करें।

- अपनेपन के बिना सेवा का भाव नहीं जगता। अपनापन चिरंजीवी होता है।
- आज टेक्नोलॉजी का महत्व बढ़ गया है इसलिए हमारी चाहे जो उम्र हो गई हो हम भी सीखें।
- नई पीढ़ी को नवीन तकनीक सीखने से वंचित रखना एक प्रकार का अपराध है।
- बचपन खेलकूद से सरोबार होना चाहिए। खेलकूद के बिना जीवन खिलता नहीं है।
- जीवन कुछ बनने के लिए पसीना बहाओ, जीवन के आनन्द को टी.वी. और मनोरंजन के दायरे में मत बांधो।
- पाठ्यक्रम के सिवाय किताबें पढ़ने का स्वभाव बनाइये।
- महान लोगों की जीवनी पढ़ने की आदत डालें।
- जीवन चरित्र हमें सत्य के निकट ले जाता है।
- जितना पढ़ने में रुचि दिखाएंगे उतना ही आगे बढ़ेंगे।
- पुस्तक पढ़ने के सामूहिक और साप्ताहिक आयोजन होने चाहिए।
- “वांचे गुजरात” सबके लिए समझने लायक अभियान रहा है।
- अनुभव और शिक्षा दोनों ही जिन्दगी को आगे बढ़ाने में सहायक है।
- यदि शिक्षा सकारात्मक सोच और संस्कारों के साथ नहीं दी गई है तो अनुभव दिग्भ्रमित कर सकते हैं।
- अगर आगे बढ़ने वाले के इरादों में दम है तो परिस्थितियां उसे नहीं रोक सकती।
- देश के नौजवानों और बालकों में बहुत सामर्थ्य है।
- वैयक्तिक और सार्वजनिक दोनों ही जीवन क्षेत्र में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें।
- छोटी-छोटी बातें जीवन में बड़ी भूमिका निभाती हैं।
- मौसम नहीं बदला हमारी आदतें बदल गई है, हमारी आदतें बिगड़ गई हैं। हम प्रकृति के साथ जीना भूल गए हैं।
- प्रकृति से संघर्ष नहीं, प्रेम करें।
- हमारे शास्त्रों में पौधों को परमात्मा माना गया है। नदी को माता कहा गया है लेकिन ये भूल गए तो गंगा भी मैली हो गई।

- वर्तमान की प्रतिकूलताएं प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का नतीजा है।
- राजनीति को प्रोफेशन नहीं अपितु सेवा का क्षेत्र मानना चाहिए।
- प्रत्येक कार्य लाभ के लिए नहीं किया जाता।
- जिस कार्य में लाभ कमाने की नीयत होती है, उसमें मुसीबत का खतरा होता है।
- कुछ बनने की नहीं अपितु कुछ करने के सपने देखो।
- महत्वाकांक्षा जीवन में बोझ न बनने पाए।
- देश के बच्चे नई तकनीक से देश और विश्व की जानकारी से अवगत हो।
- डिजिटल इंडिया का सपना है। आधुनिक टेक्नोलॉजी हमारे छात्रों तक पहुंचे और सभी भाषाओं में पहुंचे। एक ऐसा भारत जिसके बारे में तकनीक के जरिए हर भाषा में जानकारी उपलब्ध होगी। आज का कार्यक्रम टेस्टिंग कार्यक्रम है। क्वालिटी ऑफ एज्युकेशन का मकसद भी इस तकनीक से पूरा होगा। वो दिन दूर नहीं जब एक उत्तम शिक्षक से लाखों बच्चे एक साथ पढ़ पाएंगे।
- आज समृद्ध से समृद्ध देश भी स्किल डेवलपमेंट को महत्व देने लगे हैं।
- स्किल डेवलपमेंट आवश्यक है। जिस क्षेत्र में काम करें उसमें पूर्ण प्रवीणता होनी चाहिए।
- भीतर का बालक असमय खो रहा है, उसे जिंदा रखने की जरूरत है। बचपन असमय न खोने पाए। भीतर के बालक को मुझाने मत दीजिए।
- हर बालक अनुशासित जीवन जीने की आदत डालें।
- जापान में विद्यार्थियों और अभिभावकों का अनुशासन प्रेरणास्पद है।
- बालिका शिक्षा प्राथमिक आवश्यकता है। एक बालिका पढ़ने पर दो पीढ़ियों का कल्याण करती है। बालिकाओं को निकटतम स्कूल की सुविधा मिले।
- प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के शपथ समारोह में मैंने जो आनन्द महसूस किया उससे कहीं ज्यादा आनन्द गांव के गरीब की बेटी को स्कूल पहुंचाने में अनुभव किया है।

—प्रधानाचार्य

राजकीय मॉडल स्कूल, घाटोल (बांसवाड़ा)

मो. 9414101857

शिविर पंचांग

नवम्बर, 2014

रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

कार्य दिवस 23, रविवार 05

अवकाश 02, उत्सव 03

04 नवम्बर—मोहरम (अवकाश), कालिदास जयन्ती (उत्सव)। 06 नवम्बर—गुरु नानक जयन्ती (अवकाश)। 07-08 नवम्बर—राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश)। 10-11 नवम्बर—जिला स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। 11 नवम्बर—राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव), 14 नवम्बर—बाल दिवस (उत्सव)। शिक्षा समारोह का आयोजन। 17-21 नवम्बर—विशेष आवश्यकता वाले बालक बालिकाओं को अंग उपकरण वितरण। 19-25 नवम्बर—कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। 22 नवम्बर—शिक्षा शनिवार का आयोजन। 23 नवम्बर—मीना मंच के अन्तर्गत “मीना” कहानी का वाचन एवं चर्चा। 25-30 नवम्बर—केजीबीवी राज्य स्तरीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन। 30 नवम्बर—विद्यालय सुविधा अनुदान के उपयोगिता प्रमाण-पत्रों का प्रेषण (प्रारम्भिक शिक्षा)

नोट:—1. विद्यालय स्तर पर प्रतियोगिताएं/एस.यू.पी.डब्ल्यू शिविर / वार्षिक उत्सव 30 नवम्बर, तक अनिवार्यतः सम्पन्न किये जावें। 2. कम्प्यूटर प्रशिक्षण। 3. द्वितीय/तृतीय रविवार NTSE (प्रथम स्तर) व NMMS राज्य स्तरीय परीक्षा का आयोजन। 4. कैरियर डे आयोजन सम्बन्धी पूर्व प्रशिक्षण (SIERT के माध्यम से) जिला स्तर पर आयोजन। 5. अभिभावकों/शिक्षकों की नवम्बर के द्वितीय सप्ताह में संयुक्त बैठक आयोजित कर द्वितीय परख के प्रगति पत्र विद्यार्थियों/अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार विमर्श।

दिसम्बर, 2014

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	31
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

कार्य दिवस 26, रविवार 04

अवकाश 01, उत्सव 02

01 दिसम्बर—विश्व एड्स दिवस, विश्व एकता दिवस (उत्सव), 02-11—दिसम्बर ग्राम स्तर पर शैक्षिक योजना निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन (प्रारम्भिक), 03 दिसम्बर—विश्व विकलांगता दिवस का आयोजन (समावेशित शिक्षा के उन्नयन हेतु), 08-13 दिसम्बर—सम्बलन द्वितीय चरण, 10 दिसम्बर—मानव अधिकार दिवस (उत्सव), 11-12 दिसम्बर—राज्यस्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन, 13 दिसम्बर—मीना विद्यालयों में दादी-नानी दिवस का आयोजन, 14-21 दिसम्बर—राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन, 17-18 दिसम्बर—राज्यस्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन एवं दल गठन, 18-31 दिसम्बर—अर्द्धवार्षिक परीक्षा (सभी कक्षाओं के लिए), 19 दिसम्बर—भामाशाह योजना का अर्द्धवार्षिक प्रगति प्रतिवेदन निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को प्रेषित करना, 20-24 दिसम्बर—राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविर, 25-26 दिसम्बर—राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, 25 दिसम्बर—क्रिसमस डे (अवकाश), राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान को दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही करना। 28 दिसम्बर—गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश)

‘शिक्षा और चिन्तन’ पुस्तक का सम्पादकीय

पढ़ने की असख जग जाना ही सच्चा गुरुत्व

□ डॉ. कृष्णाकान्त पाठक

शिक्षा के दर्शन पर लिखित विविध आलेखों का विहंगावलोकन करते हुए अचानक अपनी पाठशाला से जुड़ गया हूँ। अधिकांश लेखकगण सेवक शिक्षकगण हैं और उनके अधिकांश निबन्धों में दो बिन्दु सुस्पष्ट हैं— प्रथम, सभी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट हैं और द्वितीय, प्रायः सभी प्राचीन शिक्षण व्यवस्था के प्रशंसक हैं। कतिपय ने व्यवस्था परिवर्तन में नवाचारों की चर्चा की है।

दर्शन शास्त्र के जगत में इससे संबंधित विचारकों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है— प्रथम, दार्शनिक तथा द्वितीय, दर्शनशास्त्री। दार्शनिक भीतिक उद्भावनाएं प्रकट करता है और दर्शनशास्त्री उनका समेकन-विश्लेषण करता है। अपने कलेवर के कारण पुस्तक शिक्षा दार्शनिकता की बजाय शिक्षा दर्शनशास्त्रीयता पर केन्द्रित है। वैसे शोध और बोध में प्रायः एक अन्तर रहा भी है और रहता भी आया है। शोध पर कई निबन्ध प्रायः नवा शिक्षक/टीचर टुडे के के अंग बने हैं और बोधपरक निबन्ध इन ग्रन्थों के अंग।

आधुनिक भारतीय शिक्षाशास्त्र सामान्यतः गाँधी, नेहरू और टैगोर के चिन्तनों से प्रभावित रहा है और ये तीनों क्रमशः भारतीय शिक्षा दर्शन के सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् रहे हैं। नैतिकता व वैज्ञानिकता तथा प्रकृतिपरकता की इस त्रिवेणी के समानान्तर ही अध्यात्म जगत के तीन आधुनिक चिन्तक भी प्रसिद्ध रहे हैं और प्रायः बार-बार संदर्भों में उल्लेखित होते रहे हैं— स्वामी विवेकानन्द, जेदू कृष्णामूर्ति तथा महर्षि अरविन्द। ये तीनों क्रमशः दर्शन के कर्म, ज्ञान और शक्ति रहे हैं, जिन्हें प्रायः शिक्षा शास्त्र में हैण्ड, हेड और हार्ट के तीन ‘एच’ के रूप में देखा जा सकता है।

ज्ञान का दर्शन नए दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ रहा है। विश्व के निरन्तर वर्द्धमान ज्ञान-विज्ञान की चुनौतियों को सामना करने के लिए राष्ट्रीय ज्ञान आयोग का गठन हो चुका है। सर्व शिक्षा अभिवान की असख माध्यमिक



जन्म तिथि : 11 अगस्त, 1973

शिक्षा : इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक, परम्परागत (दर्शनशास्त्र) तथा पीएच.डी., यू.जीसी. से बुनियाद रिसर्च फेलोशिप के अन्तर्गत ‘अस्तित्ववाद’ पर शोध।

कर्म : भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) 2001 के राजस्थान केन्द्र के वरिष्ठ अधिकारी।

रचनाकार्य : संवाद : संबंध और संबोधन, प्रेम : एक वैज्ञानिक अध्ययन, नकारात्मक सोच : महानशा का चर, भारतीय संस्कृति के आधारस्तम्भ, शिक्षा और देवदत्त, आर्याभट्ट : शाक्यीय से जन्मद्विप, अस्तित्ववाद : पृष्ठभूमि और प्रभावभूमि। समाज एवं राजनीति दर्शन, धर्म दर्शन, धर्म की विज्ञान यात्रा, शोध और प्रस्ता, देवदत्त की वापसी, ईश्वर, कुत्ता और आदमी : एक नाटिक की प्रार्थना, गाँधीगिरी का मैनेजमेंट, क्रांतिपथ : द फादर इंडिया, मुक्तिपथ : मुक्त जीवन की ज़रूरत, जीवनपथ : चार्ज-सूत्र, मृत्युपथ : अमृत की उल्लास, शेर नहीं शोर, मार्क्स के दर्शन की दृष्टि, साक्षात्कार : व्यक्ति की अभिव्यक्ति की विधा, संस्कृत साहित्य का समानर इतिहास, गाँधीवाद और मार्क्सवाद, विश्व चिन्तन के चार अध्याय।

सम्पर्क : विशिष्ट सचिव, माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार, जयपुर

फ़ोन : 0141-2227046

ई-मेल : kk_pathak@yahoo.co.in

शिक्षा तक पहुँच चुकी है और उच्च शिक्षा के द्वार पर दस्तक देने वाली है। हर वैभवशाली अपना विश्वविद्यालय शुरू करने में समर्थ हो गया है और पब्लिक स्कूल से कोचिंग इंस्टीट्यूट तक के क्रेडेंशें के कहरावर में लाखों लोग संलग्न हैं। चौदह सवालियों में करोड़पति बनने का कबाब देने व ख्वाब दिखाने वाले प्रबंधन के बाजार में प्रशासन येन-केन प्रकारेण स्वयं को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है। आज के जिज्ञासु के

हाथ में गुग्गुलु व समिधा नहीं, गूगल व विकीपीडिया है। वह स्लेट व कॉपी पर लिखने की बजाय टैबलेट पर कॉपी-पेस्ट करने में अधिक सिद्धहस्त है। ऐसे में स्वाध्याय की प्रेरणा ही त्रेष्ठ विकल्प है। स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ है— स्वयं अध्ययन करना। कभी बुद्ध ने आत्म दीपो भव कहा था, तब उसका भी भावार्थ यही था। मुझे पुरानी सुक्ति स्मृत हो आई है— सबसे अच्छा गुरु वह है, जो जीवन भर छात्र बना रहे व सबसे अच्छा छात्र वह है, जो स्वयं अपना गुरु बन जाए। अनंत ज्ञान को हम चाहें भी तो कितना पढ़ व पढ़ा सकते हैं। पढ़ने से समझ आ जाए, तो पढ़ाना सफल हो जाता है, मगर पढ़ने की असख जग जाए, तो गुरुत्व सफल हो जाता है। इसीलिए दानियों को सलाह दी जाती है कि अन्न का दान करें, मगर बीज का दान करना कहीं भूल न जाएं। पारसी धर्म के प्रवर्तक जरमुस्त्र ने जब सम्राट को सीधाम्य के वरदान की बजाय बीज का दान दिया था, तब भी वे यही चाहते थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अपने प्रतीक चिन्ह के साथ ग्रीक भाषा में जो सुक्ति लिखी है, उसका अर्थ है— चितनी शाखाएं, उतने वृक्ष (Quot Ramul Tot Arborea) सचमुच वह कितना सही है।

कभी गुरुओं के भी आदिगुरु दत्तात्रेय ने स्वयं गुरु के विषय में प्रश्न उठाते हुए कहा था— वे उर्वर पृथ्वी, वे खुला आकाश, वे बहती हवाएं, वे जलती आग, वे बहता पानी, वह सुबह आता सूर्य, वह रात बिताता चांद, ये उपनता सागर, ये नाचते पोर, ये चरती गायें, ये इतराती तितलियां, ये शहद बनारती मधुमक्खियां, ये मदमस्त हाथी, वे व्यस्त चींटी, वे बाला बुनती मकड़ी, ये कुलांचे भरते हिरन, ये चहचहाती चिड़िया, वे अबोध बच्चे, ये खरब शिकारी और ये बहरीले सांप भी... सब गुरु ही तो हैं। सचमुच, प्रकृति में ऐसा कौन है, जो गुरु नहीं है? दत्तात्रेय ने चौबीस गुरु गिनाए, ये गृंखला और बढ़ती जाती पर शावद सुनने वाला बक गया हो या फिर वह गुरुत्व का अर्थ ही

समझ गया हो।

अध्ययन अध्यापन में विषयगत चिंताएं ही बहुत रही हैं, जो कहीं विज्ञान बनाम कला के रूप में तो कहीं वाणिज्य बनाम तकनीकी के रूप में मुखरित हुई हैं। सबकी कामना है, ज्ञान जब कला बने, तो सत्य से दूर न हो और जब विज्ञान बने, तो भी शिवत्व का सौंदर्य के लिए रहे। विज्ञान का विराट संसार हमारा स्वागत कर रहा है। ज्ञान के लिए कर्म का आधार तलाशना एक चुनौती रहा है। हमारे ज्ञान की सबसे बड़ी विडंबना ही यह है कि वह कर्तव्य तो सदियों से बना हुआ है, किंतु उसमें कर्तव्य लाने में अभी सहस्राब्दियाँ शेष हैं। पढ़ना अच्छा है, काम का पढ़ना भी अच्छा है, लेकिन बस काम के लिए पढ़ना अच्छा नहीं। फिर हम ज्ञान की पिपासा ही नहीं, उसके अमृतत्व से भी चूक जाते हैं, चाहे कितना ही 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' क्यों न दुहराते रहें। यदि मुक्त मन से विद्यार्जन न किया जाए, तो 'सा विद्या या विमुक्तये' भी चरितार्थ नहीं हो पाता। जब भी पढ़े, यह ध्यान रखें कि वह समय काटने के लिए पढ़ा जा रहा है या फिर समय से आगे बढ़ने के लिए। वैसे भी अच्छी किताबों के लिए मार्क ट्वेन ने कहा था कि इन्हें रखना तो सभी चाहते हैं, मगर पढ़ना कोई नहीं चाहता। क्या यह सच नहीं है। आदमी में किताबों से दुराव से ज्यादा अच्छी किताबों से दुराव पैदा हो गया है। हैरी पॉटर करोड़ों की संख्या में बिक कर अरबों की कमाई दे जाती है और कार्ल मार्क्स को उनके जीवन में प्रायः जीविका के लिए दूसरों पर निर्भर रह जाना पड़ता है। इतिहासकार कहते हैं- जानवर रह जानवर गया, क्योंकि उसने अपना जीवन वहीं से शुरू किया, जहां उसके पिता ने शुरू किया था, मगर आदमी जानवर से आदमी बन गया, क्योंकि उसने अपना जीवन वहां से शुरू किया था, जहां उसके पिता ने खत्म किया था। अब एस.एस.एस. व फेसबुक की दुनिया में उलझी रहने वाली पीढ़ी के लिए अच्छाई की पढ़ाई कराने वाली किताबों के खत्म हो जाने का खतरा कई गुना हो गया। तब आचार से शिक्षा देने वाले आचार्यजन की भूमिका और गुरुत्तर हो जाती है, क्योंकि वे ही तो भावी कर्णधारों के सूत्रधार और दिग्दर्शन के आधार हैं। यदि मुक्त मन से विद्यार्जन न किया जाए, तो 'सा विद्या या विमुक्तये' भी चरितार्थ

नहीं हो पाता। जब भी पढ़े, यह ध्यान रखें कि वह समय काटने के लिए पढ़ा जा रहा है या फिर समय से आगे बढ़ने के लिए। वैसे भी कभी जॉर्ज लिचनबर्ग ने कहा था- दुनिया में किताबों से ज्यादा अजनबी कुछ भी नहीं। यह प्रायः उन लोगों द्वारा छापी जाती है, जो उन्हें पढ़ते नहीं, उन लोगों द्वारा बांधी-बेची जाती है, जो उन्हें पढ़ते नहीं, उन लोगों द्वारा आलोचित की जाती हैं, जो उन्हें पढ़ते नहीं और प्रायः उन उन लोगों द्वारा ही लिखी भी जा रही है, जो कभी पढ़ते नहीं यह घोर अति है। हर पढ़ा-लिखा पढ़ता नहीं और हर लिखा पढ़ने लायक नहीं। तभी तो 'मसि कागद छुयो नहिं, कलम गही नहिं हाथ' कहने वाले कालजयी हो जाते हैं और काल के कलाकार बस बासी अखबार की तरह बिसरा दिये जाते हैं।

फ्रांसीस बैकन ने दो सदी पहले ही कहा था- "ज्ञान ही शक्ति है और केवल यही चिरंजीवी शक्ति है।" पर संसार की समस्या यह है कि इस दुनिया को बदलने वाला ज्ञान कम है और दुनिया देखकर बदल जाने वाले ज्ञानी अधिक हैं। वैसे ज्ञान का संसार सदा दोहरी राहों से गुजरता रहा है। जब सुकरात जैसे लोग 'ज्ञान ही सदगुण है' का उपदेश देते हैं, तो वह उन्हें विष देता है और जब जीसस जैसे लोग 'अज्ञान ही सौभाग्य है' का संदेश देते हैं, तो उन्हें भी सलीब पर चढ़ा दिया जाता है। ऐसे संसार में ज्ञान के क्षेत्र में अज्ञता या अल्पज्ञता से अधिक संकट अमौलिकता का हो गया है। शोध व प्रयोग की प्रवृत्ति में या तो भीरुता आ गई है या फिर शिथिलता छा गई है। हम अधिकचरे ज्ञान से बहुत डरते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि नीम-हकीम खतरे जान होता है। पर कम ही लोग जानते हैं कि ज्ञान कभी पूरा नहीं होता। ज्ञान तो योग है, वह हममें से बहुत कुछ जोड़ देता है। किंतु ज्ञान की अपनी मीमांसा भी है, जो हममें से बहुत कुछ छाँट कर काट भी देती है। ऐसे में प्रायः ऐसा लगता है कि हमारी शिक्षा के वैशेषिक मानदण्ड हैं, वे न्यायोचित नहीं रह गए हैं। इसी कारण गोबल्स को कहना पड़ा कि बुद्धिमता चरित्र के लिए संकट है। ज्यादा पढ़ने वाले प्रायः औरंगजेब बन जाते हैं, जबकि कम पढ़े-लिखे अकबर हो जाते हैं। ज्ञान अगर वाकई सब कुछ दे देता, तो 'सा विद्या या विमुक्तये' कहने वाले

क्यों 'चरैवेति-चरैवेति' कहकर भटकते रहते और ढाई आखर प्रेम का का पढ़ने वाले गहरे डूब कर मोती कैसे ला पाते। शायद इसी कारण अनेक लेखकों ने शिक्षा के प्रकृति और संस्कृति के अनुकूल होने पर बल दिया है।

यह स्पष्ट है कि ज्ञान का हिस्सा प्रकृतिप्रदत्त है और दूसरा हिस्सा संस्कृतिनिर्मित है। शिक्षा शास्त्र में इन्हीं की महत्ता और प्राथमिकता को लेकर नेचर बनाम नर्चर का विवाद दीर्घकाल से चलता रहा है। शिक्षक इन दोनों की संयोजक कड़ी है, वह अपनी प्रेरणा से छात्र के भीतर ज्ञान की अभीप्सा पैदा करता है और अपने ज्ञान से उसकी जिज्ञासा की पूर्ति भी करता है। कई बार वह अपनी वाणी से अधिक मौन पढ़ाता है, वह अभिव्यक्ति से अधिक अनुभूति से पढ़ाता है, वह विचार से अधिक व्यक्तित्व से पढ़ाता है।

ज्ञान स्वयं में इतना पवित्र और महान है कि जो भी उसका स्रोत बनता है, संसार उसके चरणों में नतमस्तक हो जाता है। बशर्ते ज्ञान के उस स्रोत में विचार को आचार में उतारने की क्षमता हो। यहीं आकर शिक्षक प्राचीन गुरुकुल के उपाध्याय से आचार्य बन जाता है। पर एक समय आता है, जब व्यावहारिकता आगे बढ़ते हुए नैतिकता को भी आध्यात्मिकता का रूप दे जाती है और तब ज्ञान उसके अधर में नहीं, हृदय में बसने लगता है। वह उसके मस्तिष्क से नहीं, आत्मा से झंकृत हो रहा होता है। यहीं आकर अध्यापक गुरुता और गौरव अर्जित कर लेता है कि वह गुरु कहला सके।

पर यह चिंता गुरुत्व की नहीं, आचार्यत्व और अध्यापकत्व की है, छात्र के शिक्षक से दूर होने की है। एक अति लोकप्रिय फिल्म 'थ्री इडियट्स' का नायक अपने प्रोफेसर को चुनौती देते हुए कहता है कि वह उन्हें यह नहीं सिखाना चाह रहा कि पढ़ाते क्या हैं, बल्कि यह सिखाना चाह रहा है कि पढ़ाते कैसे हैं। क्लासरूम को प्रेशर-कुकर न बनने देने की चिन्ता मॉटेसरी से टैगोर तक अनवरत जारी रही है। इस पुस्तक में एक लेख है कि आखिरी घण्टी पहली घण्टी कैसे बने, अर्थात् अध्ययन से अवकाश के उल्लास को किस प्रकार अध्ययन का उल्लास बनाया जाये। तैत्सुकों कुरोयांगी से लेकर गिजुभाई तक इसके लिए चिंतित रहे हैं। विभिन्न लेखों में इसके

लिए शून्य कालांश, मौन अध्ययन-अध्यापन, प्रयोगपूर्ण और विनोदपूर्ण अध्यापन की चर्चा की गई है। निश्चय ही ज्ञान के गांभीर्य में उल्लास का अभाव नहीं होना चाहिए। सागर जितना गहरा होता है, उसमें उतनी ऊंची लहरें उठती हैं। छिछली झीलों में कभी तूफान नहीं आया करते हैं। ऐसा चिंतन और ऐसी चिंता निरन्तर कायम रहनी चाहिए।

पुस्तक में अनेक लेखकों ने जीवन के उत्तरदायित्वों के निर्वहन हेतु छात्रों के भीतर प्रश्न परखता की प्रवृत्ति को विकसित करने पर बल दिया है। निश्चय ही शिक्षा वह है जो जीवन जीने की कला बन जाये, क्योंकि तभी वह स्वाभाविक होती है और प्रभावपूर्ण भी। समस्या यह है कि समस्त चिंतन के अत्यधिक चिन्ताग्रस्त होने के बावजूद हम कोई सफल प्रतिदर्श प्रस्तुत नहीं कर पाये हैं। आज के युग में शिक्षकगण की प्रशंसा करने वाले कोई रह गये हैं तो वे केवल शिक्षकगण ही हैं। ठीक वैसे ही जैसे प्रशासन स्वयं में आत्ममुग्ध होता है। स्पष्टतः एक ऐसे सेतु की आवश्यकता है जो छात्र और शिक्षक के बीच भी बने और शिक्षक और शासन के बीच भी, अन्यथा ज्ञान और कर्म दोनों अन्धपंगु बने असफल होते रहेंगे। महाभारत में जब कृष्ण ने दुर्योधन को अर्जुन की तरह ज्ञान देने की कोशिश की थी तब उसने कहा था- 'धर्म मैं भी जानता हूँ परन्तु मेरी प्रवृत्ति नहीं होती, अधर्म मैं भी जानता हूँ किन्तु उससे निवृत्ति नहीं होती।' संकट क्या है और समाधान क्या है इससे शिक्षक और शासक दोनों परिचित हैं, परन्तु कुछ इस कारण कदम नहीं बढ़ा रहे कि बर् के छत्ते को छेड़े कौन और कुछ इस कारण कदम नहीं बढ़ा रहे कि बिल्ली के गले में घण्टी बांधे कौन?

जीवन की पाठशाला के अपने दीर्घकालिक परिणाम हैं, जिन बीजों का आज ख्याल नहीं रखा गया उन्हें सालों बाद रुग्ण पायेंगे, तब तक पीढ़ियां बदल चुकी होगी, वैसे भी जीवनरूपी अध्यापक सामान्य अध्यापन के विपरीत कार्य करता है, यह परीक्षा पहले लेता है और सीख बाद में। आशा है कि ऐसे चिन्तन और ऐसी चिन्ताएं निश्चय ही कभी उर्वर भूमि अथवा अनुकूल ऋतु पाकर शिक्षा के विटप को पल्लवित पुष्पित करेंगी।

(पुस्तक की समीक्षा कृपया पृष्ठ सं. 48 पर अवलोकन करें।)

विशिष्ट सचिव, मुख्यमंत्री, राज. सरकार, जयपुर

फोन : 0141-2227046

इस माह का गीत

गुरु कृपा से मन की गागर निर्मल जल से भर ले

□ प्रकाश चन्द सक्सेना

गुरु कृपा से मन की गागर निर्मल जल से भर ले

सूरज पश्चिम में जा पहुँचा,

अरे! मुसाफिर जल्दी कर ले,

गुरु कृपा से मन की गागर, निर्मल जल से भर ले।

अरे! मुसाफिर जल्दी कर ले,

क्यों आया था तू इस जग में, कितना क्या कुछ तू कर पाया,

कितना झुलसा गरम हवा से, कितनी पाई शीतल छाया।

कितना मोह ग्रसित है मन अब, इतना तू सर्वेक्षण कर ले

गुरु कृपा से मन की गागर, निर्मल जल से भर ले।

अरे! मुसाफिर जल्दी कर ले,

कब से भार ढो रहा तू, कब से ज्वार सह रहा तू,

कब से तूफानों की घातें, निर्मम भार सह रहा तू,

अब आएगा प्रेम बुलावा, जाने को प्यारे सजधज ले,

गुरु कृपा से मन की गागर, निर्मल जल से भर ले।

अरे! मुसाफिर जल्दी कर ले,

जिसको देना है तू दोनों, हाथ जोड़ कर फौरन दे दे,

जिनसे लेना है उनको तू, क्षमादान कर मुक्ति दे दे,

प्रेम राह में खो दे आपा, छोड़ जगत के सभी झमेले,

गुरु कृपा से मन की गागर, निर्मल जल से भर ले।

अरे! मुसाफिर जल्दी कर ले,

तेरा अहम् न खोज सकेगा, इस मूल प्रश्न का स्थाई हल,

कितने यत्न कर चुका अब तक, देख चुका सब,

निज बल-दल बल,

घण्टी बजती सोच रहा क्या, परम पुरुष के चरण पकड़ ले,

गुरु कृपा से मन की गागर, निर्मल जल से भर ले।

अरे! मुसाफिर जल्दी कर ले,

अन्धकार अब छा जाएगा, लम्बा रस्ता निपट अकेली,

कैसे चलना, कब तक चलना, कौन प्रयोजन, एक पहेली,

सफर काटने को ओ! राही, कोई साज साथ तू ले ले,

गुरु कृपा से मन की गागर, निर्मल जल से भर ले।

अरे! मुसाफिर जल्दी कर ले,

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह, 2014

दीपक जलाना कहाँ मना है

□ ओमप्रकाश सारस्वत

पौ च अक्टूबर 2014, रविवार का दिन स्कूल शिक्षा विभाग के इतिहास में एक नया अध्याय रच गया जब प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभागों में कार्यरत मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों में से श्रेष्ठ सेवाएं देने वाले 34 कर्मचारियों को राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया। यह उल्लासपूर्ण समारोह प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के राज्य मुख्यालय बीकानेर में स्थित वेटनरी विश्वविद्यालय के मध्य प्रेक्षागृह में सम्पन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि बीकानेर लोक सभाई क्षेत्र के सांसद श्री अर्जुन मेघवाल, विशिष्ट अतिथि बीकानेर शहर (पश्चिम) के विधायक डॉ. गोपालकृष्ण जोशी एवं शिक्षाविद् डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य थे। सम्मान समारोह की अध्यक्षता माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री ओंकार सिंह ने की।

वहाँ सेवा एवं साधना का सम्मान होता है, वहाँ प्रेम, आत्मीयता, प्रतिबद्धता एवं समर्पण के भाव सहज ही में प्रकट हो जाते हैं। धार नगरी बीकानेर के ऐतिहासिक वेटनरी विश्वविद्यालय का प्रेक्षागृह ही नहीं अपितु सम्पूर्ण परिसर सम्मानित होने आए निडाराल कार्मिकों के अभिनन्दन में प्रफुल्लित नजर आ रहा था। शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी इस समारोह को श्रेष्ठतम बनाने के लिए कई दिन से अहर्निश काम कर रहे थे। प्रेक्षागृह के बाहर की गई रंगोली एवं भीतर फूलों की सजावट दर्शकों का मन मोह लेने वाली थी। इन पर पार्श्व में बज रहा कर्णप्रिय संगीत वातावरण को अतिरिक्त गरिमा व ऊर्जा प्रदान कर रहा था।

प्रेक्षागृह के प्रवेश द्वार पर अतिथियों का रोली, मोली, तिलक एवं पुष्पवृष्टि से स्वागत करने के लिए राजस्थानी परिधान में बालिकाएं खद्यत थीं। मुख्यद्वार पर पधारले पर माननीय अतिथिगण का राजस्थान की परम्पारिक अतिथि देवो बघ: परम्परा के अनुसार स्वस्ति वाचन के साथ अपूर्व स्वागत किया गया।

शिक्षा विभाग के आमंत्रण पर पधारे



मेहमानों, शिक्षा अधिकारियों एवं कर्मचारियों से खचाखच भरा प्रेक्षागृह बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज रहा था। केमरों की चकाचौंध और कार्यकर्ताओं की चहलकदमी सब यह सिद्ध कर रहे थे कि बीकानेर अपने सपूत कर्मचारियों का सम्मान करने में कोई कमी रखने वाला नहीं है।

माननीय अतिथिगण के मंच पर पहुँचने के साथ ही पौ सरस्वती के समक्ष सप्तवर्तिकाओं वाला दीप प्रज्वलित हुआ। एक ऐसा आलोक जो प्रदेश में शिक्षा का प्रकाश फैला दे तथा कुरीतियों का दमन कर दे। राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर की बालिकाओं ने समवेत स्वर में सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की। गरिमायय मंच पर माननीय मुख्य अतिथि श्री अर्जुन मेघवाल, विशिष्ट अतिथि डॉ. गोपालकृष्ण जोशी, डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य के साथ शिक्षा निदेशक श्री ओंकार सिंह, अतिरिक्त निदेशक श्री पी.सी. मावर, वित्तीय सलाहकार (माध्यमिक) श्री बी. एल. सर्वा, वित्तीय सलाहकार (प्रारम्भिक) श्री अरविन्द बिस्नोई, संयुक्त निदेशक (प्रशासन) श्री ओमप्रकाश सारस्वत एवं संयुक्त निदेशक (कार्मिक) श्री विचयशंकर आचार्य विराजमान थे। अतिथिगण का बेज रूगाकर तथा माल्मार्यण कर स्वागत करने के साथ ही राजस्थान की आन-बान व शान के प्रतीक चुनरी का साफ पहनाकर उनका सम्मान किया गया। अतिथियों के सम्मान में

स्वागत गीत प्रस्तुत किया स्थानीय राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं ने। प्रेक्षागृह का कोना-कोना इस अद्भुत सम्मान समारोह का साक्षी बनते हुए प्रफुल्लित नजर आ रहा था। कार्यक्रम में विभाग के आमंत्रण पर पधारे माननीय अतिथिगण एवं आगुन्तकों का स्वागत एवं कार्यक्रम का परिचय दिया वरिष्ठ कर्मचारी श्री काकिर अदीब ने। श्री अदीब ने स्वागत के साथ ही धार के मस्जिद में बसे बीकानेर की ऐतिहासिक पृथ्वी तथा वहाँ की शानदार विरासत पर प्रकाश डाला।

सम्मान समारोह में सम्मान के लिए चुने गए 34 मंत्रालयिक कर्मचारियों की विशिष्ट-अनुकरणीय योगदान को रेखांकित करती प्रशस्ति पुस्तिका का विमोचन सम्माननीय मंच ने दर्शकों की करतल ध्वनि के बीच किया। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रकाशित इस पुस्तिका में सम्मानित चौतीस कर्मचारियों की फोटो सहित प्रशस्तियाँ प्रस्तुत की गई हैं। प्रशस्ति-पुस्तिका के विमोचन के समय हुई करतल ध्वनि उसमें छपी इमारत को पढ़ने के लिए कर्मचारियों की आतुरता का हचकार कर रही थी जिनके आधार पर उन्हें इस राज्य मंच से वन्दित-अभिनन्दि होने का सौभाग्य मिला है और यह निश्चिंसा व प्रतीक्षा समाप्त हुई कर्मचारियों के लिए सम्मान की वात्रा शुरू होने के साथ।

प्रेक्षागृह में उपस्थित हर व्यक्ति जैसे इस सम्मान वल में आहूति देने के लिए कृतसंकल्पित

था। मंच पर अतिथिगण, पार्श्व में कार्यकर्ता, प्रेक्षागृह एवं बाल्कनी में दर्शक, कैमरामैन, वीडियोग्राफर आदि सभी उभावले हो रहे थे। वह सम्मान निहा, सेवा, ईमानदारी, समय की पाबन्दी, परोपकार का बा जिसके प्रतीक चुने हुए कर्मचारी बने हुए थे। नाम पुकारे जाने के साथ ही सम्बन्धित कर्मचारी का उठकर धीरे-धीरे मंच की ओर बढ़ना, तालियों की उत्तरोत्तर बढ़ती गड़गड़ाहट, फोटोग्राफरों की होड़ और मंच पर अतिथियों की आतुरता सब समग्र कार्यक्रम को गति व गरिमा प्रदान कर रहे थे। प्रशस्ति वाचन कर रहे थे सर्वश्री प्रमोद चमोली, प्राध्यापक, जाकिर अदीब, व.लि. एवं मदन मोदी, व.लि। ज्यों-ज्यों उपलब्धियों के आवाज प्रकट प्रकट कर रहे थे, त्यों-त्यों करतल ध्वनि तेज हो रही थी। इस प्रकार एक-एक करके 34 कर्मचारियों का सम्मान किया गया। मंच से अतिथिगण महानुभावों में श्री विनयशंकर आचार्य, संयुक्त निदेशक (कार्मिक) ने तिलक लगाकर, वित्तीय सलाहकार श्री अरविन्द बिश्नोई ने माल्यार्पण करके, अतिरिक्त निदेशक श्री पी.सी. मावर ने साफ़ पहनाकर, शिक्षा निदेशक श्री ओंकार सिंह ने सम्मान पत्र, मुख्य अतिथि श्री अर्जुन मेघवाल ने प्रतीक चिह्न देकर, विशिष्ट अतिथि डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य ने शाल ओढ़ाकर वित्तीय सलाहकार (माध्यमिक) श्री बी.एल. सर्वा ने शिक्षक दिवस प्रकाशन की पुस्तकों का सेट भेंट कर तथा संयुक्त निदेशक (प्रशासन) श्री ओमप्रकाश सारस्वत ने श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया।

चौदास मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों के भावपूर्ण सम्मान के उपरान्त अपने सम्बोधन में माननीय मुख्य अतिथि श्री अर्जुन मेघवाल ने कहा कि मंत्रालयिक कर्मचारी किसी भी विभाग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। किसी भी व्यवस्था में विहित कार्यों के गुणवत्तापूर्ण तथा समय सम्पन्न होने में मंत्रालयिक कर्मचारियों का पसीना छिपा होता है। शासन की जनहिरोशी-कल्याणकारी योजना की सफल क्रियान्विति भी कर्मचारियों के परिश्रम से हो पाती है। अपने

उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने में कर्मचारियों को अपने निजी एवं पारिवारिक कार्यों की भी अनदेखी करनी पड़ती है। वस्तुतः ऐसे कर्मयोगी कर्मचारियों की मेहनत व निहा से ही व्यवस्था को यश व कीर्ति मिलती है। मुख्य अतिथि जी ने एक जापानी दृष्टान्त की रोचक प्रस्तुति के साथ कर्मचारियों को देश भक्ति व राष्ट्रप्रेम का आह्वान किया। (वेरिजिए बॉक्स कथा) सम्मानित हुए कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान

करते हुए माननीय मुख्य अतिथि ने उन्हें अतिरिक्त मेहनत करते हुए राजकार्य करने की अपील की। उन्होंने शिक्षा विभाग को भी अपने श्रेष्ठ कर्मचारियों को प्रतिवर्ष राज्यस्तरीय समारोह आयोजित कर सम्मानित करने के लिए बधाई व साधुवाद दिया, 'माना अंधेरा बना है, पर दीपक जलाना कहाँ मना है' शेर सुनाते हुए उन्होंने जीवन में सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ कर्मशील बने रहने का अनुरोध किया। मुख्य

राष्ट्र धर्म

यह वर्ष 1986 की बात है। भारत से पाँच पत्रकारों का एक दल तीन माह की यात्रा पर जापान गया। इन पत्रकारों में एक विनोद नाम का युवा पत्रकार भी था। इस यात्रा के दौरान इस युवा पत्रकार ने पार्टीडिम कम्प्यूटर सीखना शुरू किया। कम्प्यूटर अनुदेशक बनी एक जापानी युवती। इस कम्प्यूटर शिक्षण-अधिगम के दौरान अनुदेशक युवती एवं युवा प्रशिक्षणाधी विनोद के मध्य प्रेम हो गया।

इस बीच इस भारतीय पत्रकार दल का समय पूर्ण होने को आवा और अन्ततः वह तारीख़ मुकर्र हो गई जब उन्हें टोकियो से नई दिल्ली के लिए उड़ान भरनी थी।

“क्या तुम अमुक दिन अमुक समय मुझे विदा करने एयरपोर्ट आओगी?” विनोद ने उस जापानी बाला से पूछा।

“हाँ ! मैं आऊँगी ।” जापानियों के अतिथियों के प्रति सम्मान भाव को स्मरण करते वह युवती बोली।

निश्चय दिन-निश्चय समय पाँचों भारतीय पत्रकार फ्लाइट पकड़ने एयरपोर्ट पहुँच गए। समस्त औपचारिकताएं पूर्ण हो गईं। विनोद को छोड़ शेष चारों पत्रकार अपनी नियत सीट पर बैठ गए। मगर विनोद उस युवती की राह देखता इधर-उधर घूमता रहा। उसके मन में विचारों के भाव उमड़ते रहे। लेकिन वह नहीं आई तो नहीं ही आई। निराश और मन ही मन कुपित वह युवा पत्रकार वायुमन में मावूस बन अबोला बैठा रहा। अपने साथी पत्रकार से नजर मिलाने की भी उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी।

इधर नई दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुँचते ही उसने जो पहला काम किया, वह था उस जापानी युवती को पत्र लिखना। पत्र में उसने उसे धोखेबाज, प्रेम का अर्थ न समझने वाली नासमझ, स्वार्थी और न जाने क्या-क्या लिखा। पत्र को डाक में डालकर जैसे उसने स्मृतोष की सांस ली।

...और उधर टोकियो में उस युवती ने भी उसी दिन एक पत्र विनोद के नाम लिखकर भारत भिजवाया। पत्र में उसने जो लिखा, वह कानों की खिड़कियाँ और हिंमे का द्वार खोल देने वाला है। उस जापानी युवती ने बड़ी मालीनता के साथ पत्र में लिखा, “माई डियर विनोद, यह सच है कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ और मैं तुम्हें 800 011 करने एयरपोर्ट आना चाहती थी। मगर तुम्हें विदा करने हेतु आने का समय मेरा कैलेंड्री का समय था। माई डियर, हमारे वहाँ उत्पादन में बाधक बनना राष्ट्रद्रोह माना जाता है। मेरे सामने एक तरफ़ देश प्रेम था तो दूसरी ओर देह प्रेम। मैंने दोनों प्रेमों (Loves) को जब तराजू पर ठीका तो देश प्रेम भारी पड़ा। आशा है, तुम मेरा आश्रय समझकर मेरे एयरपोर्ट पर नहीं पहुँचने को अन्यथा नहीं लगे।” मैंने राष्ट्रधर्म का निर्वहन किया है।”

वह सत्य कहानी हम भारतीयों को राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम की शिक्षा देती है।

(जैसा माननीय श्री अर्जुन मेघवाल ने अपने संबोधन में बताया)



अतिथि महोदय के भावपूर्ण उद्बोधन के दौरान दर्शक दीर्घा से बार-बार करतक ध्वनि होती रही।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि बीकानेर (पश्चिम) के विधायक डॉ. गोपालकृष्ण जोशी ने अपने उद्बोधन में मंत्रालयिक कर्मचारियों एवं सहायक कर्मचारियों को किसी भी व्यवस्था के सुचारु संचालन के लिए

अपरिहार्य बताते हुए सम्मानित कर्मचारियों को बधाई दी तथा आशा व्यक्त की कि उनसे सीख लेकर अन्य कर्मचारी भी और अधिक ऊर्जा एवं संवेदनशीलता के साथ राजकीय कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे। डॉ. जोशी ने शिक्षा विभाग को भी ऐसी श्रेष्ठ परम्परा के लिए सप्रहना की।

अध्यक्षीय उद्बोधन में माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री ओंकार सिंह ने शिक्षा विभाग के विशाल स्वरूप की चर्चा करते हुए सभी कार्यों को यथा समय बांझित गुणवत्ता के साथ सम्पन्न करने के लिए विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों की सेवाओं की सराहना की। आपने दुर्गम एवं दूरस्थ स्थानों पर कठिन परिस्थितियों में कार्य कर रहे मंत्रालयिक कर्मचारियों की साधना को नमन करते हुए अतिरिक्त संवेदनशीलता के साथ राजकीय कार्य करने की उनसे अपेक्षा की। निदेशक महोदय ने कहा की विद्यालय में अध्यापन-अध्यापन की सहज धारा मंत्रालयिक कर्मचारियों के द्वारा प्रदत्त सेवाओं से ही प्रवाहित होती है। आपने सम्मानित हुए 34 कर्मचारियों को प्रतीक बताते हुए राज्य के सभी कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान की। कार्यक्रम के अन्तिम सोपान के रूप में अतिथि

महानुभावों, पत्रकारों, कार्यकर्ताओं एवं दर्शकों के प्रति आभार प्रकट करते हुए अतिरिक्त निदेशक श्री पी.सी. मावर ने विश्वास दिलाया कि शिक्षा विभाग

के मंत्रालयिक कर्मचारी मनोयोगपूर्वक कार्य करते हुए मात्र लिखेगी एवं विद्यालय लिखेगी योजनाओं को बांझित गुणवत्ता के साथ सम्पादित करेंगे।

इस प्रथम राज्यस्तरीय सम्मान समारोह का समापन राष्ट्रगान की समवेत प्रस्तुति के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक (योजना) श्री सुभाष महलावत ने किया। पुरस्कृत हुए 34 मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों का विवरण इस प्रकार है:-

चयनित सूची

1. श्री तुलसी दास पुरोहित, व.लि. निदेशालय, माध्य. शिक्षा बीकानेर
2. श्री पुरुषोत्तम तेजवानी, व.लि. उप निदेशक (प्रा.शि.) अजमेर
3. श्री कौशल कुमार शर्मा, व.लि. उप निदेशक (प्रा.शि.) अजमेर
4. श्री धर्माराम देवाल, कार्या. सहा. रा.उ.मा.वि. मेरुतासिटी (नागौर)
5. श्री जवाहर लाल भूषानी, क.लि. मंगलकन्द सकलोचा रा.मा.वि. गीरसाह अली, अजमेर
6. श्री पवन चावला, व.लि. निदेशालय, माध्य. शिक्षा बीकानेर
7. श्री अजय कुमार देराभी, व.लि. निदेशालय, माध्य. शिक्षा बीकानेर
8. श्री सांवरलाल ओझा, आशुतिपिक निदेशालय, माध्य. शिक्षा बीकानेर
9. श्री प्रेमशंकर आमेटा, व.लि. उप निदेशक, माध्यमिक उदयपुर
10. श्री ब्रजचन्द्र चन्द जैन, व.लि. रा.उ.मा.वि. बड़गांव, कोटा
11. श्री महेन्द्र सिंह, क.लि. उप निदेशक, माध्यमिक कोटा
12. श्री शुभ कुमार जैन, व.लि. उप निदेशक, माध्य. शिक्षा अजमेर
13. श्री गोपाल सोनावा, व.लि. रा.उ.मा.वि. खरदेव चित्तौड़गढ़
14. श्री राजेन्द्र कुमार, व. लि. उप निदेशक, प्रा.शि. अजमेर
15. श्री मनचर अली उस्मानी, व.लि. रा.बांगड़ उ.मा.वि. डीडवाना (नागौर)

16. श्री सीताराम गहलोत, वरिष्ठ लिपिक, शिविप प्रकाशन निदेशालय, माध्य. शिक्षा बीकानेर
17. श्री राकेश कुमार, व.लि. उप निदेशक, मा.शि. अजमेर
18. श्री श्यामसुन्दर गगरानी कार्यालय सहायक, विशि.अ. (माध्य-2) अजमेर
19. श्री मुकेश बोहरा, क.लि. विशि.अ. (माध्य.) पाली
20. श्री नरेश कुमार, आशुतिपिक विशि.अ. (मा-1) अजमेर
21. महेश शर्मा, व.लि. गोपीबाई भैरुलाल भूमि रा.उ.मा.वि. केसुदा प्रतापगढ़
22. श्री मुकेश चतुर्वेदी, व.लि. विशि.अ. (प्रारम्भिक) भरतपुर
23. श्री रामदेव मेघवंशी, कार्या. सहा. विशि.अ. (माध्यमिक) बूंदी
24. श्री राम निवास हरिजन, व.लि. रा.उ.मा.वि. केटी, चित्तौड़गढ़
25. श्री हुक्मीचन्द नागवा, निजी सहा. रा.प.श्री.अ.प्र.सं. उदयपुर
26. श्री पीरचन्द, क.लि. उप निदेशक (मा.शि.) अजमेर
27. श्री मनोहर लाल हिनुनिबा, व.लि. विशि.अ. (मा-2) अजमेर
28. श्री राजीव कुमार शर्मा, क.लि. उप निदेशक (माध्य.) कोटा
29. श्री राज कुमार चौधरी, क.लि. उप निदेशक (मा.शि.) अजमेर
30. श्री मोहम्मद सलीम, च.श्रे.कर्म. आर.के. भवन जयपुर
31. श्री देवलाल, प्रशा.सेवा रा.उ.मा.वि. गुमानपुरा, कोटा
32. श्रीमती विद्यादेवी वैष्णव, च.श्रे.कर्म. विशि.अ. (माध्य-2) उदयपुर
33. श्री कुबेन्द्र कुमार यादव, व.लि. राउमावि कम्बोरी डाकर-कोटा
34. श्री चनश्याम सिंह यादव, व.लि. उप निदेशक (माध्य.) भरतपुर

—वरिष्ठ संपादक (शिविप)



गुरु नानक जयन्ती

गुरु नानक और उमका संदेश

□ द्वारकेश भारद्वाज

संसार के रंगमंच पर समय-समय पर अनेक महान आत्माएं अवतरित होती हैं जो लोकहित सम्पन्न करती हैं, महान आदर्शों की स्थापना करती हैं। महान मूल्यों को स्थापित करती हैं। अपना कार्य सम्पन्न कर देह के बन्धन को त्याग कर पुनः परम चेतना में जा मिलती हैं। उनके चरण चिह्न मानवता के पथ प्रदर्शन हेतु रह जाते हैं। श्री गुरुनानक देव जी ऐसे ही अवतार थे। कुछ लोग किसी अवतार को केवल अपना बतायें, इससे बढ़कर अज्ञान क्या हो सकता है? राम, कृष्ण, महावीर, नानक ईसा, मुहम्मद साहब, गौरी, गौतम ये किसके थे? क्या किसी दल विशेष के थे? नहीं, कदापि नहीं। ये सबके थे। आज भी इनके आदर्श सबके लिए अनुकरणीय हैं। इदय इन सभी को एक समान श्रद्धा से नमन करता है।

गुरु नानक देव ऐसे दिव्य पुरुष थे—

‘संत पुरुष बिन जाणया सतगुरु तिसके नाकें
तिसके संग सिख उबरे नानक हस्तिगुन गाऊ।’

गुरु नानक देव जी सौ फीसदी धार्मिक पुरुष थे। उनका धर्म कोई छोटा मोटा नहीं था जो किताबों में कैद हो या जो मन्दिर मस्जिद में ही निभाया जा सके। इसके विपरीत वे उस आजाद धर्म को मानते थे जिस पर न हिन्दुओं की छाप है न मुसलमानों की मुहर और जो न पण्डितों का बनाया हुआ है और न काकियों का सिखाया हुआ। वे ऐसे धर्म को मानते थे जिसकी हर आदमी को कदम-कदम पर आवश्यकता पड़ती है। हम उसे ‘जीवन धर्म’ तो कह सकते हैं मानव धर्म भी कह सकते हैं और सत्य धर्म कह सकते हैं। इसमें दिखावा या पाखण्ड को कोई स्थान नहीं।

नानक उस धर्म से दूर रहते थे जो मनुष्य को अलग कर दे जो हिन्दू और मुसलमानों में दीवार खड़ी कर दें। जो भेदभाव बढ़ाकर लड़ाइयाँ और रक्त-पात करवा दे। इसके विपरीत उनके धर्म का आधार प्रेम है। उनका नारा है मानव मानव एक समान है। ऊँच-नीच जात-

पात और काले-गोरे का कहीं भेदभाव नहीं। उनके शिष्यों में हजारों हिन्दू थे और मुसलमान थे।

“गुरु नानक साहब फकीर।

हिन्दू का गुरु मुसलमान का पीर।”

गुरु नानक भगवान के सच्चे भक्त थे। उन्होंने बताया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हिन्दू उसे राम कहें और मुसलमान रहीम कहकर पुकारें। देखना यह है कि कोई कर्म कैसे करना है? क्या वह रज के बन्दे से प्रेम करता है या उन्हें दुःख देता है।

“सब ताँपर जानिये जा सिख सच्ची लेई।
व्या जाने जीव की, किछ पुत्र दान करेई॥”

सच्चा मनुष्य वह है जो सच्ची शिक्षा ग्रहण करता है। जो दूसरों के दुःख देखकर उन पर दया करता है और कुछ दान पुण्य करता है।

वे एकता के पुजारी थे। उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को एक मंच पर इकट्ठा किया। गुरु ग्रन्थ साहिब में हिन्दू और मुसलमान दोनों के संत महारमाओं की वाणी का संग्रह किया। उन्होंने भिन्न-भिन्न विचारों के रहते हुए भी भाई-भाई की तरह रहने की शिक्षा दी।

“पण्डित बाँचे पोखियां ना बुझाईं न विचार,
अन्य कोई मति देखलाहिं माया का व्यापार॥”

वे निरद्वन्द्व थे। उन्होंने पाखण्डियों के ढोंग का मण्डा फोड़ दिया और पण्डितों, मुत्ताओं को करारी फटकार सुनाई।

बोली टिक्का ते जपमाली, धानु मलेच्छं खाई,
अंतरि पूजा पड़हि कतेवा संजस तुरका भाई।

गुरु नानक ने कहा ईश्वर एक है वह तुम्हारे पास है उसे दूर मत समझो। वह सारी दुनिया में और हर वस्तु में विद्यमान है। आँखें खोलो और जहाँ चाहो उसे देख लो दुनिया में एक ही रास्ता है सत्य। जल, वायु और अग्नि आदि में उसी की शक्ति है। उसे पहचानने के लिए गुरुमुख की आँख चाहिए।

धर्म और समाज में व्याप्त बुराइयों को

उखाड़ फेंकने के लिए उन्होंने धर्मयुद्ध का आह्वान किया। पण्डितों महन्तों पीरों फकीरों और राजा महाराजाओं से उन्होंने टक्कर ली और उन्हें हराकर धर्म के सच्चे उमूलों का प्रचार किया।

वे मानव जीवन को बहुत ऊँचा और पवित्र मानते थे। उनके विचार में संसार का प्रत्येक मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है अतः मानव मानव आपस में भाई-भाई है और दुखियों की सेवा से बढ़कर ईश्वर भक्ति का कोई अन्य उपाय नहीं है।

आज जगह-जगह साम्प्रदायिक सद्भाव पर प्रश्न चिह्न लगा हुआ है। मानवीय संवेदनाएं व मूल्यों में सर्वत्र गिरावट आ रही है। बलवान निर्बल को भूखे भेड़िये की भाँति निगलना चाहता है इस समय भी गुरु नानक देव जी के उमूल व विचार समाज में सद्भाव, शांति और सहन शक्ति लाने वाले हैं। आज बिन भावनाओं एवं मानव धर्म की महती आवश्यकता है उनको गुरु नानक देव ने जहाँ पूर्व जब न विकसित व निर्बोध संचार साधन थे न प्रचार-प्रसार व सम्पर्क की विशेष सुविधाएं थीं उस समय किल कठिन परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से प्रेम व सहिष्णुतापूर्वक विकट सामाजिक उथल-पुथल की स्थिति में भी राजा से रंक तक के हृदय में बैठाई। वे आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। जितनी उनकी मौजूदगी में सर्वधर्म समभाव, प्रेम, दया, सत्य भावनात्मक शुद्धता उनकी शिक्षाओं का मूल आधार थे।

यदि आज जन-जन नहीं यदि आधी-अधूरी आबादी भी गुरु नानक देव जी की भावनाओं की अनुपालना करने लगे तो सामाजिक उथल-पुथल, असंतोष कुठारें सबका अंत होकर सुख चैन व संतोष का वातावरण बन जाये एवं पाखण्ड का समाज में कोई स्थान नहीं रहे।

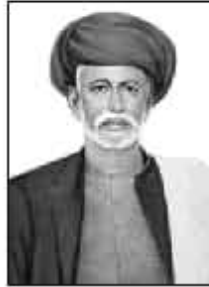
-बी-63, हवेली ज्ञान द्वार,
सेटी कॉलोनी, जयपुर-302004
मो. 8894348560

महापुरुषों का जीवन महात्मा ज्योतिबा फूले

□ नारायण लाल टाक

महात्मा ज्योतिबा फूले का जन्म महाराष्ट्र के पूना गांव में 11 अप्रैल 1827 को हुआ। इनके पिता का नाम गोविन्द राम एवं माता का नाम चिमन बाई था। इनके जन्म के समय सभी भारतीय समाजों में अज्ञानता, धार्मिक कट्टरता का बोझाला था। कमबोर एवं दलितों पर नाना प्रकार के अमानवीय अत्याचार हो रहे थे। जाति वर्ण व्यवस्था एवं असम्पन्नता आदि उस समय भारत की उन्नति प्रगति में और एकता में अवरोधक के रूप में समाज में बनते जा रहे थे। कुलीन जातियों में जन्म लेने वाले राजा राममोहन राय एनाडे जैसे बड़े महापुरुषों ने इस बिगड़ी समाज की व्यवस्था को सुधारने के लिए अनेक प्रयास किये, लेकिन पूना जैसे कट्टर ब्राह्मणवाद गांव में धार्मिक कट्टरता कुछ ज्यादा ही थी। ज्योतिबा का जन्म माली जाति के एक कुषक परिवार में हुआ। यही ज्योति नामक बालक आगे चलकर महात्मा ज्योतिबा फूले के नाम से पहचाने जाने लगे। कुषक माली परिवार में जन्म लेकर शोषितों-दलितों में शिक्षा की ज्योति जला कर अमर हो गये। सामाजिक नव जाग्रति प्रदान करने वाले महात्मा ज्योतिबा फूले की 124वीं पुण्यतिथि 28 नवम्बर 2014 को उनके कार्यों को बार-बार याद किया जा रहा है। उस समय इनकी शिक्षा की अलख में एवं समाज सुधार के प्रयासों प्रचार में साथ में डॉ. भीमराव अम्बेडकर भी थे।

जब ज्योतिबा सात वर्ष के हुये तो इनके पिता गोविन्द राव को बेटे को शिक्षित करने की चिन्ता सताने लगी कि मैं अशिक्षित हूँ। परन्तु मैं अपने पुत्र ज्योति को शिक्षित करूँगा। ज्योति को पढ़ा लिखा कर सफल व्यक्ति बनाऊँगा। यानी पुत्र ज्योति को पढ़ाने की लालसा उभरने लगी। ज्योति पिता के साथ कुषक के काम में पिता का हाथ बँटाने लगे थे। पिता के साथ खेत में जाने लगे थे। बालक ज्योति की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। चूँकि उन्हें विद्यालय में प्रवेश नहीं दिया गया। बाद में एक मराठी परिवार के विद्यालय में प्रवेश दिलवाया गया। इसी बीच



सन् 1840 में मात्र 13 वर्ष की आयु में ज्योतिबा का विवाह सावित्री बाई से कर दिया गया। सावित्री बाई का जन्म 1831 में हुआ था। उस समय गणकार बेग मुंशी और देसाई पादरी लेबिट के सामूहिक प्रयासों से सन् 1841 ई. में 14 वर्षीय ज्योति को पुनः विद्या ग्रहण के लिए विद्यालय-मिशन नामक स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। यहां उन्होंने दसवीं परीक्षा पास की। इनके सहपाठियों में न्यादातर मराठी, ब्राह्मण, मुस्लिम और देसाई जाति के विद्यार्थी थे।

गोविन्द राव का परिवार महाराष्ट्र के महान सन्त सांवता से जुड़ा हुआ था। बिनका उद्भव सन् 1250 ई. में हुआ था। वह महाराष्ट्र के सन्त कवियों की शृंखला में सन्त नामदेव के समकालीन माने जाते थे।

पश्चिम की उदारवादी विचारधारा ने ज्योतिबा फूले को अधिक प्रभावित किया। समाज में व्याप्त विषमता को धार्मिक मान्यता कैसे मिल गई? यही सोचकर ज्योति चिन्तित रहने लगे। ज्योतिबा ने विषम सामाजिक परिस्थितियों में स्त्री शिक्षा का सूत्रपात किया। अपना पूर्ण ध्यान स्त्रियों पर केन्द्रित कर स्त्रियों की स्थिति सुधार करने के लिए उपाय तलाशने लगे। उस समय विधवा स्त्रियों की स्थिति भी चिन्ताजनक थी। विधवाओं को नंगे पाँव रहना-घूमना पड़ता था। उन्हें सिर के बाल भी कटवाने पड़ते थे। उन्हें अच्छे कपड़े नये परिधान पहनने पर पूर्ण पाबन्दी थी। प्रारंभिक विधवा औरतों का मुँह देखना अपशमन माने जाने लगा। इतना ही नहीं विधवा माँओं को स्वयं के बेटे के विवाह मंडप पर बैठने आने-जाने पर पाबन्दी थी। उनका मण्डप पर उपस्थित रहना अशुभ माना जाता था। ज्योतिबा ने विधवा स्त्रियों को सम्मानजनक जीवन जीने की आवादी दिलवाई।

ज्योतिबा ने महिला शिक्षा की नींव रखी। सन् 1848 से 1859 के मध्य बालिकाओं एवं शूद्रों के शिक्षा के बन्द दरवाने ज्योतिबा राव फूले ने खोले। आपने पहले अपनी पत्नी सावित्री बाई को भी शिक्षित किया। आगे चलकर ज्योतिबा राव फूले महिला शिक्षा के जनक कहलाये।

ज्योतिबा ने अपने काम और चिन्तन से देखा भी जाना कि जाति विभाजन की रेखा ईश्वर प्रदत्त नहीं है। वे विभाजन की रेखा हम मनुष्यों के द्वारा ही समाज में दार डालने के लिए खींची गई है। महात्मा ज्योतिबा राव फूले ने चौबीस सितम्बर अद्वारह सौ तिहत्तर को सत्य शोध समाज की नींव रखी। प्रत्येक जाति वर्ग के लोगों को ईश्वर शक्ति का अधिकार है। परन्तु पुनर्जन्म, कर्म-काण्ड, जप-तप एवं धार्मिक गोष्ठियां मात्र अपवादस्वरूप हैं। वे सब अज्ञानता की निशानी हैं। पुरोहितवाद केवल पाखण्ड है। सत्यशोधक परिकल्पना के आधार पर अपने चिन्तन को अंततः मूलरूप दिया इसे आम जन-जीवन में अवतरण किया।

महात्मा ज्योतिबा फूले शिक्षा प्रेमी थे। गीतम बुद्ध, शिवाजी राव की जीवनी, फ्रांस की राज्य क्रान्ति, एवं बामस पेन की पुस्तकें आदि से प्रेरणा लेकर क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते थे। इस तरह वे सच्चे समाज सुधारक बने। साहित्य के उन्नयन और उन्नति में सहयोग दिया। आप संस्कृत भाषा को लोक भाषाओं की जननी मानते थे। मराठी भाषा को सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता के लिए आम-जन के बौद्धिक विकास में सहायक एवं आवश्यक मानते थे।

आपने बहुत सी पुस्तकें लिखीं। इनमें एक बार उस से ओत-प्रोत पुस्तक शिवाजी का 'पोबादा' अधिक चर्चित थी। इसमें छत्रपति शिवाजी के वीरतापूर्ण कार्यों का सरल भाषा में ओबस्वी और रोमांचकारी चित्रण था। दूसरी इनकी ऐतिहासिक पुस्तक 'गुलाम गिरी' थी। जिसका प्रकाशन 1873 में हुआ। जो अंततः

दलितों का घोषणा पत्र कहलाई। इनके प्रातिशील लेख-आलेख, निबन्ध आदि तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित होते थे। इन्होंने सन 1885 में सत्सार नामक पत्रिका का भी प्रकाशन किया।

सन 1857 ई. के विद्रोह के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत का शासन इण्डिया एक्ट के अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार ने सन् 1858 में ले लिया गया। एक जनवरी 1879 को दिल्ली दरबार में महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया तो सरकार की नीति निर्धारण स्वायत्त शासन के रूप में की गई थी। ज्योतिबा फूले सन् 1876 में पूना नगर पालिका के सदस्य बने। 1882 तक प्रभाकराशी सदस्य के रूप में निरन्तर कार्य करते रहे।

महात्मा ज्योतिबा ने सन् 1888 ई. में संघर्षमय जीवन के छः दशक पूर्ण कर लिये। तपस्वी-कर्मयोग का जीवन जीने वाले यह अपनी कीर्ति के शिखर पर पहुँच चुके थे। समाज सुधारक के उत्कृष्ट भाव और देशभक्ति के ज्वलंत प्रतीक बन गये थे। ज्योतिबा फूले दलित क्रांति एवं समाज सुधारक जैसे कारणों के कारण ग्वारह मई अगुआ सौ इंदुवामी ई. में समाज के द्वारा इनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया। सभी समाज के लोगों ने भारत का जनक बताया। बम्बई में सम्मान समारोह में भारी भीड़ जमा हो गई थी। जो किसी भी समाज सुधारक के लिये पहले कभी जमा नहीं हुई थी। अपार जन समूह ने एक ही स्वर में इनकी सराहनीय समाज सेवाओं के कारण इन्हें “महात्मा” की पदवी से विभूषित किया गया। ज्योतिबा फूले से महात्मा ज्योतिबा फूले के नाम से पुकार जाने लगा।

महात्मा ज्योतिबा राव फूले के सावित्री बाई से कोई संतान नहीं थी। उन्होंने एक ब्राह्मण बालक को गोद लिया। जिसका नाम सावित्री बाई ने यशवंत रखा। जुलाई 1888 में पूना में भवकर गर्मी पड़ रही थी। अकस्मात् ज्योतिबा फूले के दाहिने भाग में पक्षाघात हो गया। इस पक्षाघात से उनका शरीर निर्जीव सा हो गया। 28 नवम्बर 1890 को वह चिर मित्रा में सो गये। समाज की परम्पराओं के अनुरूप गोद लिये बेटे यशवंत ने उनके पार्थिव शरीर को मुखाम्नि दी। महात्मा गांधी ने यह सुना कि महात्मा ज्योतिबा नहीं रहे तो गांधीजी ने कहा कि- “ज्योतिबा राव

फूले असल में महात्मा थे, जो हमें छोड़ गये।” महात्मा गांधी के ये उद्गार दीन बन्धु नामक समाचार पत्र में महात्मा ज्योतिबा फूले राव विशेषांक में प्रकाशित किया था।

उन्नीसवीं शताब्दी में जिस महान सामाजिक क्रांति की शुरुआत महात्मा जी ने की। 20वीं सदी में इसे भारत की आजादी राजनैतिक कामा डॉ. अंबेडकर ने पहनावा। बिनका जन्म ज्योतिबा फूले पाली के निधन के बाद ही हुआ था। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने इस महान क्रांतिकारी सन्त को अपना प्रेरणा स्रोत बताया। भारतीय लोकतंत्र में कृष्क और मजदूर वर्ग की जैसे जैसे उन्नति होगी। जैसे ही भारतीय इतिहास में महात्मा ज्योतिबा राव व्यक्तित्व-कृतित्व उभर कर देश के सामने सदा आता रहेगा। ज्योतिबा फूले के बारे में पंचवाह लाल नेहरू ने कहा था-

“ज्योतिबा फूले को मैं अपना गुरु मानता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब कभी इस देश की जनता की सर्वांगीण हितों की रक्षा करने वाला राजनीतिक दल सामने आयेगा तो ज्योतिबा राव फूले की नीति, उनका रत्न ज्ञान और कामों को लेकर ही हमें आगे बढ़ना होगा।”

-वॉरड लिपिक

जीपों का मोहल्ला, गंगासागर रोड, बीकानेर-01
फ़ोन: 9252726037



तू खुद को बदल



दुनिया की कलम भीलों की कलम
यह लाला-लाला बदलेगा
तू खुद की बदल तू खुद की बदल
तब ही तो ज़माका बदलेगा।

तू चुप रह कम जो कहती रही
तो क्या यह ज़माका बदला है
तू बोलोगी मुँह खोलोगी
तब ही तो ज़माका बदलेगा।

दुन्दुभ पुगले मरियों के
ये आद कहीं से, क्यों आद
कुछ तो नौचो कुछ तो नमझो
ये क्यों तुमसे हैं अपजाद।
यह पर्व तुम्हारा कैसा है
क्या यह मज़हब का किस्सा है
कैसा मज़हब किस्सा का पर्व
यह सब मर्दों का किस्सा है।
आवाज़ उठा कदमों की मिला
बफ़्तार ज़रा कुछ और बढ़ा
पूरब से उठी दक्षिण से उठी
फिर काया ज़माका बदलेगा।
दुनिया की कलम भीलों की कलम
यह लाला-लाला बदलेगा।

दे श के जननायक, आधुनिक भारत के निर्माता और विश्व शांति के अग्रदूत पण्डित जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद कस्बे में हुआ। नेहरू का बचपन शान्ति और शौकत में बीता।

वह महात्मा गांधी के कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़े, चाहे असहयोग आन्दोलन की बात हो या फिर नमक सत्याग्रह या 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन। 1929 में नेहरू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर सत्र के अध्यक्ष चुने गए। तथा देश के आजाद होने के बाद देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

जवाहर लाल नेहरू को बच्चों से विशेष प्रेम था तथा उन्होंने अपने जन्म दिन को बाल दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। उन्हें बच्चों से बहुत लगाव था तथा बच्चे भी उन्हें चाचा नेहरू के नाम से जानते थे। वह कहते थे कि बच्चे हर देश का भविष्य एवं उसकी तस्वीर होते हैं तथा बच्चे ही किसी देश के आने वाले भविष्य को तैयार करते हैं।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू बच्चों को कितना प्यार करते थे उसको नीचे दिये गये प्रसंगों की सहायता से समझा जा सकता है-

एक दिन तीन मूर्ति भवन के बगीचे में लगे पेड़-पौधों के बीच से गुजरते हुए घुमावदार रास्ते पर नेहरू जी टहल रहे थे। उनका ध्यान पौधों पर था तथा पौधों के बीच से उन्हें एक बच्चे के रोने की आवाज आई। नेहरू जी ने आसपास देखा तो उन्हें पेड़ों के बीच एक छोटा बच्चा दिखाई दिया जो रो रहा था।

नेहरू जी ने उसकी माँ को इधर-उधर बूँडा पर वह नहीं मिली चाचा ने सोचा शायद वह बगीचे में ही कहीं माली के साथ काम कर रही होगी। नेहरू जी यह सोच ही रहे थे कि बच्चे ने रोना तेज कर दिया इस पर उन्होंने उस बच्चे की माँ की भूमिका निभाने का मन बना लिया।

वह बच्चे को गोद में उठाकर खिलाने लगे और वह तब तक उसके साथ रहे जब तक उसकी माँ वहाँ नहीं आ गई उसके बच्चे को देश के प्रधानमंत्री के हाथ में देखकर उसकी माँ को बकीन ही नहीं हुआ।

दूसरा माक्या जुड़ा है तमिलनाडु से, एक बार फिर जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू तमिलनाडु के दौर पर गए तब जिस सड़क से गुजर रहे थे वहाँ लोग साइकलों पर खड़े होकर तो कहीं दीवारों पर चढ़कर नेताजी को निहार रहे थे।

बाल दिवस

बच्चों के चाचा नेहरू

□ गायत्री शर्मा

प्रधानमंत्री की एक झलक पाने के लिए हर आदमी हवना उत्सुक था कि जिसे कहाँ समझ आया वहाँ खड़े होकर नेहरू जी को निहारने लगे।

इस भीड़ भरे इलाके में नेहरू जी ने देखा कि दूर खड़ा एक गुब्बारे वाला पंखों के बल खड़ा खगमगा रहा था ऐसा लग रहा था कि उसके हाथों के तरह-तरह के रंग-बिरंगे गुब्बारे मानों पंखितबी को देखने के लिए झोल रहे हों जैसे वे कर रहे हों हम तुम्हारा तमिलनाडु में स्वागत करते हैं। नेहरू जी की गाड़ी जब गुब्बारे वाले तक पहुँची तो गाड़ी से उतरकर वे गुब्बारे खरीदने के लिए आगे बढ़े तो गुब्बारे वाला हक्का-बक्का रह गया।

नेहरूजी ने तमिल जानने वाले सचिव से कहकर सारे गुब्बारे खरीदवाए और वहाँ उपस्थित सारे बच्चों को वे गुब्बारे बाँटवा दिए ऐसे प्यारे चाचा नेहरू को बच्चों के प्रति बहुत लगाव था। नेहरू जी के मन में बच्चों के प्रति विशेष प्रेम और सहस्रभूति देखकर लोग उन्हें चाचा नेहरू के नाम से संबोधित करने लगे और जैसे जैसे गुब्बारे बच्चों के हाथों तक पहुँचे बच्चों ने चाचा नेहरू-चाचा नेहरू की तेज आवाज से वहाँ का वातावरण उत्साहित कर दिया सभी से वे चाचा नेहरू के नाम से प्रसिद्ध हो गए। महात्मा गांधी ने नेहरू जी के बारे में-"वे नितांत उज्ज्वल हैं और उनकी सच्चाई संदेह से परे है। राष्ट्र उनके हाथों में सुरक्षित है" गांधी जी का वह कबन चाचा नेहरू के जीवन में सहचरता से देखा जा सकता है।

(लेखिका राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत शिक्षिका है)

5/279, एन.एच.एच., अप्रमाल फार्म, बनपुर
मो. 9414796871

नन्हों के अधिकार

□ उषा टेलर

आ रत का संविधान, संयुक्त राष्ट्र की योजनाओं के ही अनुरूप बच्चों के संरक्षण एवं अधिकारों की रक्षा के लिये कई सुविधाएं देता है। देश का संविधान हर तरह से देश के बच्चों के कल्याण तथा उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण एवं बालाश्रम से मुक्ति के लिये प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावशाली है। इसके बावजूद भी अनेक बच्चे आज भी शिक्षा से महकम हैं। कई बच्चे कुपोषण के शिकार हैं तो कई बच्चे बालाश्रम के दलदल में फंसे हुये हैं। इसके पीछे प्रमुख कारणों में गरीबी जैसी यवभूरी के साथ-साथ बच्चों को अपने अधिकारों की जानकारी न होना भी है।

सरकार द्वारा कुछ ऐसे कानून बनाये गये हैं जिसमें बालकों को कुछ अधिकार दिये गये। कुछ अधिकार इस प्रकार हैं-

1. अनुच्छेद 15(3)- राज्य को बच्चों एवं महिलाओं के समानताकरण के लिये अधिकार देता है।
2. अनुच्छेद 21(ख) राज्य को 6-14 वर्ष तक के बच्चों के लिये अनिवार्य एवं मुक्त शिक्षा देना कानूनी रूप से बाध्यकारी है।
3. अनुच्छेद 24 में बालाश्रम को प्रतिबन्धित एवं गैरकानूनी कहा गया है।
4. अनुच्छेद 39(ई) बच्चों के स्वास्थ्य और रक्षा के लिये व्यवस्था करने के लिये राज्य कानूनी रूप से बाध्य है।

के लिये व्यवस्था करने के लिये राज्य कानूनी रूप से बाध्य है।

5. अनुच्छेद 39(एफ) बच्चों के गरिमायुक्त रूप से विकास के लिये आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना राज्य की नैतिक जिम्मेदारी है।
6. बच्चों को माता-पिता एवं शिक्षक द्वारा सत्ता न देने का कानून भी 2014 में लागू हुआ है।
7. बच्चों की शिक्षक अथवा माता-पिता द्वारा पिटाई करना भी प्रतिबन्धित है।
8. विश्व के कुल 38 देश ऐसे हैं जहाँ बच्चों को शारीरिक दण्ड देना पूरी तरह से प्रतिबन्धित है।

इन्हीं अधिकारों के माध्यम से आज प्रत्येक बालक अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा, प्राप्त कर रहा है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए दोपहर का भोजन (मिड डे मिल) तथा निःशुल्क दवाइयों, आभ्यन्तरिक एंजिड की गोशियों, विटामिन ए की खुराक प्राप्त कर रहा है।

यदि कोई बालक ऊपर वर्णित सभी से वंचित है तो वह अधिकारों का उपयोग कर कानून की राह ले सकता है।

आओ देश के हर बच्चे को उसका बचपन लौटावें, मिलकर एक बेहतर कल बनावें।

-प्रधानाचार्या,

रा.बा.उ.पा.वि., रेलमण्ड (एनएमए)

मो. 8829006871

बाल दिवस

बच्चों के लिए सबसे बड़ा उपहार

□ रूपनारायण काबरा

कि तनी उत्सुकता से युवा-दम्पति 'नवागन्तुक' की प्रतीक्षा करते हैं। प्रथम शिशु का आगमन दोनों के लिए, एक उत्तेजना, एक आनन्द, एक पुलक, जाने क्या कुछ होता है। जीवन में प्रथम माता या पिता बनने का अनुभव अजीबोगरीब होता है। इसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। महीनों की प्रतीक्षा, आशा, सपने और योजनाओं का चरमोत्कर्ष-बिन्दु होता है नवागन्तुक का आगमन।

कई माता-पिताओं के मस्तिष्क में नवजात के पूरे जीवन की योजना होती है, वे उसको सफल डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, खिलाड़ी बनाने की योजना बना डालते हैं। वे अपने बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य एवं सुख की कामना करते हैं। अपने इन सुदीर्घ लक्ष्यों के अतिरिक्त वे अपने बच्चों को सभी भौतिक सुख-सुविधाएं देने की भी सोचते हैं। अपने माता-पिताओं को प्रायः यह कहते सुना होगा, 'हमारे बच्चों को हमारी तरह की मुसीबतें नहीं उठानी पड़ेगी।' यह बात सच है कि आज के बच्चों कल के बच्चे की अपेक्षा बेहतर सुख-सुविधाओं में जन्म लेते हैं। उन्हें बचपन में बहुत कम काम करना पड़ता है, उनके पास तरह-तरह के कपड़े होते हैं और ढेर सारा अवकाश भी और नल, बिजली, रेडियो, टेलीविजन, साइकिल, स्कूटर इत्यादि वैज्ञानिक सुविधायें भी होती हैं, जो पहले की पीढ़ी के पास नहीं थीं। इन सुविधाओं को जुटाने के लिए माता-पिता काम करते हैं, अतिरिक्त आय के स्रोत ढूंढते हैं। माँ-बाप दोनों ही काम करने लगते हैं, अपने बच्चों के भविष्य की खातिर।

यह एक श्रेष्ठ उद्देश्य है-परिवार के लिए साधन जुटाना और बच्चों को नए अवसर देना, लेकिन जिस उद्देश्य को लेकर चलते हैं अर्थात् 'बच्चों के भविष्य के लिए आय बढ़ाना', उससे भटक जाते हैं और केवल आय-वृद्धि में ही अटक जाते हैं और आय-वृद्धि के साथ आने वाले दोषों के शिकार होकर क्लब लाइफ, शराब, सिनेमा, मौज-शोक में स्वयं भटक जाते

हैं। इससे उनके बच्चे माता-पिता से मिलने वाले सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपहार से वंचित रह जाते हैं।

विकसित राष्ट्रों में तो वे अपने बच्चों को शिशु-गृहों में या आयाओं के पास छोड़ देते हैं। जब ये बच्चे किशोरावस्था में पहुँचते हैं तब उन्हें महसूस होता है कि दोनों पीढ़ियों में तो गहरी खाई है। बच्चे माता-पिता के दृष्टिकोण से सहमत नहीं और वे बच्चों से असहमत। यह दरार कई रूपों में प्रस्फुटित होती है, विद्रोह, आक्रोश, विक्षोभ, तनाव, टूटन, जाने क्या क्या होता है। कैसे पैदा हुई यह दरार? बचपन में वे दूर रहे और दूरी से उत्पन्न यह समस्या किशोरावस्था में प्रकट होती है तब तक तो बहुत देर हो चुकी होती है।

ब्रिटिश शिक्षाशास्त्री सर पर्सीगन के पास एक महिला अपने तीन वर्षीय बच्चे को लेकर आई और उसके आदर्श लालन-पालन हेतु उसके सुन्दर भविष्य निर्माण हेतु उनसे निर्देशन चाहा। उन्होंने कहा- 'अब क्या हो सकता है, आपने तो देर कर दी।' जीवन के निर्माण हेतु प्रारम्भिक वर्ष ही सर्वाधिक महत्व के होते हैं। जो कुछ एक बालक को बनाना होता है वास्तव में सब उसी समय निश्चित हो जाता है। बाद के वर्षों में तो बस 2-3 का 8-12 या 16-24 होना है। मनोवैज्ञानिक यह सिद्ध कर चुके हैं कि जितना हम जन्म से एक वर्ष की आयु में सीख लेते हैं उतना जीवन के किसी एक वर्ष में नहीं सीखते। आप माने या न माने, पर यह सत्य है। बच्चे अपने प्रारम्भिक वर्षों में अत्यन्त तीव्र गति से सीखते रहते हैं। चलना, फिरना, बातें करना, सब कुछ वे देखकर सीखते हैं। हमारे व्यवहार से उनका चरित्र एवं व्यक्तित्व बनता है। हम भौतिक संसाधन जुटाने के चक्कर में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपने लाइलों को समय नहीं दे पाते। केवल सुविधा जुटाने में ही कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। हमसे दूर रहकर वे जो हम दे सकते थे वह सब न सीखकर कुछ और ही सीख जाते हैं जो बाद में हमें पसन्द नहीं आता है क्योंकि वह सरगम हमारे स्वर्णों से मेल नहीं खाती। हम बच्चे

के साथ उसकी तीन महीने की आयु से ही खेलें, बातें करें, कहानी कहें, घुमाये-फिरायें और यह सम्पर्क चलता रहे तो जैसा हम चाहते हैं बच्चा वैसा ही हो सकता है, हमारा अपना उन्नत 'स्व'।

प्रायः माता-पिता बच्चों से कहते रहते हैं, 'मैं कहता हूँ यह काम करो, जो मैं करता हूँ सो नहीं' क्योंकि वे चाहते हैं कि जो गलती वे करते हैं उनका बच्चे न करें, चाहे वह धूम्रपान हो, शराबखोरी हो, जुएबाजी हो कुछ और। वह पिता जो घर में डींग मारता है, जो सरकार को या अन्य किसी को चमका देने की तिकड़म से काम बना लेने की इच्छा रखता है, उसे उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि उसकी संतान ईमानदार और कानूनप्रिय बनेगी। ऐसा करने वाले माता-पिता गलत आदर्श प्रस्तुत करके शुरू में ही लड़ाई हार जाते हैं क्योंकि उनके शब्दों से सशक्त आवाज उनके कार्य व्यवहार की होती है।

जिन घरों में सब में पारस्परिक प्रेम है, सब साथ उठते-बैठते हैं, खाते-खेलते हैं, वहां सुख है, स्वास्थ्य है, और है बच्चों के लिए अच्छे संस्कार। पर यह सभी संभव है, जब आप घर पर टिको, अपने दायित्व को पहचानो और तदनुसार आचरण करो। केवल महत्वाकांक्षी होने से या साधन जुटाने से कुछ नहीं होने का। आपका वह समीप्य, जिसके लिए बच्चा लालायित रहता है, उससे वंचित मत कीजिए। यही तो उसके मानसिक पोषण की खुराक है। यही है उसके व्यक्तित्व के विकास का मल्टी विटामिन केप्सूल।

एक अच्छे अभिभावक में या माता-पिता में क्या योग्यता होनी चाहिए। एक सफल सर्जन बनने के लिए कितने वर्षों का अध्ययन आवश्यक है? एक पायलट बनने के लिए सैकड़ों घण्टे आकाश में उड़ना आवश्यक है। एक शिक्षक, एक मैकेनिक, इंजीनियर, व्यापारी, सैनिक सभी के लिए कितने अध्यवसाय की आवश्यकता है पर अभिभावक, क्या केवल सन्तान को जन्म देने मात्र से ही बन

जाओगे। क्या इस प्रशिक्षण का कोई स्कूल है। क्या कोई सर्टीफिकेट है? नहीं, बस मात्र सन्तानोत्पत्ति के लिए सक्षम आधुनी पर्वान्त है। एक लड़का या लड़की पिता-माता बन सकते हैं केवल प्राणी-शास्त्रीय रिस्ते। वे अपनी सन्तान के जनक हैं, पर क्या वे सही अर्थों में अभिभावक बनने के योग्य हैं? सुयोग्य एवं सक्षम अभिभावकता हेतु न कोई शिक्षा है न कानून। कितने उपेक्षित है यह महत्वपूर्ण क्षेत्र जो मानव सभ्यता की गंगोत्री है।

जी हां, बच्चों के लिए आपका सबसे बड़ा उपहार है आपके द्वारा उनको दिया गया समय। यदि आप अपने बच्चों के लालन-पालन में पूर्ण रूचि लेते हैं, दूसरों के भरोसे नहीं छोड़ते तो इससे बड़ा आनन्द रोमांच, पुलक और परिश्रम आपको और कहीं नहीं। अपनी सन्तान का विकास जो सुख दे सकता है वह आमदनी और पदोन्नति भी नहीं। और यदि उपेक्षा करते हैं तो इससे बड़ा दुःख भी कोई नहीं हो सकता है इससे बड़ी निराशा और खीझ भी नहीं हो सकती

जो आपके बच्चों के भिगड़ने से या अविकसित रहने से आपको मिलती है।

अपने लिये न सही, अपने लाड़लों की खातिर आप अपनी पत्नी से प्यार करें, लड़ें नहीं, चीखें नहीं, चिल्लावें नहीं, ईमानदार रहें, अच्छे रहें। बच्चे आपको देखकर उसी राह पर चलेंगे और देश के सुयोग्य नागरिक बनकर आपकी आकांक्षाओं को भी पूर्ण करेंगे और स्वयं भी भविष्य में अच्छे माता-पिता बनकर इस चक्र को अग्रगति देंगे।

बच्चों से कैसा व्यवहार करें

श्री कहीं वर्ष पूर्व सिकन्दर ने पोस से पूछा था कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जावे? तो पोस ने कहा था, 'जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है।' और यही बात लागू होती है मानवीय सम्बन्धों में, विशेषतः बच्चों के साथ आपके सम्बन्धों में। हम बच्चों को बस यों ही समझ लेते हैं, एक छोटी-सी चीज जिसे जब चाहों डांट दो, फटकार दो, मना कर दो, तिरस्कार कर दो, रोक दो, टोक दो, ठोक दो। बच्चा भी एक व्यक्ति होता है, उसकी भी मान, प्रतिष्ठा होती है, उसमें भी भाव-भावना होते हैं, वह भी संवेदनशील होता है-ठीक आपकी ही तरह। जिस प्रकार आप अपमानित, उपेक्षित और विरस्कृत होने से तिलमिला उठते हैं बच्चे भी उन परिस्थितियों में वैसा ही अनुभव करते हैं। सब पूछो तो बच्चा बड़ों से कहीं अधिक संवेदनशील होता है। अपनी संवेदनशीलता को नियंत्रित करने के लिए आपके पास तो ज्ञान, अनुभव, विवेक और परिपक्वता है पर बच्चों के पास तो वह सब कुछ नहीं के बराबर है इसलिए उसके साथ व्यवहार करते समय हमें विशेष सतर्क रहना चाहिए। हमारे शब्द, हमारा व्यवहार उसे आघात न करे, न दुःखी करे, न पीड़ा पहुंचावे - इस पर ध्यान देना है। बाद रखा जो व्यवहार हमें अच्छा नहीं लगता वह बच्चों को भी बुरा लगता है।

यदि आप पर कोई अविश्वास करे तो आपको कैसा लगेगा? बुरा लगेगा न? तो फिर अपने ही बच्चे पर बात-बात में अविश्वास क्यों करते हैं। बंदि बालक थोड़ा-सा भी कहीं निकल जाता है तो पूरी बांच-पड़ताल क्यों करने लग

जाते हैं? 'कहाँ गया था? क्यों गया था? क्या बातें की थी? दो रुपये देकर भी पूछने लगते हैं क्या करेगा?' उसके हर कदम पर अनेक सवाल शक, पूरा अंकुश - यह अविश्वास नहीं तो क्या है। इसका मतलब यह भी नहीं है कि आप बच्चे की गतिविधियों से संगति से देखकर रहें। उस पर ध्यान दें, गतिविधियों पर नजर भी रखें, दिलचस्पी भी लें पर आपकी दिलचस्पी अविश्वास का प्रतीक न बन जाए, इसका ध्यान रखना है।

प्रशंसा आपको अच्छी लगती है? तो फिर बच्चे की उपलब्धियों पर चाहे वे कितनी साधारण ही क्यों न हों, प्रशंसा कीजिए, बच्चों को उत्साहित कीजिए। अपनी महत्त्वकांक्षा थोपने के चक्कर में आप बच्चे को प्रायः बंटते रहते हैं- 'पढ़ता नहीं है, ध्यान से काम नहीं करता है, भौंदा कहीं का, तू तो कुछ भी नहीं कर सकेगा, बिन्द्या में रोएगा, भीख मांगेगा, प्लेटें धोएगा' न जाने क्या-क्या कह डालते हैं नहीं सी जान को, जब वह हमारी आशा और आकांक्षा के अनुकूल कार्य नहीं कर पाता है।

हम भूल जाते हैं कि हम स्वयं भी तो सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं। यदि कोई हमारी दूसरे से तुलना करके कहता है- 'आप में वह बात नहीं जो शर्मा जी में है' वा 'सस्तेना जी के कम करने का ढंग आप क्यों नहीं अपनाते' इत्यादि। आपको तुलना बुरी लगती है न? तो फिर बच्चों से क्यों कहते हैं, 'देख पराग के नम्बर कितने अच्छे हैं और एक तू है।' बच्चे भी तुलना पसन्द नहीं करते हैं।

उन्हें जो कहना है सीधे उन्हीं से कहिए, किसी से तुलना करके उन्हें नीचा दिखाकर नहीं। इससे उनमें खीझ और हीन भावना पैदा होती है।

आपको आवादी अच्छी लगती है। बात-बात पर बंधन कितना बुरा लगता है। फिर बच्चे की आवादी पर इतने ढेर सारे अंकुश क्यों? उसे भी स्वतंत्र रहने दीजिए। उसे भी अपने ढंग से सोचने दीजिए, अपने ढंग से काम करने दीजिए, अपनी पसन्द का खाने-पहने दीजिए। आवादी से तार्क्य मनमानी करने से नहीं है। कहने का अर्थ यही है कि सब कुछ आपके अपने ही ढंग से हो, यही मत सोचिए। आपके नियंत्रण और बच्चे की आवादी में एक बुद्धिमत्तापूर्ण, व्यावहारिक संतुलन बनाइए। बच्चा परिपक्व नहीं होता है और उसे आपके दिशा-निर्देश की आवश्यकता हो तभी निर्देश दीजिए, हर वक्त उस पर सवार मत रहिए।

आप सम्मान, प्रशंसा, प्रोत्साहन, विश्वास एवं अपने साथ सद्व्यवहार की कामना करते हैं तो ठीक वही बालक की भी अपेक्षाएं हैं। मले ही वह विरोध नहीं करता हो। (अपने सुसंस्कारवश) पर वह आपके अविश्वास, तिरस्कार और निराशावर्द्धक व्यवहार को पसन्द बिल्कुल नहीं करता है। इस तथ्य को स्वीकारिए। बच्चे को एक सम्पूर्ण व्यक्ति समझिए और उसी प्रकार उसके साथ व्यवहार कीजिए। इसी से हो सकता है उसके व्यक्तित्व का सम्यक विकास।

किशोर कुटीर, ए-438,
नेशाली नगर, चबपुर-302021
फोन : 0141-2355812

नैतिक शिक्षा

शिक्षण में सांस्कृतिक मूल्यों पर बल

□ गोपेश शरण शर्मा 'आतुर'

शिक्षा का अर्थ बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है। अतः शिक्षण सांस्कृतिक एवं जीवन मूल्यों पर बल देते हुए होना चाहिए, जिससे शिक्षार्थी में वे संस्कार उत्पन्न हो सकें। उदाहरणार्थ एक दोहा उद्धृत कर रहा हूँ जो कि महाकवि तुलसीदास जी के श्रीरामचरित मानस के बालकांड से है:-

उठे लखनु निसि बिगत सुनि,
अरुन सिखा धुनि कान
गुरु तें पहिले जगत पति,
जागे रामु सुजान॥

मुनि विश्वामित्र, अपने यज्ञ की असुरों से रक्षा हेतु श्री राम और श्री लक्ष्मण को अपने साथ ले गये थे। वहाँ से वे उन्हें अपने साथ जनकपुर धनुर्यज्ञ दिखाने हेतु ले गए। रात्रि के समय मुनि विश्वामित्र, श्रीराम और श्री लक्ष्मण शयन कर रहे हैं। प्रातःकाल होने पर सबसे पहले श्री लक्ष्मण जी उठते हैं क्योंकि उन्होंने मुर्गे की ध्वनि को सुन लिया है। मुर्गा प्रातःकाल होने पर बाँग देता है जो इस बात का सूचक है कि प्रातःकाल हो रहा है। न किसी अलार्म की आवश्यकता और न किसी आलस्य की। शिष्टता का भी पूर्ण ध्यान है कि बड़े भाई और गुरु से पहले उठ जाऊँ। यदि वे पहले उठ गए तो शिष्टाचार क्या रहेगा? मुर्गा बोल रहा है प्रातःकाल हो गया।

भरतपुर में एक रसिया गाया जाता था-
“मुर्गा बोले तें सबेरौ है जाय भरतपुर की गलियन में”

श्री लक्ष्मण जी के बाद श्री रामचन्द्र जी उठे। वे गुरु से पहले उठे। वे जगत्पति हैं किन्तु गुरु की महत्ता प्रकट करने के लिए गुरु से पूर्व उठे। वे चतुर हैं, वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, उन्हें मर्यादा स्थापित करनी है। अतः शिक्षण के समय अर्थग्रहण के साथ-साथ इन सांस्कृतिक मूल्यों पर विशेष बल देना अभीष्ट होगा, जिससे शिक्षार्थी में संस्कार उत्पन्न हो सके। इन उत्तम संस्कारों की स्थापना से ही स्वयं विद्यार्थी का तथा उसके माध्यम से सफल समाज का हित हो

सकता है।

- पौ फटने पर उठ जाना चाहिए। सोते नहीं रहना चाहिए। इससे बुद्धि मन्द नहीं होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह लाभदायक है।
- अपने बड़ों से पहले सोकर उठना चाहिए।
- गुरु मर्यादा का हमें सदैव ध्यान रखना चाहिए, आदि-आदि।

यह तो मैंने एक उदाहरण दिया है। अनेक साहित्यकारों की रचनाओं में सांस्कृतिक मूल्य प्राप्त होते हैं। उन रचनाओं का समावेश पाठ्यक्रम में विशेष रूप से किया जाना चाहिए तथा शिक्षण के समय उन मूल्यों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। कोई भी समाज या देश नारों से नहीं संस्कारों से सुधरता है। आज कथनी में युवा वर्ग को आगे लाने की बात होती है। यह वृद्ध वर्ग कहाँ जाएगा? क्या यह हाशिए पर खड़ा मूक श्रोता या दर्शक बना रहेगा? तो इनके अनुभव का क्या होगा, जो इन्होंने जीवनभर प्राप्त किया और जिससे समाज बहुत लाभ उठा सकता है। हर वृद्ध एक चल संग्रहालय तथा पुस्तकालय है। उसकी सुरक्षा की ओर पूरा ध्यान दिया जाना वांछनीय है। साथ ही युवा शक्ति का भी पूरा लाभ उठाना चाहिए। इसी प्रकार साहित्य में नए और पुराने की बात करना हास्यापद है। साहित्य कभी पुराना नहीं होता। वह साहित्यकार के अनुभवों की तिजोरी होता है। अतः प्रारम्भ से लेकर अब तक जिन साहित्यकारों के साहित्य में नीति, सदाचार तथा विभिन्न जीवन एवं सांस्कृतिक मूल्यों का उल्लेख मिलता है, उन्हें यथा संभव पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित किया जाना चाहिए तथा उनका शिक्षण मूल्यपरक होना चाहिए अन्यथा समाज में सुधार कैसे आएगा?

आज हम इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग की दुनिया में रह रहे हैं। इसके अनेक लाभ हैं तो हानियाँ भी हैं। अनजाने में भी साइबर अपराध

करके संकट में फँस सकने की बात ध्यान में रखनी होगी। बालकों को नए प्रयोग लुभाते हैं किन्तु उन्हें इस संबंध में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

आज के बहुत से बालकों की गोद में लैपटॉप, कानों में इयरफोन तथा हाथ में मोबाइल और रिमोट कंट्रोल आप देख सकते हैं। इंटरनेट तथा टी.वी. का कितना भी प्रयोग बढ़ रहा हो किन्तु ये वस्तुएँ अच्छी पुस्तकों तथा अच्छे शिक्षकों का स्थान नहीं ले सकती हैं। इन वस्तुओं से ज्ञान वृद्धि हो सकती है, किन्तु अच्छे पुस्तकालय, अच्छी पुस्तकों एवं अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता सर्वदा रहेगी।

जो शिक्षक अध्ययन अथवा पढ़ने को समाप्त कर देते हैं, उन्हें पढ़ाने का साहस कभी नहीं करना चाहिए। एक अच्छा शिक्षक सदैव शिक्षार्थी बना रहता है। जानकारी की कोई सीमा नहीं है। अपनी योग्यता को अधिक नहीं समझना चाहिए और अधिक से अधिक योग्यता प्राप्त होने पर भी गर्व नहीं करना चाहिए। विद्या से विनम्रता आती है-विद्या ददाति विनयम्।

इन संबंध में Joe Mannath की 'A Student's Prayer' नामक निम्नांकित अंग्रेजी कविता ध्यातव्य है:-

"The more I learn, the better I see
how little I know
and how little I know to my own
capacity to know
I see that each branch of knowledge
is so rich, so complex
One can study a life-time and still be
a beginner,
Teach me how to learn wisely and
well.
Help me to master the subjects I
need to study."

(लेखक राष्ट्रपति से पुरस्कृत शिक्षक एवं विख्यात कवि हैं।)

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
प्लॉट नं. 28, लेन नं.2, मदरामपुरा,
सिविल लाइन्स, जयपुर-302006
दूरभाष 0141-2225961

प्रार्थना सभा दर्शन

मेरे अनुभवों की प्रार्थना-सभा

□ मदनलाल जोशी

प्रा र्थना अर्थात् आत्मबल बढ़ाने का उपक्रम, आत्मशोधन, आत्मालोचन आत्मचिंतन य आत्मा अभिभूत होने का कार्यक्रम/प्रार्थना अर्थात् किसी कार्य या दिवस का मंगल शुभारंभ, सम्पूर्ण मावी काल के लिए मंगल कामना, अखिल सृष्टि में समाविष्ट उस परम शक्ति का आराधन, ऋतु के साथ बढ़ने का एक सम्बल प्राप्त करने की साधना, निरुत्थल, निर्भीक तथा निश्चिन्तता से जीवन के सन्मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त करना, मावी सद्कायों की सफल परिणति में किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित न हो और हो जाने पर उसकी प्रतिकूलता से झुंझने की शक्ति का आराधन, एकाग्रचित्ता एवं शान्ति के साथ जीवन यात्रा का शुभारंभ, दृष्टता एवं खेल मनोवृत्तियों से बचने का आराधन।

प्रार्थना अर्थात् सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया की भावना को लेकर समस्त चरित्र के प्रति एक मंगलकामना एवं कल्याणमय पथ की ओर बढ़ने की प्रेरणा।

मौन प्रार्थना उस शक्ति के अधिक निकट तथा उस शक्ति को प्राप्त करने का एक सबलतम साधन है, चूंकि मौन प्रार्थना एकाग्रचित्ता एवं आत्मभिमुख होने का अमोघ उपाय है। इन्हीं सब बातों को दृष्टि मध्य रखते हुए शिक्षार्थियों को प्रार्थना कराई जाती है।

गत बत्तीस वर्षों के प्रार्थनाकाल में जो उपलब्धियां दृष्टिगोचर हुईं तथा जो परिदृश्य देखने को मिले निम्न प्रकार हैं :-

प्रार्थना सदा बैठकर कराया रहा है। सर्वप्रथम दो मिनट के लिये मौन प्रार्थना इस समय रीढ़ की हड्डी को सीधा रखते हुए सहज आसन में बैठकर आँखें बन्द कर एक-एक कर शरीर के समस्त अंगों की स्थिरता को दृष्टिमध्य रखते हुए अपनी मनोवृत्ति को अन्तर्मुखी करना तथा उपरान्त अन्तः कुंभक एवं बाह्य कुंभक को लक्ष्य में रखते हुए चित्त को शान्त एवं एकाग्र करना दो मिनट पश्चात् धीरे से आँखें खोलकर सामूहिक प्रार्थना प्रारम्भ करना।

इस मौन प्रार्थना से एकाग्रचित्ता तथा शान्ति बढ़ी, अनुशासन में विशेष सहयोग मिला तथा शिक्षार्थियों की मनोवृत्ति को सद्कायों की ओर जाते देखा ये मौन से प्रभावित होकर प्रार्थना स्थल पर अपने मौन सम्बन्धी अनुभव बताते। कोई प्रश्न करते या प्रेरणास्पद बात बताते। इतना ही नहीं कुछ ने तो घर पर भी अभ्यस्य एवं प्रातः उठते ही व रात को सोने के पूर्व यह मौन प्रार्थना प्रारम्भ की और उन्हें अपने में एक बढ़ती हुई शक्ति का अहसास होने लगा किसे वे पृथक-पृथक अनुभवों के साथ व्यक्त करते।

सामूहिक प्रार्थना छः सात हैं जो प्रतिदिन छात्राओं की इच्छासुसार कराई जाती है जैसे

प्रार्थना

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

हे क्षाब्दे माँ, हे क्षाब्दे माँ
अज्ञातता को हमें तार दे माँ
तू नन्द की देवी, है संगीत तुझको
हम बंझ तोबा, हम भीत तुझको
हम हैं अकेले, हम हैं अश्वे
तेरी क्षाब्द हम, हमें प्यास दे माँ
हे क्षाब्दे माँ.....
ऋषियों ते बंझी, मुक्तियों ते जागी
तेरी की भाषा, पुष्पों की टापी
हम भी तो बंझें, हम भी तो जागें
विद्या का हम की तू तबकास दे माँ
हे क्षाब्दे माँ.....
तू क्षेत्रवर्णी कमल पंख दिवाली
हथों में दीपा मुकुट नन्द पै न्याजे
मल को हमारे मिटा दे अँधेरा
हमकी छाँजे का बंझाव दे माँ
हे क्षाब्दे माँ.....

ओम तत् सत् श्रीनारायण नमः माँ शारदे, बीणा वादिनी बरदे, इतनी मनोशक्ति देना, नमन करो, शक्ति का माँ अम्बर बरदे इत्यादि सभी बच्चे हार्मोनियम एवं तबले के साथ तन्मयता से इसे गाते हैं।

इस प्रार्थना के पश्चात् देशप्रेम का एक गीत नित्य गाया जाता है एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रदत्त ये चौदह भाषाई गीत सभी छात्राओं को भली-भाँति याद हैं जिनका गायन वे प्रार्थना के उपरान्त करती हैं। इससे उनमें भाषा को पहचानने की समझ आई है तथा वे कई शब्दों का अर्थ जानकर उन भाषाओं के विषय में जानने की ललक रखती हैं।

विद्यालयों में देशप्रेम के अनमोल गीतों के साथ अभियान गीतों की पुस्तिकाएं मिल जाती है। समाचार पत्र, पत्रिकाओं में भी ऐसे गीत छपते रहते हैं। शिवसिंह पत्रिका में भी प्रति अंक 'इस माह का गीत' शीर्षक से छपने वाले गीत सपनेत स्वर में गाए जा सकते हैं जो वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इस गीत के बाद तीन मिनट के लिए अभिव्यक्ति का समय दिया जाता है इस तीन मिनट के समय की उपलब्धियां अनेक है।

इस तीन मिनट के समय कुछ छात्राएं स्वनिर्मित कविताएं सुनाती हैं कविता की समीक्षा करते हुए उन्हें प्रबलन (Reinforcement) दिया जाता है। फलस्वरूप कई छात्राएं अच्छी सूजनघर्मी निकली हैं जैसे- कविता, किरण, सीमा जोशी, सरला मोगरी, लता शर्मा, मंजु शर्मा, साधना दोषी, प्रीति तलेसरा, हिना सिंधी इत्यादि इसके साथ ही उनके उच्चारण को भी सुधारा जाता है। फलस्वरूप भूतपूर्व कई छात्राएं आज आकाशवाणी के सुवर्णांजी एवं नारी क्रांत कार्यक्रमों की आकस्मिक उद्घोषिका बनी हुई है।

जलसे एवं उत्सवों को अधिकतर प्रार्थना के क्रम में ही आयोजित किया जाता रहा है। इस

समय पत्र-वाचन, वस्तुत्व, गीत, संगीत, नृत्य, एकाकिनय, लघु नाटिकाएं, अमरवाणी, अनमोल बचन इत्यादि प्रस्तुत किये जाते हैं इस समय उनके उच्चारण एवं प्रस्तुति पर विशेष ध्यान रखा जाता है। फलस्वरूप छात्राएं अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिता में अधिक सफल होती हुई देखी गई है।

सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी कई बार छात्राओं द्वारा बड़ी रुचि से पूछे जाते हैं।

इस वर्ष विज्ञान क्लब विशेष सक्रिय है इसके अन्तर्गत अध्यापक वर्ग के द्वारा विज्ञान सम्बन्धी रोचक बातें बताई जाती हैं तथा छात्राएं विज्ञान सम्बन्धी रोचक एवं सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछती हैं। छात्राएं उत्साह से भाग लेती हैं। बोग एवं प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी बातें एवं छोटे-छोटे प्रयोग एवं उपचार बताए जाते हैं इसमें छात्राएं अत्यधिक रुचि लेती हैं।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन की बातें भी समय-समय पर बताई जाती हैं जिससे विद्यार्थियों को सही दिशादर्शन समय-समय पर मिलता रहे। जैसे विषय चयन के लिए छात्रवृत्तियों सम्बन्धी, व्यावसायिक शिक्षा की उपादेयता, विभिन्न विषयों में रोचकता की सम्भावनाएं साउण्ड एण्ड विजन, इलेक्ट्रॉनिक्स इत्यादि।

खेल समाचार, खेलों की तैयारी, पुस्तकालय में आने वाली नई पुस्तकें, विश्व स्तर पर होने वाली नई-नई घटनाओं इत्यादि की जानकारी भी प्रार्थना में समय-समय पर दी जाती है। जन्म दिन वाली छात्राओं को सम्मानित

मन विजय करें

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें,
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।
मेव भाव अपने दिल से साफ कर सकें,
दोस्त्रों से भूल हो तो मुआफ कर सकें।
झूठ से बचे रहें, सच का दम धरें,
दूसरों की जय.....॥

मुश्किलें पड़ें तो हम पर इतना करम कर,
साब है तो धर्म का, चलें तो धर्म पर।
खुद पे हींसला रहे, बदी से ना डरें,
दूसरों की जय.....॥

किया जाता है। प्रार्थना स्थल में प्रवेश के पूर्व छात्रा प्रतिनिधियों द्वारा सही विद्यालय गणवेश की बाँध की जाती है तथा अनुचित पाप जाने पर उन्हें समझाया जाता है। बिलम्ब से आने वालों के कारण का जाना जाता है, हिदायत दी जाती है तथा आवश्यक होने पर उचित रूप से दण्डित भी किया जाता है।

अन्तर्विद्यालयीन प्रतियोगिताओं की सूचना भी इसी समय दी जाती है तथा विजेता छात्राओं को सम्मानित एवं पुरस्कृत भी इसी समय किया जाता है। नगर में आयोजित होने वाले शिक्षा एवं ज्ञानप्रद कार्यक्रमों के विषय में सूचना एवं जानकारी दी जाती है।

परीक्षा तैयारी कैसे करें? परीक्षा देते

प्रार्थना

जब सौंप दिया इस जीवन का
सब भार तुम्हारे हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में
और हार तुम्हारे हाथों में।

मेरा निश्चय बस एक यही,
इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं,
अर्पण करूँ तुमिया भर का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ,
ज्यों जल में कमल का फूल रहे,
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो,
करतार तुम्हारे हाथों में।

यदि मानव का मुझे जन्म मिले,
तो तब चरणों का पुजारी बनूँ,
इस पूजक की इक-इक रंग का,
हो तार तुम्हारे हाथों में।

जब-जब संसार का कैदी बनूँ,
निष्काम भाव से कर्म करूँ,
किन्तु अन्त समय में प्राण तर्जु,
निराकार तुम्हारे हाथों में।

मुझ में तुम में बस मेव यही,
मैं नर हूँ तुम नारायण हो,
मैं हूँ संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।

समय किन-किन बातों का ध्यान रखें? प्रश्नों का उत्तर किस तरह दें? परीक्षा में अंक कहाँ पर किन स्थितियों में कम मिलते हैं? या कट जाते हैं, घर पढ़ने की व्यवस्था किस प्रकार की जा सकती है? अपनी राइटिंग एवं बर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ कैसे ठीक की जा सकती हैं? वाचन उच्चारण के समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिये? इत्यादि बातें समय-समय पर बताई जाती हैं।

जनसंख्या, अल्प बचत, पर्यावरण प्रदूषण, साक्षरता, अनीपचारिक शिक्षा, स्वदेशी, नशा इत्यादि की कुटैव, अहिंसा, सत्य, धर्म, साम्प्रदायिकता, नारी सुरक्षा, सांस्कृतिक एकता, अखण्डता, अणुशत, महापुरुषों एवं सन्तों की जीवनियाँ, चरित्र निर्माण सम्बन्धी बातें दी जाती हैं तथा महापुरुषों के प्रवचन भी कराए जाते हैं।

इस प्रकार प्रार्थना का समय विद्यालय कार्यक्रम के प्रारम्भ का आधा घंटा होता है। इसमें शिक्षार्थी अनुशासन, हेल-मेल, एक साथ बैठना, कतार से आना-जाना, शान्त बैठना, अपने लिए उत्तम बातें सुनना एवं सोचना, प्रगति के लिए प्रेरणा लेकर जाना इत्यादि ऐसी बातें होती हैं जिनका प्रभाव पूरे दिन विद्यार्थियों पर रहता है इसमें कोई सन्देह नहीं।

इस प्रकार well begun is half done वाली बात प्रार्थना के परिदृश्यों में ही देखने को मिल जाती है। प्रार्थना सभा के आयोजन सम्बन्धी मेरे अनुभव इस बात की पुष्टि करते हैं कि यदि विद्यालय प्रशासन उचित गंभीरता के साथ रुचि लेकर प्रार्थना सभा सत्र को प्रभावी बनाने में सफल हो जाता है तो विद्यालय के गुणवत्तायुक्त संचालन में कतई व कोई समस्या नहीं आ सकती।

वहाँ का वातावरण ही कुछ ऐसा बन जाता है जिसके अन्तर्गत कार्य करने तथा निहित अनुशासन एवं मर्बादाओं का पालन करने के लिए स्टॉफ के सभी साथी स्व प्रेरणा से उद्यत हो जाते हैं। ऐसे विद्यालय को यश एवं सम्मान दिलाने से फिर भला कौन रोक सकता है। एक ही वाक्य में कहें तो प्रार्थना सभा विद्यालय की कीर्ति एवं यश का सुगम मार्ग है। बस जरूरत इस मार्ग पर चलने भर की है।

म.नं. 2-ब-8, सेक्टर-5, हिरण मगरी, गुरुपुर
फोन 8294-2463448

बाल दिवस विशेष

बाल मजदूर : एक व्यथा

□ रामगोपाल 'राही'

बचपन बिन्दी का हसीन पल, न चिंता न चिन्मोदारी हर समय उन्मुक्त मौन मस्ती। बचपन बचपन होता है। सही माने में बचपन बिन्दी के प्रारम्भिक सफर का यादगार सुहाना सफर होता है। माता-पिता का असीम प्यार, दोस्तों का साथ, बेपरवाह घर-बाहर-स्कूल सब जगह मौन व मस्ती का आलम। बचपन की मौन-मस्ती की यादें-बिन्दी भर मरते दम तक याद रहती हैं।

वास्तव में बचपन जैसा बिन्दी में और पल नहीं होता। मौन मस्ती आनन्द के लम्हों वाला बचपन कम निकल जाता है- पता ही नहीं चलता। लेकिन सभी बच्चों का जीवन मौन मस्ती में नहीं गुजरता। कई मजदूर बेसहारा तथा गरीबी में पल रहे बच्चों का बचपन तो-मजदूरी के दलदल में धंसा फंसा होता है। मजदूरी के दलदल में फंसे बच्चों के बचपन की दयनीय व बड़ी मार्मिक कहानियाँ होती हैं।

मजदूरी के दलदल में फंसे ऐसे बच्चों का बचपन तो असमय ही हाथों में कलम किताबों की जगह पेट भरने के लिए होटलों में झूठन धोरे, साइकिलों की दुकानों पर व बाइक तथा अन्य वाहनों की रिपेयर करने वालों के यहाँ वाहन धोते, पंचर सुधारते, ढाबों में, उद्योगों में मजदूरी करते बीतता है। कई मजदूरियों के मारे बच्चे बचपन में छोटे बड़े शहरों की सड़कों पर गली, नुक्कड़ मोड़ पर गंदगी के ढेरों पर नजर गड़ाए पशियाँ हँडते, पॉलीथीन की फेंक्री बेकर भोलियाँ, तलाशते नजर आते हैं। इनमें गरीबों के बच्चे तो बितने हाथ-उतने काम की (गरीब माता-पिता की मानसिकता) के कारण मजदूरी के दलदल में धंस जाते हैं। ऐसे बच्चों को कई भिनीने कुकृत्यों का भी शिकार होना पड़ता है, अभिशप्त इन बच्चों का आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा यौन शोषण होता ही होता है। विद्वम्बना देश में बाल श्रम प्रतिबंध एवं विनियमन 1986 कानून होने के बावजूद हजारों बाल मजदूरों का बचपन मजदूरी की गिरफ्त में होता है।

यूनिसेफ के अनुसार कुछ वर्ष पूर्व पूरी



दुनिया में 2.2 अरब बच्चों में 1.9 अरब बच्चे विकासशील देशों में इनमें चिंता का विषय यह देखा गया है कि एक अरब बच्चे गरीबी में गुजारा करते हैं। माना जाता है दुनिया भर में 215 मिलियन ऐसे बच्चे हैं जिनकी उम्र 14 वर्ष से कम है जो मजदूरी के दलदल में फंसे हैं।

हमारे देश भारत में 2001 की जनगणना के अनुसार 12.66 करोड़ बाल मजदूर हैं। इससे पूर्व 1997 में सर्वोच्च न्यायालय ने किसी मामले में केन्द्र तथा सभी राज्य सरकारों को कहा था- निर्देश दिया था कि जोखिम पूर्ण कार्यों में लगे बाल मजदूरों को हटाकर-उनका पुनर्वास किया जाए। इस उ.प्र. में 28862, मध्यप्रदेश में 8739 तथा और भी राज्यों में हजारों बच्चों को अर्थात् बाल मजदूरों को हटाया गया तथा उन्हें मुआवजा भी दिया गया।

देश में बढ़ते बाल मजदूरों की संख्या को चिंता का विषय समझा जाए। बच्चों की पारिवारिक स्थितियाँ मजदूरों तथा बाध्यताओं को समझा जाए। गरीब माता-पिता की असमर्थताएँ हटाई जाए। उनका सही निराकरण हो। भारत में बाल मजदूरों की इतनी अधिक संख्या होने का मुख्य कारण गरीबी समझा जाता है, अतः गरीबी दूर की जाए। मजदूरी के दलदल में धंसे-फंसे बच्चों के बचपन को जीवन संघर्षों एवं असामान्य परिस्थितियों से निकालना ही होगा। इसके लिए कठोर कदम उठा प्रयास करने ही होंगे-क्योंकि बच्चे देश के कर्णधार व भविष्य होते हैं। इन संदर्भों में कार्यरत एन.जी.ओ. को और भी सक्रिय किया जाए। नेशनल चाइल्ड लेबर प्रोजेक्ट को सार्वक बनाया जाए।

देश में कक्षा आठ तक निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था है। दुविधाओं व असामान्य परिस्थितियों से निकाल मजदूरी के

दलदल में फंसे बच्चों को विशेष प्रयासों विशेष संसाधनों अनिवार्यतः निःशुल्क शिक्षा से जोड़ा जाए। यह काम बातों व नारों से नहीं-उत्तरदायित्व समझ अनिवार्य रूप से करना होगा।

किसी भी देश के बालकों की अच्छी या बुरी दशा देश की सांस्कृतिक महत्ता का सबसे बड़ा मापदण्ड व पैमाना होता है। उत्तरदायित्वों के साथ मनुष्य के जीवन में बचपन एक ऐसी अवस्था है जिसमें उसको सबसे अधिक मदद देखरेख स्नेह सहानुभूति और सुरक्षा की जरूरत होती है। मानव जीवन में उत्साह उमंगों एवं सपनों का सर्वोत्तम जीवित पुंज-या बिंदु बालक को माना गया है। उल्लेखनीय बच्चे राष्ट्र के भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। देश के भावी कर्णधार देश की प्रगति का आईना होते हैं।

हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरू बच्चों के जाचा नेहरू, बच्चे उनके आँखों के तारे और बच्चों के वह आँख के तारे थे। वह बच्चों के बीच में आ जाते थे, और लोगों को कहा करते थे आने वाले भारत की बच्चे ही तकदीर हैं, देश भविष्य बच्चे ही देश की उत्थीर है। वास्तव में बच्चों का चमकता या मुरझाया चेहरा इस बात का प्रतीक होता है- कि देश कितना खुशहाल सम्पन्न या विपन्न है। सचमुच बच्चे राष्ट्र की धरोहर होते हैं- इनकी समुचित देखभाल व शिक्षा पर ही राष्ट्र की प्रगति निर्भर करती है। बच्चे भविष्य के राष्ट्र उन्नायक व सम्भता के सूचक होते हैं।

सरकार एवं हम सभी को वांछित रूप से सोचे समस्याओं, बाध्यताओं, मजदूरियों के वशीभूत गरीबी में जी रहे मजदूरी के दलदल में धंसे-फंसे बच्चों के बचपन को जीवन संघर्षों व असामान्य परिस्थितियों से निकालना देश हित का सर्वोपरि कार्य होगा। जिस देश के बच्चों का बचपन सुरक्षित है, वह मानकर चलिए कि उस देश का भविष्य और सीमाप्य सुनिश्चित है। बच्चों की समुचित परवरिश सही माने में उन्नत भविष्य का बीमा है। -ताजपरी-323615 (बूटी)

मो. 8239684477

नारी विमर्श

भारतीय नारी : एक परिदृश्य

□ डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल

ह मारे वैदिक ग्रंथों, ऋचाओं और साहित्य में नारी को एक शक्ति पुंज सृष्टि-सृजेता के रूप में चित्रित किया गया है। वह जननी है, कल्याण स्वरूपा है, लालन-पालन करती है-अन्नपूर्णा है तथा आसुरी प्रवृत्तियों का परिहार करने हेतु समग्र शक्ति-सम्पन्ना अतुलित शक्ति दात्री है। संभवतः इसीलिए “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता”-कह कर नारी की समग्र विविधताओं को निरूपित किया गया है।

अतीत के अँचल में ऐसे अनगिन उदाहरण हैं नारी अपनी गरिमामयी स्थिति का प्रतीक रही है- इस संदर्भ में गार्गी, मदालसा, अनुसूया, अरुन्धती, मण्डन मिश्र-पत्नी भारती के नाम लिये जा सकते हैं। यद्यपि जमदग्नि-पत्नी रेणुका और जगत जननी सीता के प्रसंग नारी के गरिमामय अतीत पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं, इन्हें अपने अस्तित्व-स्थापन की प्रक्रिया में विभिन्न परीक्षाओं के दौर से गुजरना पड़ा है तथापि समाज में नारी की स्थिति, उसका सहभागित्वस्वरूप अपने महत्व का था। शंकराचार्य से शास्त्रार्थ कर उन्हें परास्त करने वाली भारती का अद्वितीय स्वरूप स्वयं में एक अनुपम उदाहरण है।

भारतीय नारी अलग-अलग क्षणों में माया, मोहमयी रजनी, दयामयी, रागमयी, लालसामयी लक्ष्मी और सात्विक उल्लासमयी, प्रकाशमयी, अर्पणमयी सरस्वती स्वरूपा रही है। पर समग्र रूप में वह सृष्टि है, सृष्टि की आकांक्षा है, सृष्टि की साधना है।

जैसे-जैसे काल चक्र के प्रत्यावर्तन की गतिमयता अपना रूप बदलती गई वैसे-वैसे नारी की स्वरूप-महिमा, समाज में सहभागिता की स्थिति संकुचित होती चली गई। वह सम्पत्ति के रूप में समझी जाने लगी; घर की दीवारों में बंद हो गई और यहीं से शोषण की त्रासदी प्रारम्भ हो गई। पुरुष वर्ग का निरंकुश शासन नारी को निरन्तर पदाक्रान्त करने की प्रक्रिया में सक्रिय बना रही..। संभवतः यह मुगलकालीन समय रहा है। भारतवर्ष में हर्षवर्धन के शासन के

पश्चात ही ऐतिहासिक-राजनीतिक-पराभव की स्थितियों ने सामाजिक जन-जीवन को पूर्णतः प्रभावित किया-उसमें नारी अछूती कैसे रहती ?

मर्यादा हित जौहर-अग्नि समर्पण तक नारी की नियति रही है। मध्यकाल में नारी शिक्षा पर रोक लगा दी गई- केवल कुलीनवंशीय नारी ही शिक्षा प्राप्त कर सकती थी। सामन्ती-काल में

मातृ-वंदना

हे भारत माँ! तेरी जय है
उन्नत भाल विशाल हिमालय
शुभ संस्कृति का चिर आलय।
रहा युगों से नेह-नीड़ जो
सरस सुरम्य नियति चित्रालय॥
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट सुशोभित
करते विश्वजयी वंदन है।
हे भारत माँ! तेरी जय है॥
गंग-यमुन सी सरिता बहती
कल-छल करती अमृत रचती।
नहीं भिन्न सब एक हैं कहती
माटी की महिमा को रचती॥
चरण पखारे चिर रत्नाकर
करता जिसका अभिनंदन है।
हे भारत माँ! तेरी जय है॥
तुमने जीवन दान दिया
चिर-संस्कृति संस्कार दिया।
करुण प्रेम का दान दिया
जीवन-सृजन-सोपान दिया॥
क्षमामयी वात्सल्यमयी माँ
शाश्वत तेरा स्नेह-गुंजन है।
हे भारत माँ! तेरी जय है॥
तेरा गौरव अमर रहे माँ
चिन्मय तेरा अभिमान रहे।
तू नेह-गेह अविराम रहे,
हम सब तेरे बन प्राण रहें॥
राष्ट्र धर्म हो सबका जीवन
अर्पित तुझको शत वंदन है।
हे भारत माँ! तेरी जय है॥

कन्याजन्म तक अभिशाप रहा, संभवतः इसीलिए कन्या जन्मते ही ‘खाट के पाये के नीचे’ अपनी जीवन-लीला समाप्त करनी होती थी। यद्यपि नारी को त्याग, करुणा और समर्पण का प्रतिमान माना गया फिर भी वह यथोचित-सम्मान की स्थिति से सदैव वंचित रही। उसकी जीवन-क्रिया तो “आँसू के भीगे आँचल पर मन का सबकुछ रखना होगा”- इसी उहापोह में रीतती चली गई। शास्त्रों में भी यही लिखा गया कि नारी का स्वतंत्र रहना उचित नहीं इसलिए बचपन में पिता, युवावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में जीवन यापन प्रक्रिया स्वीकार की गई... समाज में नारी की स्थिति निरंतर संकुचित इकाई के रूप में नगण्य सी होती चली गई।

इन्हीं आसन्न विपद स्थितियों के मध्य मीराबाई जैसे अद्भुत व्यक्तित्व ने नारी के ‘अस्तित्व-जागरण’ का स्वर मुखरित किया। उन्होंने अपनी ‘गैल’ स्वयं बनाई। जिस युग की नारी निरीह और मूक पशुवत रही हो वहाँ मीरा की ध्वनि जागरण का अनुपम उदाहरण है-
मेरो कोई नहीं रोकणहार मगन होय मीरा चली
लाज सरम कुल की मरजादा सिर से दूर करी
मान अपमान दोउ धर पटके निकसी ज्ञान गली

--

तुम जाओ राणा घर आपणे म्हाारी थांरी नाहि सरी
सेज सुषमणा मीरा सोवे सुभ है आज घरी
म्हारे कुण राणे राव अब नहिं मानू राणा थांरी
मैं वर पायो गिरधारी

जिस नारी जागरण के स्वर को वर्तमान में विश्व में जाग्रत किया जा रहा है उसका उद्घोष आज से ठीक 400 वर्ष से भी पूर्व भक्तिमती मीरा बाई ने किया था। कितनी नवीन और विकासमान थी मीरा।

रहस्यवादी कवयित्री महादेवी वर्मा के उद्गार (उदयपुर-आगमन 1976)-“अवश्य ही मेड़ता की माटी में इतनी अद्भुत क्षमता है कि मीरा जैसी नारी को जन्म दिया और बलिदानी

चितौड़ की माटी ने उसे सहेज कर युगों-युगों के इतिहास में चिर नवीन परिवेश में प्रस्तुत किया।”

युग ने करवट ली। नारी जागरण का स्वर गूंज उठा और युग पुकार उठा—

मुक्त करो नारी को मानव,

चिर बंदिनी नारी को।

युग-युग की बरबर कारा से जननी,

सखि, प्यारी को॥

छिन्न करो सब स्वर्णपाश,

उसके कोमल तन-मन से।

वे आभूषण नहीं दाम, उसके बन्दी जीवन के॥

आज नारी इतनी प्रतिबंधित नहीं है, वह अबला नहीं है आज राजा राममोहनराय, श्रद्धानंदजी, दयानन्द सरस्वती तथा स्वामी विवेकानन्द जैसे देश के अनेक विद्वज्जन मनीषियों ने नारी शिक्षा, नारी के सर्वांगीण विकास की बात को प्रमुखता प्रदान करते हुए समाज में भारतीय नारी के गरिमामय स्थान को प्रस्थापित किया है।

नारी जगी, पढ़ी, आगे बढ़ी और इतनी बढ़ी कि आज प्रशासनिक, सामाजिक, राजनीतिक, डॉक्टर, इंजीनियर, पायलेट, पुलिस और फौज में भी पुरुष वर्ग के साथ बराबर चल रही है। उत्तंग पहाड़ की चढ़ाई से लेकर अन्तरिक्ष तक भारतीय नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज परिवार का आर्थिक-संबल केवल पुरुष ही नहीं है अपितु नारी का भी इसमें पूर्ण योगदान है। बदलते समय के दौर के साथ-साथ शहरों-महानगरों में निवास करने वाली महिलाओं ने अपनी प्राप्त क्षमता-शिक्षा के आधार पर अर्थोपार्जन के अवसर तलाश लिये हैं। आज वह साधारण बाबू तथा ‘मिडवाइफ’ से लेकर उच्च से उच्च पदों पर आसीन है तथा प्रत्येक कार्य को उतनी ही तन्मयता, दक्षता, चतुरता और दायित्वबोध के साथ सम्पन्न करती है।

अर्थोपार्जन में शिक्षित और शहरी अंचल की नारी की बात करते-करते हम उस ग्रामीण महिला को उपेक्षित और अनदेखा नहीं कर सकते जिसकी दिनचर्या बाल रवि-उदय से आरम्भ हो जाती है और साँझ ढले या मध्यरात्रि तक अपने घर-परिवार और खेत-खलिहान में जुझते-जुझते बीतती है। एक भारतीय किसान खेतों में बीज डालने से लेकर लहरते खेत और कटाई तक की प्रक्रिया में तन्मयता से लगा रहता

है। उसके इस लगन, परिश्रम और अनवरत कर्म की स्थिति के पीछे उसकी उत्प्रेरिका, सहयोगिनी उसकी पत्नी है जो घर की देहरी से खेतों की मेड़ तक अपने अतुलित परिश्रम द्वारा जो सहयोग करती है वह स्तुत्य है। सहिष्णुता जैसे प्रखर गुणधर्म के कारण ही वह-नारी, समाज की, परिवार की मूल आधार है।

किन्तु इतना करके भी वह क्या पाती है वह? समाज में क्या स्थान है भारतीय नारी का? क्या वह पारिवारिक विषमताओं और जीवन में असमानता की स्थितियों के मध्य दोहरा जीवन नहीं जी रही?—ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो समाज में भारतीय नारी की स्थिति को प्रतिभाषित करते हैं।

आज भी वह शोषण की त्रासदी से मुक्त नहीं है। उसे घर और बाहर—दोनों कार्यक्षेत्रों का निर्वाह करना पड़ रहा है। इन स्थितियों में—(1) अन्तर्द्वन्द्व अधिक है। (2) असन्तुलन की स्थितियाँ हैं। (3) प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में पुरुष वर्ग उसके अस्तित्व पर हावी है।

नौकरी में उसे पुरुष के समान ही कार्य करते हुए घर के भी सभी काम अपने हाथों से करने होते हैं और वह निरंतर बोझ से लदी रहती है; जीवन भागदौड़, आपाधापी की कहानी बन रह जाता है। पति, बच्चे, घर, थकान और उदासी यही उसके जीवन के पर्याय बन जाते हैं और यही कारण है कि जीवन को आनन्दित करने हेतु जिस समरसता और सौहार्द की अपेक्षा है उसका निरन्तर अभाव लक्षित होता है।

इधर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समय-समय पर देश में विभिन्न कानून का निर्धारण कर नारी की स्थिति को समुन्नत करने का विश्वास प्रकट किया गया पर नारी की स्थिति बद से बदतर होती चली जा रही है।

आज अर्थतंत्र पर समान धरातल पर जीने वाली नारी मानसिक शोषण की प्रक्रिया से संतप्त है। जीवन के व्यावहारिक क्षेत्र में भी पद-पद पर उसे ‘अबला’ भावपूरित स्थितियों से आरोपित होना पड़ता है जो उसके लिए चुनौती है।

चाहे मध्य प्रदेश का बस्तर या खरगौन या राजस्थान का कोटड़ा-फलासिया अथवा बिहार, उत्तर प्रदेश या कलकत्ता अंचल के विभिन्न स्थल, नारी शोषण और अनाचार की कथा कहते हैं। कहीं कन्या विक्रय, कहीं दहेज तो कहीं अमानुषिक-अत्याचार, बलात्कार सी

नृशंस वीभत्स घटनाओं से रोम-रोम सिहर उठता है; भ्रूण हत्याओं से दुष्कर्म घृणा के अवसाद उत्पन्न करते हैं। शास्त्रों में जिसे जघन्य पाप की संज्ञा दी गई है, इस धर्मप्राण देश में यह कैसा अनाचार? आये दिन बलात्कार और शोषण की ये अमानवीय प्रताड़नाओं की घटनाएँ उसके 21वीं शताब्दी के प्रगतिमान आयाम पर प्रश्न चिह्न लगाती हैं।

नारी के जीवन में असमानता का दौर उसके जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है। अधिकांश लोग आज इतनी चेतना के पश्चात भी कन्या का जन्म अभिशाप मानते हैं। परिणय पश्चात पति-गृह में भी वह दहेज-दानव के बाहुपाश में आबद्ध चैन का जीवन जीने में विवश ही रहती है। यद्यपि औद्योगिक क्रान्ति और पाश्चात्य विचारों के अंधड़ से भारतीय जीवनशैली में परिवर्तन आया है तदपि अर्थ-केन्द्रित जीवन मूल्यों द्वारा पारिवारिक रिश्तों में तनाव अधिक आया है। विवाह चाहे परम्परागत रीति से हो या प्रेम विवाह पति-पत्नी अपने-अपने दायित्वों का विवेकपूर्वक निर्वाह करें तो तनाव को कम किया जा सकता है।

भारतीय संस्कृति में पुरुष और प्रकृति जीवन-गाड़ी के समानान्तर पहिये हैं। ऋग्वेद एवं महाभारत में पारिवारिक व्यवस्था एवं परस्पर संबंधों पर काफी जोर दिया गया है एवं पारिवारिक जीवन के महत्व को सर्वोपरि माना गया है। मनुस्मृति में (2/77-79) जिस तरह समस्त जन्तु अपने जीवन के लिए वायु पर आश्रित हैं उसी प्रकार सम्पूर्ण आश्रम गृहस्थाश्रम पर आश्रित हैं। प्रकृति के बिना पुरुष पंगु है।

हिन्दू विवाह अधिनियम 1955 के द्वारा भी पति-पत्नी के बीच स्वामी-सेवक का सम्बन्ध न होकर परिवार रूपी गाड़ी के दो समान पहियों के रूप में महत्ता स्वीकार की गई है जिसमें एक के बिना दूसरा अस्तित्वहीन है किन्तु जीवन स्तर पर असमानता की स्थितियाँ विद्यमान हैं। पारिवारिक कलह और तनाव की स्थितियाँ पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में अधिक जटिल हैं।

नारी माँ है, भगिनी है, बेटी है, पत्नी है, प्रेयसी है, वह परिवार की सूत्रधार है। इस दृष्टि से भारतीय नारी का समाज में विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। किन्तु आये दिन की घटनाओं पर

दृष्टिपात करते हुए यह प्रतीत होता है कि आज भी वह निरीह और निरूपाय है। आज भी नारी बुद्धिजीवी होते हुए भी अभेद्य-परम्पराओं और पीढ़ी दर पीढ़ी पोषित संस्कारों की प्राचीरों में आबद्ध है। आज भी चुनौतियों के विविध आयाम उसके समक्ष प्रश्न चिह्न में खड़े हैं। आज आवश्यकता है—(1) अस्मिता को पहचानने की (2) मानसिक बदलाव की (3) रुढ़िजन्य स्थितियों को नकारते हुए संस्कृति के जीवन तत्व को ग्रहण करने की (4) सांस्कृतिक सुषमा से प्रदीप्त एक गरिमामयी व्यक्तित्व निरूपण की।

आज विश्व परिवर्तन के तीव्र दौर से गुजर रहा है। समाज में भी तीव्र गति से बदलाव आ रहा है। भारतीय नारी इन सब से अनजान नहीं पर वह पश्चिम की नारी की तरह मुक्ति आंदोलन नहीं करती, स्वच्छंद क्रियाकलाप को प्रश्रय नहीं देती वरन् अपने त्याग, प्रेम और

सहिष्णुता के ताने-बाने में घर, परिवार व समाज का सुदृढ़ रूप तैयार करती है।

स्वामी विवेकानन्द के अमेरिका में दिए गए व्याख्यान का यह अंश भारतीय नारी की विशिष्टता को उद्घाटित करता है—“भारतीय नारी इसी माने में विशिष्ट है कि वह संतान के लिए तप करती है; प्रजनन कामोदिष्ट नहीं है, धर्मोदिष्ट है; धर्म से भी ऊपर जाकर मोक्ष के लिए उदिष्ट है। माता होकर ही वह मुक्त होती है क्योंकि सृष्टि ही मुक्ति और सृष्टि की वह।”

स्वनामधन्य रहस्यवादी कवयित्री महोदवी जी वर्मा ने भी अपने साहित्य-काव्य, रेखाचित्र, कहानियाँ, संस्मरण सभी में नारी के सुकोमल भावनात्मक रिश्ते, सबल साहसी व्यक्तित्व, अपरिमित धैर्यमना, आत्मबली एवं अनुपम त्याग की प्रत्येक स्थितियों का चित्रांकन बड़े मर्मस्पर्शी एवं मनोवैज्ञानिक रूप में किया

है। उन्होंने उसे अपनी “धरोहर” मातृत्व की अक्षुण्ण धारा को सुरक्षित रखने का संदेश दिया है। अस्तु, आज आवश्यकता है नारी-चेतना के स्वर को प्रखर करने की। भारतीय नारी केवल समान धरातल के अस्तित्व की आकांक्षी है जहाँ समरस स्थिति हो प्रताड़ना, छल और शोषण से दूर—वह अपने परिवार की गरिमामयी अन्नपूर्णा हो।

संक्षेप में पितृगृह के आँगन की यह तुलसी अपने जीवन संघर्ष के यथार्थ में सुजेता का कर्म सम्पन्न कर इस सृष्टि में जीवन बोध को नवीनता एवं गतिमयता प्रदान करती है।

यह भारतीय नारी है जो नारी मुक्ति के लिए आंदोलन नहीं करती; मुक्ति की, स्वाधीनता की, स्वनियंत्रण की, स्वोत्सर्ग की साकार मूर्ति के रूप में अपने को रचकर उच्च स्तर की स्वाधीनता का प्रेरणा स्रोत बनती है।

—22, बृज विहार, पुलां, उदयपुर-313001

मो. 9351549041

स मय के बदलते परिवेश में अनुशासन की परिभाषा भी बदल गई है। पहले अनुशासन एक दमन प्रक्रिया थी, पूर्णतः अंकुश एवं तानाशाही से परिपूर्ण, कठोर एवं दण्डनिहित। कठोर दण्ड भी सहज स्वीकार हो जाते थे। अभिभावक एवं शिष्य अनुशासन के नाम पर कठोर सजा दिया जाना शिक्षक का अधिकार मानते थे। अब स्थिति बहुत बदल गई है। बालक न घर में और न बाहर सजा या तिरस्कार स्वीकारता है। विद्यालय के शिक्षक द्वारा साधारण से साधारण सजा देने पर, डांटने-फटकारने पर अभिभावकों को भी आपत्ति हो जाती है। यह तो सत्य है कि विद्यालय अथवा किसी भी संस्था के सम्यक संचालन हेतु अनुशासन की आवश्यकता तो अपरिहार्य है।

आधुनिक परिवेश में अनुशासन से भय का पुट निकाल दिया गया है। जिस प्रकार रोगी को स्नेह, सहानुभूति, प्यार, ममत्व आवश्यक है, उसी प्रकार स्वस्थ अनुशासन के लिए भी दोषी को सही समझ, अनपेक्षित व्यवहार का विश्लेषण एवं मृदु व्यवहार से समझाना आवश्यक है। सजा को अब बालक के मानसिक विकास के लिये हानिकारक माना जाने लगा है। इस प्रकार के स्वस्थ अनुशासन हेतु शिक्षक में धैर्य आवश्यक है। सजा एक सोचा-समझा कदम नहीं होता है, वह तो क्रोध से उत्पन्न अविवेकपूर्ण व्यवहार होता है। महान् शिक्षाविद् पेस्टोलोजी ने अनुशासन का आधार प्रेम ही बताया है। विख्यात विचारक प्लेटो की

विद्यालय में स्वस्थ अनुशासन कैसे ?

□ नीना राठौड़

मान्यता है कि बालक को दण्ड की अपेक्षा खेल और प्यार द्वारा नियंत्रित किया जाना श्रेयस्कर है। बच्चों को स्वमूल्यांकन करते रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे उन्हें सही और गलत का इल्म होता रहेगा और उसका आचरण सदैव अनुशासनमय रहेगा। अनुशासन पढ़कर सीखने की चीज नहीं है। यह तो सम्पर्क में आने वालों के सद्व्यवहार से ग्रहण की जाती है। अतः अनुशासन की बात कहने वालों का स्वयं का आचरण उत्तम होना आवश्यक है।

स्वस्थ अनुशासन के अन्तर्गत स्वयं की भूमिका विशेष है। इसमें आत्मनियंत्रण है दबाव नहीं। अध्यापकों को चाहिए कि अपेक्षित वातावरण सृजन द्वारा बालक-बालिकाओं में कर्तव्यपालन की भावना विकसित हो। उन्हें स्वतंत्रता के साथ ही यह भी बोध हो कि कितनी स्वतंत्रता उचित है। प्रजातांत्रिक संरचना में अनुशासन स्वयं का उत्तरदायित्व है। अनुशासन का अर्थ दमन नहीं है बल्कि उचित-अनुचित का भेद कराने की प्रक्रिया है।

किसी भी विद्यालय का विकास अनुशासन पर आधारित है। स्वच्छंदता एवं अनुशासनहीनता परिवेश को प्रदूषित कर देती है

और ऐसे वातावरण में न सम्यक अध्ययन-अध्यापन होता है और न ही विभिन्न गतिविधियों का संचालन। अनुशासन के अन्य समर्थकों को समझना चाहिए कि शमशान जैसी नीरवता वाला अनुशासन अनुशासन नहीं है। उसमें बालकों की चंचलता, क्रियाशीलता, उत्साह सभी समायोजित है, पर योजनाबद्ध व्यवस्थित एवं सुसंचालित। स्वस्थ अनुशासन हेतु हमें निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना है। (1) अनुशासन का आधार प्रेम, विश्वास तथा सदभावना हो। (2) सहयोग तथा सामन्जस्यपूर्ण वातावरण का निर्माण। (3) शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापक का आदर्श आचरण। (4) पक्षपात रहित व्यवहार। (5) पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियों का प्रभावी संतुलन। (6) नैतिक शिक्षा की व्यवस्था। (7) सम्यक शैक्षिक सुविधाओं का व्यवस्थापन। (8) विद्यार्थियों की उपलब्धि हेतु प्रशंसा, प्रोत्साहन एवं पुरस्कार। (9) खेलकूद की पर्याप्त व्यवस्था। (10) पुस्तकालय एवं उत्तम वाचनालय व्यवस्था। (11) अच्छी परम्पराओं का निर्वाह एवं नियम पालन। (12) स्वयं अध्यापकों में पारस्परिक सौहार्द, सदभाव एवं सहयोग। (13) विद्यालय की सम्पत्ति के प्रति लगाव। यथा संभव बालक को व्यस्त रखा जाना चाहिए। इस प्रकार हम विद्यालय में स्वस्थ अनुशासन की व्यवस्था कर सकते हैं।

—प्राचार्या, टैगोर विद्या भवन

मेजर शैतान सिंह कॉलोनी, शास्त्री नगर, जयपुर

मो. 9549299991

सबसे प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में। शिक्षा बिना ही पढ़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में। शिक्षा बिना बनता नहीं कोई भी सत्पात्र है। शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है।

कि सी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं जो राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हैं। वास्तविक रूप में शिक्षा का आशय है ज्ञान, ज्ञान का आकांक्षी है- विद्यार्थी और इस ज्ञान को उपलब्ध कराता है शिक्षक तथा शिक्षक इसे शिष्य में नवाचार एवं अनुसंधान को सम्मिलित करके ही उपलब्ध करवा सकता है।

शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्ष धातु से बना है जिसका अर्थ बुद्धिमत्ता का विकास करना होता है। शिक्षा शब्द का शाब्दिक अर्थ बुद्धि का विकास करना होता है। शिक्षा द्वारा जीवन को मार्ग दर्शन मिलता है जिससे प्राप्तकर्ता सही दिशा की ओर सफल कदम बढ़ाता है। शिक्षा के माध्यम से शिक्षक कार्य को और अधिक उत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसे मात्र किसी कौशल या कार्य निष्पादन तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। इसके द्वारा व्यक्ति की आन्तरिक क्षमताओं का विकास करने के साथ ही उसके व्यक्तित्व को सामाजिक व राष्ट्रीय दृष्टि से उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जा सकता है। व्यक्ति में मानवता का बोध एवं सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करना शिक्षा द्वारा ही संभव है।

किसी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पर निर्भर करती है तथा शिक्षक शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिन्दु होता है। भारतीय समाज के अति प्राचीनकाल से ही शिक्षक का स्थान सर्वोपरि माना गया है। वेदों एवं उपनिषदों तथा अन्य भारतीय ग्रन्थों में शिक्षक के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है।

शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला कहा गया है। शिक्षक ही वह सशक्त उपागम है, जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न संस्कारों के माध्यम से अपने शरीर, मन और आत्मा का समन्वित विकास कर समाज एवं राष्ट्र को योग्य नागरिक प्रदान करता है। नागरिकों को अपनी सम्भावनाओं की सर्वोच्चता पर प्रतिष्ठित करना, गुणात्मक शिक्षा का ही कार्य है। शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिये शैक्षिक सुधारों के नियोजन, निरूपण व परिणाम की

शिक्षा दर्शन

समाज का दर्पण है शिक्षा

□ प्रहलाद शर्मा

प्रक्रिया में नियंत्रण व परिवर्तन के निरन्तर प्रयासों को बढ़ाना होगा।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है। हमें उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जिस ज्ञान एवं अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है वही शिक्षण तकनीकी की विषय वस्तु है। शिक्षण कला भी है व विज्ञान भी जिसका वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है। शिक्षा प्रक्रिया के दो प्रमुख पक्ष हैं- शिक्षण तथा अधिगम। शिक्षण का सम्बन्ध शिक्षाशास्त्र से है जबकि अधिगम का सम्बन्ध मनोविज्ञान से है। शिक्षा एक कला है जबकि अधिगम विज्ञान है।

शिक्षा समाज का दर्पण है। शिक्षा और समाज में घनिष्ठ सम्बन्ध है तथा दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन जिस गति से हो रहे हैं। यही कारण है कि शिक्षा समाज की वर्तमान आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करवाने में असफल सिद्ध हो रही है क्योंकि शिक्षा में स्वतः परिवर्तन महत्वपूर्ण नहीं होते हैं। उन्हें सुविचारित ढंग से प्रायोजित किया जाता है। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप लाने एवं जन आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सक्षम बनाने के लिये नये विचारों, नई विधियों एवं नवाचारों की आवश्यकता होती है।

शैक्षिक नवाचारों का उदभव स्वतः नहीं होता वरन् उन्हें खोजना पड़ता है। तथा सुनियोजित ढंग से प्रयोग में लाना होता है ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके जिससे वह बालक की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। पाश्चात्य संस्कृति में बढ़ती विमुखता के कारण समाज में प्राचीन भारतीय मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं। जीवन एवं समाज के प्रति दृष्टिकोण बदल रहा है। भौतिकवाद बढ़ रहा है तथा आध्यात्मिक चिंतन लुप्त हो रहा है। रहन-सहन, वेश भूषा, आचार-व्यवहार चिन्तन एवं चरित्र बदल रहा है तथा इन सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा में नये परिवर्तन नवाचार अपरिहार्य हो गये हैं। शिक्षा में नवाचार का अभिप्राय स्थापित शिक्षा प्रणाली

में नये व्यवहार अर्थात् नवीन विधियों एवं रीतियों का समावेश करना है। नवाचार एक नूतन विचार का प्रारम्भ है तथा यह एक प्रक्रिया या तकनीकी है जिसका विस्तृत उपयोग प्रचलित व्यवहारों के स्थान पर किया जा सकता है। नवाचारों का उद्देश्य सुधारात्मक दृष्टि है। नवाचारों का ज्ञान विभिन्न स्रोतों में हो सकता है। वे स्रोत देश विदेश की शिक्षा सम्बन्धी पत्र पत्रिकाएँ, जर्नल, शोध पत्र एवं पत्रिकाएँ, सरकारी अभिलेख, जनसंचार के माध्यम, प्रचार या सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम इत्यादि हो सकते हैं।

वास्तव में नवाचार वह विचार है जिसमें नवीन एवं पुरातन का मिश्रण कर एक नवीन एवं परिमार्जित ईकाई के रूप में अपने गुणों एवं विशिष्टताओं के साथ प्रस्तुत किया जाता है जिससे व्यक्ति नवीनता का अनुभव करता है। एक अच्छे शिक्षक को विभिन्न नवाचारों से अवगत होना अत्यन्त आवश्यक है जिससे वे अपने शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बना सके तथा इस हेतु शिक्षा में प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न नवाचारों का प्रयोग कर सकता है-

1. मल्टीमीडिया एप्रोच, 2. कम्प्यूटर असिस्टेड इन्स्ट्रक्शन, 3. इन्टरनेट, 4. सेटेलॉइट सम्प्रेषण 5. जर्मनालाइड सिस्टम ऑफ इन्स्ट्रक्शन 6. रेडियो विजन 7. ई-मेल 8. सी.डी. रोम 9. एल. सी.डी. प्रोजेक्ट 10. ओ.एच.पी प्रोजेक्ट 11. ऑडियो विजुअल एड्स 12. शैक्षिक दर्शन 13. ई-लर्निंग।

इसके साथ-साथ शिक्षा में गुणवत्ता हेतु अनुसंधान का भी काफी विशेष महत्त्व है। समय-समय पर नवीन बदलती परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा में अनुसंधान की आवश्यकता होती है। नवीन अनुसंधानों से हमेशा नवीन तथ्य और नवीन परिणाम प्राप्त होते हैं जिससे हर क्षेत्र में नवीनता का बोध होता है तथा कुछ नया करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। अतः शिक्षण कार्यों में इनका समावेश कर उसे रोचक बनाया जा सकता है। -5/279, एस.एफ.एस.

अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
मो. 8829003862



शिक्षा दर्शन

शिक्षा, शिक्षक और समाज

□ नटवर तेली

“बच्चों को इतना सक्षम बनाना कि वे जीवन का अर्थ समझ सकें और अपनी योग्यताओं का विकास कर सकें, अपने जीवन का एक उद्देश्य निश्चित करें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें तथा दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा करने का अधिकार दें।”

—राष्ट्रीय पाठ्यपत्रों की रूपरेखा, 2005

जैसा कि उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है, काफी बहस के बाद जोड़ बनती भारतीय शिक्षा को शिक्षाविदों ने जीवन कौशल और योग्यताओं को विकसित करने वाली बनाने की सिफारिशें की हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा पद्धति ने विद्यार्थियों को मात्र परीक्षार्थी बना कर रख दिया है। क्रियात्मकता और सुचनात्मकता के अभाव में वह सोचने तथा समझने की बजाय रटने पर ज्यादा ध्यान देने लगा है, जिससे बेशक वह अधिकतम अंक प्राप्त करने की होड़ में सबसे आगे खड़ा होता है, परन्तु शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना संदिग्ध है। इस परिस्थिति के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली को भी बिम्बेदार ठहराया जा सकता है। लेकिन यहाँ अब मुद्दा यह है कि बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में हुए क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने समाज के हर स्तर को प्रभावित किया, जिससे समाज के विचार एवं आवश्यकताएं भी बदली हैं। इन्हीं बदलावों एवं समाज की बदलती जरूरतों को पूरा करने में शिक्षा की भूमिका स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। अतः यहाँ जरूरत इस बात की है कि शिक्षा को लगातार अद्यतन किया जाता रहे।

संचार क्रांति के युग में परम्परागत शिक्षा अपनी प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो सकती, नितनी आवश्यकता है। आज शिक्षण-प्रक्रिया को नवीन सिद्धांतों, खोजों, तकनीकों एवं शोधों से जोड़ने के साथ-साथ शिक्षा को रचनात्मक व समसामयिक बनाने के साथ ही शिक्षा को व्यावसायिक तथा रोजगारोन्मुख बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए भारत में समय-समय पर लागू हुई विभिन्न शिक्षा नीतियों द्वारा

लगातार प्रयास किये गये, लेकिन ये कितनी सफल हुई यह कहना संभव नहीं है। इसका अन्दाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि वास्तव में भारत में साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा, मात्र यही काफी नहीं है। जिस गति से साक्षरता दर में वृद्धि हुई उसी गति से बेरोजगारों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई। निस्संदेह आई.टी., कम्प्यूटर और व्यावसायिक प्रबंधन जैसे रोजगारमूलक पाठ्यक्रमों का प्रचलन बढ़ा, परन्तु इससे समस्या और विकट हो गयी।

लगातार शिक्षा की निजीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ने निजी तथा राजकीय क्षेत्रों के बीच एक गहरी खाई उत्पन्न कर दी है जिससे शिक्षा की गुणवत्ता भी प्रभावित हुई है। भारत जैसे विकासशील देश की जरूरतें अन्य देशों से अलग हैं। कुवि प्रधान अर्थव्यवस्था और निम्न तथा मध्यमवर्गीय समाज के लिए शिक्षा का निर्वाकरण सामंजस्यपूर्ण नहीं है। अतः जरूरत है इस खाई को पाटने की जिससे शिक्षा की गुणवत्ता बनी रहे एवं समाज में बढ़ती असमानता की समस्या पर भी अंकुश लगाया जा सके।

जब बात शिक्षा की होती है तब शिक्षक की भूमिका को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता, क्योंकि शिक्षक उस कड़ी का नाम है जो शिक्षा, विद्यार्थी व समाज को आपस में जोड़ती है एवं शिक्षा के उद्देश्यों को विद्यार्थियों तक पहुंचाती है। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है, जब शिक्षक स्वयं समाज की वर्तमान आवश्यकताओं व जरूरतों से अनजान हो। शिक्षक के लिये यह आवश्यक होता है कि उन परम्परागत धारणाओं और मिथकों से बाहर निकलकर समाज को श्रम से जोड़ने के साथ-साथ समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति भी संवेदनशील रहें। मार्क्स ने भी कहा है—शिक्षक शोषण प्रधान समाज के विरुद्ध सर्वहारा समाज के हितों के रक्षक हों, शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने में सामर्थ्यवान हों, श्रम को आदर की दृष्टि से देखते हों। खुद शारीरिक श्रम करते हों और वे

छात्रों में श्रम के प्रति आदर भाव विकसित करें, उन्हें श्रम करने में प्रशिक्षित करें और प्रधान समाज के निर्माण में सहायक हों।

परिग्रह की महत्ता को समझकर उसे भारतीय समाज में उचित स्थान दिलाने के उद्देश्य से सत्वमेव जयते की तरह श्रमेव जयते के घोष को हमें अंगीकार करना होगा। श्रम का फल सदैव मीठा होता है। जो श्रम को अपना हथ बनाते हैं, उन्हें कहीं भी किसी तरह की पराजय नहीं देखनी पड़ती। सफलता के उनके चरण पखारती नजर आती हैं।

भारत के संदर्भ में मार्क्स का यह कथन इसलिए भी सार्थक है कि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थियों को श्रम से दूर ले जा रही है, सुचनात्मकता की कपी के साथ-साथ मात्र कक्षा-कक्षा की गतिविधियों तक ही सीमित रह गई है। अतः जरूरत है शिक्षा को समाज से जोड़ने की, समाज की जरूरतों को पूरा करने वाली बनाने की। लेकिन यहां एक और सवाल उठता है कि समाज की जरूरतें क्या हैं?

वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के युग में वास्तव में समाज की जरूरतें बदली हैं। आज समाज को तकनीकी ज्ञान, व्यावसायिक ज्ञान, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञान की आवश्यकता है। साथ ही, पुराने समझे जाने वाले इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र, भाषा और साहित्य आदि अनुशासनों का महत्व भी अप्रत्याशित है।

अतः इस तरह के प्रवास हों जिससे शिक्षक आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त कर इन सभी जरूरतों को विद्यार्थियों के माध्यम से समाज तक पहुंचाएं जिससे भारतीय समाज का समावेशी और सर्वांगीण विकास संभव हो सके। हमें शिक्षा और संस्कारों की स्थापना करने के लिए शिक्षक और समाज के मध्य मधुर संबंध स्थापित करने पर जोर देना चाहिए।

महवीर कॉलोनी,
कानोड़-313604 (उदयपुर)
फ़ोन: 9460695814

स्वास्थ्य

शरद ऋतु के रोग एवं उनकी रोकथाम

□ डॉ. एच.एन.एस. भटनागर

शरद ऋतु जाती है तब शरद ऋतु का आगमन होता है। ठण्ड लगने लगती है। बीच में कभी-कभी मौसम हल्का-हल्का गरम-शरद का भी हो जाता है। प्रकृति परिवर्तनशील है। ऋतुएं बदलती हैं। ऋतुओं के संघिकाल में अर्थात् उनके आते-जाते समय प्रायः हम उसका नोटिस नहीं लेते हैं। उसका नतीजा यह होता है कि घर-घर बीमारियां दस्तक देने लगती हैं। हर बीमारी का शरीर और मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। खास तौर पर विद्यार्थी वर्ग पर क्योंकि वह मौसम के बदलते मिजाज की परवाह नहीं करता। अतः उसके अध्ययन पर विपरीत असर पड़ता है। उसकी मानसिकता को तनाव घेरने लगता है।

दरअसल प्रत्येक ऋतु के आगमन पर वातावरण धीरे-धीरे परिवर्तित होता है। उसका आनन्द सब होने लगते हैं। परन्तु यह भूल जाते हैं कि बदलती ऋतु में उन्हें अपने शरीर का विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा पिछले मौसम की आदतों पर रोक लगानी चाहिए। जैसे शरद ऋतु के आगमन पंखा, ठंडा पानी, आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स का उपयोग नहीं करना चाहिए। प्रातःकाल एवं रात में वातावरण में काफी सर्द हो जाता है। आपका शरीर इस ठंडक से अपने आपको व्यवस्थित नहीं कर सकता है। अतः बचाव न करने पर आपको रोग होने की संभावना हो जाती है।

शरद ऋतु में सबसे अधिक होने वाले रोग निम्नलिखित हैं-

1. बुकास-

यह कोल्ड वायरस के संक्रमण से होता है परन्तु कभी-कभी दूसरी वायरसेस (इन्फ्लुएंजा, आर्बोर वायरस) से भी हो जाता है। इस रोग में नाक बंद हो जाती है या बहने लग जाती है, छींक आती है, आंखें लाल हो जाती हैं तथा पानी आता है। वायरस की शक्ति तीव्र होने पर बुखार भी आ जाता है।

इसके उपचार के लिए नाक बहना रोकने की तथा बंद नाक को खोलने की औषधियों का उपयोग करें। बुखार के लिए क्रोसिन/डिस्त्रिन आदि औषधियों का उपयोग करें। उचित लाभ न



होने पर डॉक्टर की सलाह लेकर उपचार करावें।

2. टोन्सिलाइटिस-

यह रोग गले में ठंडी हवा लगने से होता है। गले की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाने से कीटाणुओं के संक्रमण के कारण होता है। इस रोग में टोंसिल सूज कर लाल हो जाते हैं और कभी-कभी इनसे पस भी पड़ जाता है। बुखार आता है, खाने-पीने में काफी कष्ट होता है और दर्द भी बहुत होने लगता है। इस रोग से बचाव के करने के लिये सबसे पहले अपना ठंड से बचाव करें। ठंडा पानी, आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स नहीं लें। गले को गर्म कपड़े से ढक कर रखें, गफ्लर का उपयोग करें। देर रात तथा प्रातःकाल जब ठंड अधिक होती है, घर से बाहर न जाएं। यदि बाना बरूरी हो तो गर्म कपड़े पहन कर बाएं। गर्म सूप, गुड़, राम, हल्दी खावें और चकुरत हो तो गले का सेक भी करें। इससे आपको आराम मिलेगा। डॉक्टर को दिखाकर तथा उनकी सलाह से एंटीबायोटिक का सेवन करें तथा रोग से निजात पावें।

3. साइनसाइटिस-

नाक व गले का संक्रमण कभी-कभी नाक के चारों तरफ पायी जाने वाली साइनसेस में भी हो जाता है। इस कारण सर में दर्द, बुखार तथा नाक के रास्ते साइनसेस का पीप बाहर निकलने लगता है। रोग का उपचार शीघ्र करना चाहिए अन्यथा रोग बढाकदा दिमाग में पतुंच जाता है और मेनिन्जाइटिस का रोग हो जाता है। शीघ्र डॉक्टर को दिखावें और उसके अनुसार

उक्त बीमारी की जांचावरण सेका मांजले वाले डॉ. एच.एन.एस. भटनागर एक सेकाभावी चिकित्सक एवं मागाससेवी के रूप में विद्वत हैं। आप मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसर एवं औषधि विभागा के अध्यक्ष रहे हैं। एम्बीबीएस ऑफ फिजिशियन ऑफ इन्डिया के अजीयक सदस्य हैं। भटनागर की मेडिकल ग्राइंडिंग विषय पत्र तीस महत्त्वपूर्ण पुस्तकें भी प्रकाशित हैं। विविध के पाठकों के लिए शान्द ऋतु के बीम और उनकी रोकथाम विषय पत्र इतना संपटीमी अल्लेख मिलवाके के लिए हम उसके प्रति आभावी हैं।

-विविध संपादक

समय पर दवाएं लें और रोग से झुटकरा पावें। यदि डॉक्टर सलाह दें तो अस्पताल में भरी होकर अपनी चिकित्सा करावें।

4. ब्रोन्काइटिस-

प्रतिरोधक क्षमता कम होने पर नाक व गले का संक्रमण स्वास की नलियों (ब्रोन्काई) में पतुंच जाता है। फलतः ब्रोन्काइटिस हो जाती है। इसमें खांसी चलती है, कभी कफ (बलगम) आता है, कभी नहीं आता है। बलगम सफेद, हल, पीला बदलू वाला हो सकता है। यह संक्रमण करने वाले कीटाणु पर निर्भर है। खांसी चलने पर छाती में दर्द हो सकता है। बलगम न निकाल पाने पर तथा अटक जाने पर उल्टी हो सकती है। श्मिक बेहोशी भी हो सकती है। इसी प्रकार एलर्जी तथा एसिडिटी के कारण भी खांसी हो सकती है। श्मिक बेहोशी भी हो सकती है। इसी प्रकार एलर्जी तथा एसिडिटी के कारण भी खांसी हो सकती है। उचित और समय पर उपचार करने से क्रोनिक ब्रोन्काइटिस तथा ब्रोन्कोक्टेसिस और कोरपल्मोनिल जैसे रोगों से रोक जा सकता है।

5. ब्रोन्कीयल अस्थमा

एलर्जी के कारण स्वास नलियों में सिकुड़न हो जाती है। इसमें स्वास निकलने समय अधिक अवरोध होता है और स्वास लेते समय भी श्मिका कष्ट होता है। प्रायः यह रोग बच्चों और विद्यार्थियों में होता है। अधिकतर एलर्जी धूल, धुएं, परागकण तथा खाने-पीने की चीजों से होती है। अतः इससे बचाव करना

चाहिए। सर्दी के समय यह रोग अधिक होता है तथा कीटाणुओं के संक्रमण के कारण विकराल रूप भी धारण कर सकता है। रोग प्रारम्भ होते ही उपचार करवाना चाहिए। अन्यथा रोग के बढ़ जाने पर भी ऑक्सीजन की आवश्यकता भी पड़ सकती है। चिकित्सालय में भर्ती भी होना पड़ सकता है।

6. न्यूमोनिया-

प्रतिरोधक क्षमता कम होने तथा ठंड से असावधानी रखने से कीटाणु, जीवाणु आदि का संक्रमण श्वास की नलियों से आगे बढ़कर एल्वीओलाई में पहुंच जाता है और न्यूमोनिया का रोग हो जाता है। यह अधिकतर बच्चों और बूढ़ों में होता है। न्यूमोकोकाई, स्ट्रेप्टोकोकाई, क्लेबसेला तथा वायरसेस (जीवाणु) के संक्रमण से होता है। इस कारण फेंफड़ों में सूजन आ जाती है, छाती में दर्द होता है, ठंड लगकर बुखार आता है, खांसी चलती है तथा बलगम आने लगता है। समय पर निदान करवाकर चिकित्सा करवानी चाहिए। अन्यथा संक्रमण शरीर के अन्य भागों में पहुंच सकता है। दिमाग में संक्रमण हो जाने पर खतरा बढ़ जाता है।

7. इनफ्लुएंजा-

यह रोग एक वायरस के संक्रमण से होता है। इस रोग में नाक बहती है, छींकें आती हैं, आंखें लाल हो जाती हैं, गले में और नाक में

जलन होने लगती है और जोर का बुखार (103-104 डिग्री) आ जाता है तथा खांसी चलती है। इस रोग की दो वायरसेस होती हैं, ए और बी, तथा ए वायरस की कई नई प्रजातियां उत्पन्न हो गई हैं। इनमें एच1 एन1 का रोग विकराल रूप ले सकता है तथा न्यूमोनिया हो जाने पर मृत्यु संभव है। रोग का शीघ्र निदान करवाकर चिकित्सा करनी चाहिए। टेमीफ्लु नाम की औषधि इस रोग को नियन्त्रण में रखती है। इसलिए इसका उपयोग करना चाहिए। आजकल यह रोग भयंकर रूप से फैल रहा है। इसका टीका लगवाना चाहिए। जिस परिवार में रोगी हो तो उस परिवार के प्रत्येक सदस्य को टेमीफ्लु का उपयोग 10 दिन तक करना चाहिए। रोगी को अस्पताल में भर्ती कराकर चिकित्सा करवानी चाहिए। इसके टीके का लाभ एक साल तक रहता है, अतः हर साल टीका लगवाना चाहिए।

8. चमड़ी पर ठंड का प्रभाव-

सर्दी अधिक होने पर, ठंडी हवा चलने पर तथा बर्फ गिरने पर आपकी चमड़ी जगह-जगह से तड़क जाती है, फट जाती है और जलन तथा दर्द करने लगती है। इससे बचने के लिए चेहरे पर गर्म मंकी केप का उपयोग करें, हाथों में गर्म ग्लोव्स तथा पावों में गर्म मौजे पहने, गले में मफलर लगाने एवं शरीर को गर्म कपड़ों से ढका हुआ रखें। मुंह और होंठों पर तड़कने से चीरे पड़

जाते हैं और बहुत दर्द होता है। इसलिए रात को सोते समय वेसलीन या तेल लगावें। दिन के समय क्रीम लगावें और सर्दी से बचाव करें। हाथ तथा पांव की उंगलियों में भी चीरे पड़ जाते हैं इन्हें 'ब्याऊ फटना' कहते हैं। इनमें भी बहुत दर्द होता है। हाथ से काम करने तथा चलने फिरने में कष्ट होता है। इनकी चिकित्सा के लिए भी क्रीम तथा वेसलीन लगावें। सरसों के तेल को गर्म कर यदि उसमें थोड़ा मोम डालें तो मोम पिघल कर तेल में मिल जाएगा। इसे ठंडा होने ब्याऊ में भर दें तो इससे शीघ्र आराम मिलेगा।

9. फ्रेस्टबाइट-

नंगे पैर ठंडे स्थानों पर चलने से या बर्फ में चलने से पांव की उंगलियों में सूजन आ जाती है और वे नीले पड़ जाते हैं। समय पर ध्यान न देने पर गेग्रीन भी हो सकती है अतः प्रारम्भ से ही उपचार आरम्भ कर दें। गर्म पानी में पांव की सिकाई करें, गर्म मौजे पहने, नंगे पांव न चले। बर्फ में चलना हो तो विशेष प्रकार के जूते आते हैं उनका उपयोग करें। गेग्रीन होने पर अस्पताल में भर्ती होकर चिकित्सा करवायें अन्यथा उंगलियां कटवानी भी पड़ सकती है। इन सबका का बचाव ही उत्तम उपाय है।

-क्यू, अभय सिंह जी की बारी,
सरदारपुरा, उदयपुर-313001
मो. 9413657532

प्रेमक प्रसंग

संकल्प

□ साँवलाराम 'नामा'

'बा बा देखो न मेरे छोटे-बड़े सभी साथी विद्यालय जाते हैं। आप मुझे विद्यालय क्यों नहीं भेजते?'-एक नन्हा बालक अपने पिता के सामने रोष भरे शब्दों में अपने मन और दिल की बात कह रहा था। उसकी बात सुनकर पिता की आँखों में आँसू भर आये। वे बोले- "बेटा हमारे लिए तो जून (समय-सुबह-शाम) की रोटी का इंतजाम करना मुश्किल है। ऐसे हालात में मैं तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई का खर्चा कैसे उठाऊंगा?"

"पर पिताजी, मेरे साथी मुझे अंगूठा छाप कहकर मेरा मजाक उड़ाते हैं। यदि आप मुझे विद्यालय नहीं भेजोगे तो क्या मैं जिंदगी भर अंगूठा छाप कहलाता रहूँगा?" बालक जरा और तेज स्वर में बोला।

"नहीं बेटा, तुम्हारी उम्र वास्तव में

पढ़ने की है पर मैं गरीब हूँ। मैं तुम्हारी कॉपी-किताबों का खर्चा, फीस आदि दे पाने असमर्थ हूँ। इसलिए..."

"पिताजी यदि मन में दृढ़ इच्छा हो, तो ये सब बातें आड़े नहीं आती..." बालक कुछ सोचकर बोला। "वो कैसे बेटा?" पिताजी ने अत्यंत ही स्नेह भरे स्वर में पूछा।

पिताजी आप पैसे की चिंता न करें। आज से आप मेरे गुरु होंगे और मैं आपका शिष्य! यह धरती मेरे लिए स्लेट होगी और पेड़ की टहनी मेरी कलम! बस आप इतना जरूर करना जब भी आप काम पर जाओ तो मुझे भी अपने साथ लेते जाना। उसके पिताजी ये बातें सुनकर बहुत खुश

हुए और बोले-"बेटा, मैं तुम्हारी लगन, धुन देखकर बहुत प्रसन्न हूँ। यदि तुम पढ़ने को इतने ही उत्सुक, उत्साहित, जिज्ञासु हो तो मैं तुम्हें जरूर पढ़ाऊंगा।" यह कहकर उन्होंने पुत्र को गले लगा लिया।

इसके बाद वे हमेशा ही अपने जिज्ञासु बेटे को अपने साथ काम पर जाते समय ले जाने लगे। रास्ते में जो मील पत्थर पड़ते उन पर लिखे अंकों (गिनती) का अभ्यास करके उस बालक ने धीरे-धीरे गिनती सीख ली। अपने ऐसे ही संकल्प, लगनशीलता और लगातार मेहनत से आगे जाकर यही बालक प्रकाण्ड विद्वान एवं समाजसेवी बना। इस बालक का नाम था- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।

-सदर बाजार रोड, निकट बड़ा चौराहा, भीनमाल
मो. 9587848485

स माचार पत्रों के नियमित पाठक जानते हैं कि 3-4 वर्ष पूर्व चित्तौड़गढ़ के एक चिकित्सक को चिकित्सा कार्य करने से रोक दिया था। यह कार्य राज्य सरकार के किसी आदेश से नहीं बल्कि चिकित्सकों के व्यावसायिक संघ के आदेश से हुआ था। बाद में राज्य सरकार ने भी इस आदेश का अनुमोदन कर दिया—स्वीकार कर लिया। कार्य करने से रोकने का कारण था— चिकित्सा कार्य सम्पन्न करने स्तर निम्न होना। यहां विचारणीय प्रश्न यह है कि चिकित्सा कार्य सम्पन्न होने का निम्न स्तर आगे कार्य करने में बाधक बना। पाठक यह भी जानते हैं कि मेडिकल काउन्सिल ऑफ इन्डिया के पदाधिकारी (अध्यक्ष या सचिव) द्वारा किन्हीं चिकित्सा महाविद्यालयों की स्वीकृति जारी करने में धांधली होना साबित होने पर इन्हें पदों पर काम करने से रोक दिया था। इसी भाँति शिक्षण कार्य निम्न होने पर क्या कभी किसी अध्यापक को पढ़ाने से रोका गया है? कक्षा में श्यामपट्ट नहीं है तो क्या किसी अध्यापक ने त्यागपत्र दिया है? छात्र के गृहकार्य को नहीं जाँचने पर क्या सरकार ने ऐसे शिक्षकों को शिक्षण कार्य करने से रोका है? ऐसा कहीं सुनने में नहीं आया।

शिक्षण को व्यवसाय नहीं सेवाकार्य ही माना गया है जबकि चिकित्सक या वकील के कार्य को व्यवसाय की श्रेणी में गिना जाता है। व्यवहार में देखा जाता है कि व्यवसाय शब्द को समाज में बड़ा सम्मान दिया जाता है जबकि शिक्षण को उसकी तुलना में निम्न स्तर का कार्य माना जाता है।

अब एक भिन्न दृष्टि से विचार कीजिये। चिकित्सा व्यवसाय में जब कोई नया चिकित्सक प्रवेश करता है तो पुराना चिकित्सक, जिसे कई वर्षों का अनुभव है, जब ऑपरेशन करता है तो नये चिकित्सक को अपने साथ रखता है, ऑपरेशन की बारीकियों से उसे परिचित कराता है, नव नियुक्त चिकित्सक को एकदम सर्वप्रथम ही ऑपरेशन का कार्य नहीं सौंपा जाता उसे पुराना तथा अनुभव प्राप्त चिकित्सक अपने साथ रखता है। इस प्रकार की परम्परा शिक्षा विभाग में नहीं है। कई बार इसका स्तर देखने में आता है। प्रधानाचार्य समय में उसी के साथ काम किये हुए शिक्षक के कार्य में गलतियाँ ढूँढता है, कनिष्ठ शिक्षक को जिला शिक्षा अधिकारी के रूप में तैयार होने का मार्गदर्शन या प्रशिक्षण नहीं देता है, गुरु नहीं सिखाता है। क्या इस व्यवहार में परिवर्तन किया जाना चाहिए या वरिष्ठ पदों पर कार्य कर रहे कार्मिकों या अधिकारियों के सोच-विचार में समाज हित की दृष्टि से कोई परिवर्तन सुझाया जा सकता है।

चिन्तन

अध्यापन : व्यवसाय या सेवा

□ प्रो. (डॉ.) जमनालाल बायती

अध्यापन एक सम्मानजनक कार्य या प्रक्रिया माना जाता रहा है। पिछले 50-60 वर्षों से इस धारणा या विश्वास को बड़ा धक्का लगा है। डॉक्टर के समान ही वकील या इंजीनियर के व्यवसाय को जन साधारण में अधिक सम्मान मिलने लगा है। वकील के व्यवसाय में क्रेता तथा विक्रेता का सीधा सम्बन्ध होता है, वे अपने कार्यानुसार पारिश्रमिक भी, आपसी सहमति से तय करते हैं, वे शिक्षा के क्षेत्र में ऐसा नहीं होता। विद्यालय में बच्चों को विद्यार्थी के रूप में प्रधानाचार्य प्रवेश देता है, शिक्षक को उन्हें पढ़ाना ही है। प्रवेश में वह कोई हस्तक्षेप नहीं करता है। किसी बच्चों को किन्हीं कारणों से यदि वह नहीं पढ़ाना चाहे तो वह ऐसा नहीं कर सकता। उसे प्रधानाचार्य की आज्ञा माननी ही है।

इन लोगों के अध्ययन की अवधि पर ध्यान कीजिये। अध्यापक के प्रशिक्षण की अवधि मात्र 8-9 माह की ही है। जबकि वकील की शिक्षा 3 वर्ष चलती है। इस अवधि के बाद भी एक निश्चित अवधि तक किसी वरिष्ठ वकील के साथ काम करना होता है। इस लम्बी अवधि की वजह से इन्हें सम्मान प्राप्त है तथा 3 वर्ष एवं 1 वर्ष किसी वरिष्ठ वकील के मार्गदर्शन में कार्य करके सफलता के कुछ सूत्र सीख रहे हैं। डाक्टर के व्यवसाय की अवधि भी चार-साढ़े चार वर्ष होती है। तथा इसके बाद साल डेढ़ साल और इन्टरशिप भी करनी होती है। सम्भव है इतनी लम्बी अवधि की ट्रेनिंग के कारण ही इस धंधे को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यही स्थिति अभियन्ता के धंधे की कही जा सकती है।

इसके दूसरी ओर अध्यापक के धंधे की ट्रेनिंग माध्यमिक स्तर पर मात्र 8-9 माह की होती है। प्राथमिक स्तर पर यह अवधि अवश्य ही दो सत्र की है। इस अवधि में जिन विषयों का अभ्यास कराया जाता है, प्रशिक्षणार्थी उन विषयों की पूर्व में भी स्नातक या अधि स्नातक स्तर पर पढ़े होते हैं। हां, शिक्षणाभ्यास अवश्य करवाया जाता है पर वह भी नाम मात्र का खानापूती के रूप में ही होता है। क्योंकि कई स्थानों पर तो विद्यार्थी/प्रशिक्षणार्थी भर्ती होने के बाद परीक्षा देने के लिए ही 8-9 माह प्रशिक्षण संस्थानों में आते हैं। इस प्रकार इस अवधि

में वे शिक्षक का कार्य व्यवहार नहीं सीख पाते हैं। यही कारण है कि आज कई शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ नाजायज व्यवहार करते हैं, फिर शिकायत होती है, जाँच होती है, मुकदमें होते हैं। इन कारणों से शिक्षकों को डॉक्टर या वकील के समान समाज में सम्मान दिलाना तो दूर-बल्कि स्थिति अति खराब हुई है।

शिक्षकों के संघ शक्तिशाली नहीं है। इसके दूसरी ओर चिकित्सकों या वकीलों के संघ इतने शक्तिशाली तथा कार्यकारी है कि उन्हें कार्य करने से रोक दिया जाता है। मेडिकल काउन्सिल ऑफ इन्डिया या बार काउन्सिल ऑफ इन्डिया इसी प्रकार के संगठन हैं। बिना उनकी अनुज्ञा के कोई अपना कार्य शुरू नहीं कर सकता। पर शिक्षकों का ऐसा कोई शक्तिशाली संगठन नहीं है। इसके विपरीत शिक्षक को स्वयं ही भिन्न-भिन्न संघों से बंटे रहते हैं जैसे राजपत्रित शिक्षक संघ, प्राध्यापक संघ, भाषा अध्यापक संघ, भूगोल अध्यापक संघ, शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ, विज्ञान अध्यापक संघ, प्राथमिक/माध्यमिक अध्यापक संघ, निजी या राजकीय अध्यापक संघ, विद्यालय या महाविद्यालय अध्यापक संघ, इससे सदस्यों की संख्या कम हो जाती है। फलतः उनकी आवाज में न बल होता है तथा नहीं प्रभाव। यदि कभी ये संघ आवाज उठाते हैं तो सरकार ध्यान ही नहीं देती।

वकील तथा चिकित्सक का जिस प्रकार अपने ग्राहक से सम्पर्क या सम्बन्ध बनाते हैं, उस प्रकार शिक्षक अपने ग्राहक के रूप में विद्यार्थियों या उनके अभिभावकों से सम्बन्ध या सम्पर्क नहीं बना सकने, न उनके समान ही पारिश्रमिक ही तय करने की स्थिति में होते हैं। बहरहाल इन सबका प्रयत्न यही रहता है कि उनके प्रयत्न सफल हो तथा समाज में उनका यश-कीर्ति फैले। इस ऊपर दिये विवेचन के आलोक में यही कहा जा सकता है कि शिक्षण को भी व्यवसाय का दर्जा दिलवाने में स्वयं शिक्षकों का ही भारी योगदान हो सकता है।

(लेखक विभाग में उप निदेशक, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रोफेसर एवं प्राचार्य तथा शिविर/नया शिक्षक पत्रिका के वरिष्ठ संपादक रहे हैं)

—बी-186, आर. के. कॉलोनी, भीलवाड़ा

मो. 9928108669

जीवन दर्शन

आनन्द प्राप्ति के सरल उपाय

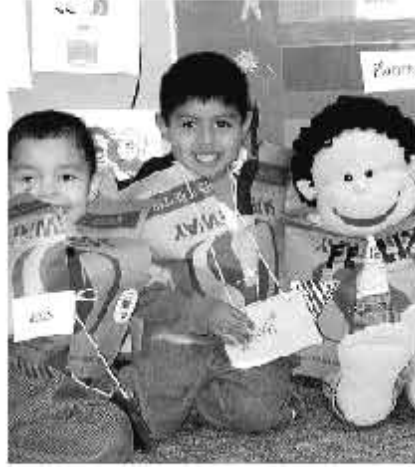
□ बिग्रेडियर करणसिंह चौहान

जीवन का प्रत्येक पल आनन्द का स्रोत है। हमारी मनोदशा को हमारे मस्तिष्क में उपलब्ध लगभग 200 रसायन प्रभावित करते हैं। चिन्ता की अवस्था में मस्तिष्क से एनडोर्फिन रसायन का प्रवाह होता है, जो कि मोरफिन की भांति है तथा पीड़ा-ह्राक के रूप में कार्य कर प्रसन्नचित रहने में हमारी सहायता करता है। चिन्ता एक आदत की तरह है, जिसे हमने दूसरों के मानदण्डों से अपनाया है। चिन्ता के साथ न तो कोई जन्मा है न ही जन्मेगा। अपनी धारणाओं में बदलाव लाने से ही चिन्ता से मुक्ति पाई जा सकती है।

प्रसन्नता तथा आनन्द किसी भी औषधि के रूप में नहीं आते, जिसका सेवन कर सदैव प्रसन्नता की स्थिति में रहा जा सके। हालांकि वैज्ञानिकों ने एक औषधि 'प्रोनेक' बनाई है, जो प्रसन्नता लाने में सहायक होती है। लेकिन सदैव प्रसन्नचित और आनन्दित रहने के लिए हमें स्वयं ही कुछ उपायों को अपनाना उचित होगा।

आज के युग में जबकि विज्ञान, मशीनरी, संचार, विस्फोट, सामाजिक परिवर्तन, धारणाओं, भौगोलिक-आर्थिक स्थिति एवं दशा, पर्यावरण, जनसंख्या, बेरोजगारी आदि चरम सीमा पर है, रोगों के रूप आने वाले कल की परछाई हमें स्पष्ट दिखाई दे रही है। ऐसी स्थिति में हमें स्वयं ही सही दिशा का चुनाव करते हुए जीवन का ध्येय निर्धारित करना होगा। इसके लिए कुछ उपाय विचारणीय हैं-

समय परिवर्तनशील है : कर्नाड शा ने कहा था 'जीवन भर तक प्रसन्नता। इसे कोई भी व्यक्ति सहन नहीं कर सकता। यह तो इस पृथ्वी को नरक बना देगी।' सुख-दुख, चिन्ता-प्रसन्नता, रोग-स्वास्थ्य एक ही गाड़ी के दो पहियों की भांति है तथा इन्हें समान दृष्टि से देखने पर दुःख, चिन्ता एवं तनाव कभी नहीं होगा। एक बार एक रात्रि ने कुछ बुद्धिजीवियों से यह पूछा कि मुझे एक पंक्ति में यह बताओ कि किस युक्ति से मैं अपने जीवन में सुख एवं दुःख के क्षणों को समान रूप से ग्रहण कर आनन्द से



जीवन व्यतीत कर सकूँ? बुद्धिजीवियों ने गहन विचार-विमर्श के पश्चात सुझाया, 'एक आप सदैव हर स्थिति में वह विचार करें कि यह समय भी चाण्णा।'

सब तेरसा ने कहा था 'कोई भी परिस्थिति तुम्हें विचलित नहीं कर सकती, कोई भी परिस्थिति तुम्हें भयभीत नहीं कर सकती, क्योंकि वह तो क्षणमर की ही होती है।

'जीवन एक महाभारत है, जिसमें युद्ध कौशल उत्कृष्ट अति आवश्यक है अर्थात् आने वाले कल की तैयारी एक युद्ध की भांति करनी आवश्यक है यह भी बीत चाण्णा की धारणा से आशय आलम्ब व आरामदायक जीवन व्यतीत कर क्षणिक आनन्द प्राप्ति से न होकर एक ऐसे बोद्धा से है, जो कि सकारात्मक सोच, कठिन परिश्रम एवं लगातार संघर्ष से विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाता हुआ सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालें एवं सरल बनाएं किसी भी सरल वस्तु घटना को हम हमारी शिक्षा, वातावरण एवं अद्वैतविवेक से दुविधापूर्ण बनाने का प्रयास करते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रकृति ने हमें कल व आंखें प्रदान की है। जब तक हमारी दृष्टि ध्येय पर है, हम सदैव प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते जाते हैं परन्तु जैसे ही ध्येय से हमारा ध्यान हटा, कई प्रकार की

काल्पनिक चिन्ताएं हमें तुरंत घेर लेती हैं। प्रकृति के साथ सहयोग करते हुए किस सरलता से नदी का चल प्रवाहित होता है, पक्षी खुले आकाश में विचारण करते हैं, सूर्य चन्द्र उदय एवं अस्त होते हैं, वनस्पति चारों ओर सुगन्ध फैलाती है, उखी प्रकार मनुष्य को भी सरल भाव से आनन्दित होकर अपना जीवन निर्वाह करना चाहिए। प्रकृति के विकट व्यवहार करने पर निश्चित दुष्कर परिणाम प्राप्त होंगे।- जैसे मेढ काक, मेढ हैंन, बर्ड फ्लू, एड्स आदि। यह सब गम्भीर रोग एक ही दिशा की ओर संकेत करते हैं- सफल जीवन की कला-सदैव प्रकृति के अनुकूल रहना है।

लक्ष्य यानी जीवन की वास्तविकता उत्तर दिशा: गहनता से विचार के पश्चात हमें यह आभास होने लगता है कि हमारे लिए आवश्यकता क्या है? 'घड़ी या कम्पास' (कुतुबनुमा) घड़ी समय दर्शाने तथा विभिन्न कार्यकलापों से जुड़ी है, लेकिन कम्पास हमारे मूल्यों, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से जुड़ा होता है। कोई भी व्यक्ति अपनी आंखें बन्द करके उत्तर दिशा की ओर संकेत नहीं कर सकता है और जब ऐसे व्यक्तियों का समूह, उत्तर दिशा ढूंढने का प्रयत्न करें तो वे अवस्थ अलग-अलग दिशा की ओर संकेत करेंगे। वास्तविक उत्तर दिशा के भान के लिए कम्पास जरूरी है, जिसकी सुई हमेशा उत्तर दिशा की ओर संकेत करती है।

इसी प्रकार भविष्य को आनन्दमय बनाने के लिए हमें हमारे लक्ष्य अर्थात् निर्धारित दिशा का ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि जीवन की अधिकांश समस्याएं सुनिश्चित एवं सही दिशा में कार्य करने से ही उत्पन्न होती हैं। ज्यादातर व्यक्ति सुनिश्चितता इसलिए नहीं अपना सकते, क्योंकि उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता है कि क्या करना चाहिए? वैज्ञानिक रीति से विश्लेषण करने पर वास्तविक उत्तर दिशा जो कि हमारी दृष्टि (चिन्ता) से जुड़ी होती है, इसके चार बिन्दु विचारणीय हैं- 1. आपको क्या परिणाम और कब चाहिए। 2. परिणाम को प्राप्त

करने के आधारभूत नियम (ग्राउण्ड रूल) एवं दिशा-निर्देश (गाइड लाइन) क्या है। 3. संसाधन की उपलब्धता। 4. समय-समय पर स्वयं पर क्या-क्या नियंत्रण या समय सीमा होनी चाहिए। इस प्रक्रिया में अपनी कम्पास एवं घड़ी का समन्वय करना आवश्यक है। यह आवश्यक है।

एक बार दत्तात्रेय को एक युवती ने घर के बाहर कुछ समय ठहरने के लिए कहा ताकि वह उनके लिए भोजन बना सके। युवती ने बहुत बड़ी संख्या में चूड़ियां धारण की हुई थी। और वे दूसरे से टकरा कर बज रही थी। युवती ने एक-एक करके चूड़ियों को उतारना प्रारम्भ कर दिया। और जब दोनों हाथों में एक-एक चूड़ी ही रह गई तब आवाज समाप्त हो गई। दत्तात्रेय ने इससे यह सीखा कि वास्तविक दिशा का ज्ञान मनुष्य को तभी हो सकता है, जब वह शोरगुल भीड़, वाद-विवाद से परे रहें।

कम्पास के सहारे ही पायलेट वायुयान व उसके अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करते हैं, अथाह समुद्र में समुद्री जहाज का संचालन भी लक्ष्य पर कायम रहने से ही होता है। इससे एक बात ध्यान देने योग्य है कि सही दिशा ज्ञान करने के पश्चात भी हर व्यक्ति का डीविजन होता है, जिसका पता स्वयं के अनुभव व प्रयोगों से करना आवश्यक है। सेना के प्रशिक्षण में यह शिक्षा प्रदान की जाती है ताकि सैनिक दुश्मन के क्षेत्र में भी अपने डीविजन को ध्यान में रखते हुए अपने गन्तव्य पर पहुंच सके।

सदैव सीखते रहने की क्षमता : यह विश्वास रखिए कि जो भी व्यक्ति हमारे सम्पर्क में आते हैं, हमें कुछ न कुछ सिखाने को आते हैं। यहां तक कि बच्चे भी हमें बहुत कुछ सिखाने की क्षमता रखते हैं। अगर हम खुले हृदय से उनके ज्ञान का अनुसरण करें तो, वे हमारे शिक्षक बन सकते हैं। इन्हीं भावनाओं एवं आन्तरिक ज्ञान से ही एक अंग्रेज कवि ने कहा है कि 'चाइल्ड इज दी फादर ऑफ मैन' यह तभी सम्भव है, जब हम एक छात्र की प्रवृत्ति अपनाएं। सीखने में उमंग, ज्ञान, आनन्द है। इससे जीवन में अवसर ग्रहण किये जा सकते हैं।

सीखने का अर्थ है प्रगति करना और स्वयं को विकसित करना। हेलन केलर ने जीवन-पर्यन्त अपनी शारीरिक असमर्थताओं के

होते हुए भी अपने आपको सीखने की प्रवृत्ति में स्मरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा - 'जब कभी एक द्वार बन्द होता है तो प्रभु अनगिनत द्वार खोलकर हमें अवसर प्रदान करता है, लेकिन हम उस बन्द द्वार पर ही निराश बैठे प्रतीक्षा करते रहते हैं।'

आदतों के भंवर से बचाव : बार-बार एक ही तरह के कार्य करने से वह आदत में परिवर्तित हो जाता है। आदतें ही चरित्र भाग्य का निर्माण करती है और भाग्य का निर्माता हैं। इसलिए इस पर गम्भीरता से हर समय ध्यान करना चाहिए कि कोई भी रोजमर्रा का कार्य एक आदत तो नहीं बन रहा है। आदतों को छोड़ना अति कठिन है।

एक बार एक वृद्ध एक युवा के साथ जंगल में भ्रमण कर रहा था। उसने युवा को सर्वप्रथम एक उगता हुआ पौधा उखाड़ने को कहा। युवा ने उसे उखाड़ कर फेंक दिया। फिर कुछ पनपे पौधों को उखाड़ने को कहा। वह भी युवा ने उखाड़ दिया। इसके पश्चात् एक बड़ा पौधा उखाड़ने के लिए कहा, जिसे भी उसने थोड़े प्रयास में उखाड़ दिया मगर चौथा पौधा जो कि पेड़ बन गया था, वह युवा उसे नहीं उखाड़ पाया। यही दशा हमारी आदतों की होती है। आदत को जड़ से उखाड़ने का एक सरल तरीका है- उस आदत के विपरीत आदत डालने का प्रयास करना। अगर आप सदैव चिन्ताग्रस्त रहते हैं तो प्रसन्नचित रहने का प्रयास करें। एवं प्रसन्नचित, सकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों की संगत करें।

सेवा के लिए समर्पण : बिना किसी स्वार्थ एवं प्रतिफल की आशा के दूसरों की सच्चे हृदय से सेवा करने से अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है। यह सेवा निष्काम कार्य की श्रेणी में आती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था- 'प्रभु उन्हीं की सहायता करता है जो दूसरों की सहायता करते हैं।' इस संदर्भ में

जीवन का ध्येय हर वक्त यह हो- 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ' तो अवश्य सुख का अनुभव होता है। एक संत से किसी ने सदैव प्रसन्न रहने का उपाय पूछा तो उन्होंने कहा कि किसी अन्य व्यक्ति को प्रसन्न करो, आप स्वयं भी प्रसन्नचित हो जायेंगे। एक सभ्य व ज्ञानी व्यक्ति सदैव सुख देकर प्रसन्न होता है एवं

अज्ञानी व्यक्ति दुःख देकर प्रसन्न होता है।

आनन्द प्राप्ति के उपाय : निम्नांकित सात बातों के बचाव से अवश्य ही आनन्द की प्राप्ति होती है-

1. सदैव अपने ही बारे में बात करना,
2. सदैव स्वार्थी बने रहना,
3. अपने कर्तव्य का समय पर निर्वाह नहीं करना,
4. हर वाक्य में 'मैं' मेरा का प्रयोग करना,
5. हर समय अपने भौतिक सुख के बारे में सोचना,
6. हर समय यह लालसा रखना कि आपकी प्रशंसा ही की जाए,
7. लालच भरे विचारों से सदैव अपने बारे में अन्य लोगों के विचार सुनने के लिए आतुर रहना।

जिस प्रकार सामाजिक नियम हर काल के लिए बनाए जाते हैं एवं परिवर्तनशील हैं, उसी प्रकार सुख की परिभाषा तो परिवर्तनशील है मगर आनन्द की परिभाषा सदैव एक ही रहती है, क्योंकि यह तो एक आन्तरिक अनुभूति है। यह शास्त्र, पुस्तकें एवं लेख पढ़ने से नहीं बल्कि सत्त्यों को आचरण में डालने से ही मिलती है। एक कागज पर शहद लगाकर व कागज का सेवन करने से शहद की मिठास प्राप्त नहीं हो सकती, न ही गधे को गंगाजल में नहलाने से वह बुद्धिमान हो जाता है।

सही दिशा में प्रयास एवं परिश्रम से आनन्द प्राप्ति अवश्यम्भावी है। चाबी हमारे पास है व ताला भी हमने ही जकड़ रखा है उसे खोलना ही हमें ही पड़ेगा क्योंकि हर व्यक्ति आनन्द प्राप्ति का अधिकारी है। अपने आपको असमर्थ, निराश न मानकर अपनी विशाल क्षमता का भान, निष्काम कर्म, अध्ययन संगत, स्वाध्याय, प्रार्थना, पूजा-अर्चना, ध्यान सेवा से सहज ही किया जा सकता है।

इस प्रकार हम उपरोक्त बातों एवं उपायों को अपने जीवन में उतार कर कष्ट एवं मुसीबतों से दूर हो सकते हैं। कष्ट और मुसीबतों से बचना ही अन्य शब्दों में आनन्दमय होना है। दरअसल आनन्द हमारे जीवन की अनुभूति है जिसे समझ कर हम चिरसुखी हो सकते हैं।

ग्राम-श्रीसेला-306701
तहसील-बाली, जिला-पाली
फोन 02938-222013

शिक्षा के उन्नयन के लिए सेवारत अध्यापक अपने छात्रों को मूल्य शिक्षा कैसे दें? एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि शिक्षक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पारस्परिक शिक्षा दें अथवा व्यावहारिक शिक्षा दें। इस संबंध में बताना चाहूंगा कि पारम्परिक मूल्य संविदा अनुपयोगी एवं हेय हैं और न ही व्यावहारिक मूल्यों में सभी कुछ ग्राह्य है। इन दोनों में समुचित समन्वय से जो अपनी परम्परा और संस्कृति संविधान एवं जनतंत्र के अनुरूप मूल्य प्रणाली इष्ट है, उसी का अनुसरण हमें करना चाहिए जीवन मूल्यों के अन्तर्गत शैक्षिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सामाजिक और राजनैतिक मूल्य आते हैं।

अध्यापक मूल्यों की शिक्षा देने के लिए अध्यापक स्वयं एक आदर्श के रूप में अपने आप को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करें और दूसरा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा दें। विद्यालय में सेवारत अध्यापक को हर वक्त विद्यार्थियों को गलत काम करते हुए रोके चाहे वे कक्षा में हो या विद्यालय के मैदान में छात्रों की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे अध्यापकों की हर बात को आदेश समझकर मानते हैं तथा अध्यापक के आचरण का अनुसरण करते हैं। मूल्यों की सीख एवं आदर्श प्रस्तुति में घनिष्ठ सम्बन्ध। एक बार करके दिखाना सौ बार कहने के बराबर होता है। मूल्यों की शिक्षा तथा बिना आदर्श प्रस्तुत किये, उपदेशों के द्वारा नहीं सिखायी जा सकती। शिक्षक धूम्रपान या सुरापान में रत नहीं होंगे तो छात्र भी इन व्यसनों में दूर रहेंगे अध्यापकों को अपने कामों तथा व्यवहारों में एक आदर्श पुरुष होंगे तो विद्यार्थी भी उनके काम करने और व्यवहारों का अनुसरण करेंगे। अध्यापकों को समय पर कक्षा में आना, ईमानदारी से पढ़ाना और निष्पक्ष छात्रों को अंक देना इत्यादि कार्यों से विद्यार्थियों को अनुशासन और ईमानदारी की शिक्षा मिलेगी। अध्यापक कमजोर विद्यार्थियों को बिना द्यूशन पढ़ाने में सहायता करेंगे तो छात्रों में परोपकार का गुण पनपेगा। अध्यापकों को अपने शिक्षण का मूल्यांकन करने के लिए कभी छात्रों से भी मत लेना चाहिए।

मूल्य आधारित शिक्षा के लिए सेवारत अध्यापक पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का उपयोग कर सकता है। साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत वाद-विवाद

नैतिक शिक्षा

सेवारत अध्यापकों द्वारा नैतिक शिक्षा

□ सत्यनारायण पंवार

प्रतियोगी भाषण, एकांकी, अन्त्याक्षरी इत्यादि के लिए अपने सदन के छात्रों को प्रशिक्षण के दौरान जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है। सत महापुरुष और महात्माओं के पर्वोत्सव पर उन लोगों के गुणों के बारे में बताया जाय। राष्ट्रीय एवं सामाजिक पर्वों के मनाने से मानवीय मूल्य की शिक्षा मिलेगी। इतना ही नहीं इन पर्वों के द्वारा अनुशासन, चरित्र निर्माण समूहभावना, श्रम की गरिमा, कौमी एकता इत्यादि गुण विकसित होंगे। शारीरिक खेलकूद प्रतियोगिता के द्वारा प्रतिस्पर्द्धा की भावना, परोपकार, त्याग आदि नैतिक मूल्यों का विकास होगा। अध्यापकों को शैक्षिक भ्रमण के द्वारा भी छात्रों को नैतिक शिक्षा दे सकता है। शैक्षिक भ्रमण में ऐतिहासिक स्मारक, संग्रहालय, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, कारखाने, पुस्तकालय, बैंक, पोस्टऑफिस, टेलीफोन एक्सचेंज दिखाकर उन्हें जीवन के नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। एन.सी.सी., स्काउट केम्प, समाज सेवा केम्प में छात्रों को एक साथ रहने का अवसर मिलता है और अध्यापकों को इस अवसर पर एक दूसरे को सहायता देना, मिलजुल कर काम करना तथा अनुशासन में रहने के गुणों को सिखाना चाहिए। सभी अध्यापकों को अपने विषय की पुस्तकों के अलावा मूल्य शिक्षा देने वाली पुस्तकों के नाम याद रखने चाहिए और अपने छात्रों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

इतना ही नहीं अध्यापकों को केवल स्कूल में ही आदर्श अध्यापक बनकर रहने से काम नहीं चलता उसे स्कूल के बाहर भी एक अच्छा और आदर्श नागरिक बनकर रहना चाहिए जिससे मौहल्ले और आसपास के छात्र उन्हें अपना आदर्श मानें। अपने घर में और मौहल्ले में ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे छात्रों को जीवन मूल्यों की शिक्षा मिले। अध्यापक अपने सद्गुणों से मौहल्ले में जाना जाए। सच्चा गुरु अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं बरतता। वह स्वाध्याय, नियमितता निस्वार्थ भाव निष्पक्षता, विद्यार्थियों के प्रति

आत्मीय लगाव, कर्तव्यनिष्ठता समाज सेवा, आदि से तिरोहित होता है और इन गुणों का प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। गुरु ही सच्चा मार्ग बताता है जिस पर छात्र चलकर जीवन की हर समस्या सुलझा सकता है।

नैतिक शिक्षण में कहानी की उपादेयता सर्वविदित है। मानव जीवन में छोटी बड़ी कोई न कोई घटना घटती रहती हैं। कुछ घटनायें, क्षणिक प्रभाव उत्पन्न कर विलीन हो जाती हैं, तो कुछ किंचित काल के लिए मानव मन को प्रभावित करती हुई जीवन की नवीन अध्यायों में खो जाती है, परन्तु कुछ ऐसी भी होती है, जिनका प्रभाव स्मृति के रूप में आजीवन बना रहता है। इन घटनाओं में ऐसी भी होती हैं जो दूसरों के जीवन में उपस्थित होती हैं, और हम दृष्टा बनकर उनका अवलोकन करते हैं। कई घटनाओं का सीधा सम्बन्ध हमारे जीवन के साथ होता है, उन्हें हम अपने अनुभव की निधि में अच्छी तरह संजोकर रखते हैं और समय-समय पर उनकी अभिव्यक्ति दूसरों के सामने कर अपने को हल्का बनाते हैं, यह अभिव्यक्ति ही कहानी की जन्मदात्री माता हैं। मनुष्य जो देखता है, बुनता है और अपने में घटित होते अनुभव करता है, उसका सुपरिणाम कुपरिणाम बतलाने के लिए वह समाज को पात्र बनाता है। पात्रों के वर्गीकरण में घटना का सम्बन्ध स्थापित कर निर्णय करता है कि किस स्तर के जीवन के कौनसी घटना का उपयोगात्मक सम्बन्ध हो सकता है। कहानी कहने की प्रवृत्ति इसी भावना से उत्पन्न होती है।

सत्य घटनाओं से जब पूरा प्रभाव लक्षित नहीं प्रतीत होता, तब वह उसमें अपनी कल्पना और भावना का पुट मिलाता है और इस प्रकार उसे सरस बनाकर दूसरों को सुनाता है। जितनी ही कल्पना व भावना के आधार पर वह घटना, कथा का रूप धारण कर सकेगी, उतनी ही अधिक रोचक, आकर्षक व स्थायी प्रभाव दूसरों के हृदय पर डालने में समर्थ हो सकेगी। अस्तु कहानी को जानना अथवा घटना का परिज्ञान कर लेना मात्र ही कहानी की कला को सफलता नहीं

देता, कहानी की शैली पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अक्सर कहानी अपने को एक घटना तक सीमित रखें या घटना की आयाम पर केन्द्रित करें कहानी के द्वारा कहा गया संदेश स्पष्ट हो। प्रभाव में कहानी घाव गम्भीर का प्रकृति की होनी चाहिए। कहानी या लघुकथाएं नीति कथाओं की तरह होनी चाहिए जिसके द्वारा विद्यार्थियों को नैतिक जीवन मूल्यों की शिक्षा मिलें।

ये कहानियां छोटे बालकों के लिए विशेष रूप से मनगढ़न्त या कल्पना प्रधान होती हैं। इनमें हल्की घटनाओं की पुट रहती है। उदाहरण के लिए, कहानी गढ़ी जाती है कि गड़रिये का बच्चा प्रतिदिन जंगल में भेड़िया आया कहकर झूठ बोलता था और लोगों को भयभीत करता था। अंत में लोगों ने उसे झूठा समझ लिया। एक दिन सचमुच भेड़िया आ गया— लड़का चिल्लाया, परन्तु लोग नहीं आये। वह दो भेड़ें उठाकर ले गया। ऐसी मनगढ़न्त कहानी रचकर हम छोटे बालकों को शिक्षा देते हैं कि झूठ का परिणाम बहुत बुरा होता है, ऐसी ही कितनी कहानियां, जिनके माध्यम से लोभ का परिणाम, बेइमानी का परिणाम, बिना विचारे काम करने का परिणाम, अहंकार का परिणाम आदि शिक्षाएं हम दे सकते हैं। यह स्तर दस वर्ष के बालकों को प्रभावित करती हैं, परन्तु उसके बाद इन्हीं विषयों को वृहदकथाओं, लघु कथाओं, लघु उपन्यासों व नाटकों में ढालकर प्रस्तुत करते हैं, लिखते हैं अथवा कहते हैं, तब किशोरों व युवकों के लिए कथाएं रोचक हो जाती हैं। मानव, शिशु जीवन की नानी, दादी, परियाँ और उपर्युक्त ढंग की सीमा को पार कर कथा अंतर आ जाता है। उदाहरण के लिए सज्जनता का दंड, बड़े घर की बेटी, पंचपरमेश्वर, नमक का दरोगा जैसी कहानियों को ग्रहण कर सकते हैं।

इसके आगे की आयु में कहानियाँ भावात्मक एवं अन्तर्द्वन्द्वत्मक बनकर मन में हलचल उत्पन्न करती हैं। वे प्रेम कर्तव्य, देशभक्ति, विश्व सेवा आदि कितने ही विषयों को अपनाती रही, मानव जीवन को शिक्षा देती हैं। जयशंकर प्रसाद, भगवती चरण वर्मा, गुलेरी, विनोद शंकर व्यास, सुदर्शन आदि लेखकों की कहानियाँ ऐसी ही द्वन्द्वत्मक परिस्थितियों का प्रस्तुतीकरण करती हैं।

68, गोलफ कोर्स स्कीम, जोधपुर-342011

फोन 0291- 2670659

संस्मरण-चिन्तन

चार दशक पुराना पन्ना

□ डॉ. राधाकिशन सोनी

दी पावली की साफ-सफाई के बहाने जब मैं अपने घर में निजी पुस्तकालय में पुस्तकों को व्यवस्थित कर रहा था तब भूरे रंग का एक फटा हुआ पुराना कागज एक पुस्तक में मिला। उस पर नीली स्याही में शायद होल्डर से कुछ लिखा हुआ था। लेखन अस्पष्ट एवं धुंधला था। किन्तु दो-तीन बार पढ़ने पर स्मृति ताजा हो गई।

बात उस समय की है जब मैं चूरू जिले के एक ग्राम 'रूपलीसर' में कक्षा एक या दो में पढ़ता था। यह ग्राम उस समय भी पंचायत मुख्यालय था तथा इस ग्राम में प्राथमिक विद्यालय था। उच्च प्राथमिक शिक्षा के लिए तीन किमी दूर दुलरासर पैदल जाना पड़ता था। उस समय मैं अपने दादाजी-दादीजी के पास उस ग्राम में रहता था। मेरे दादाजी स्वर्णकारी का काम करने के साथ-साथ कृषि कार्य भी करते थे। स्कूल जाने की नियमितता के चलते मेरे खेत जाने पर रोक थी क्योंकि उस समय विद्यालय नहीं जाने पर प्रतिदिन 25 पैसे जुर्माना लगता था। लेकिन हाँ, अवकाश के दिन दादाजी मुझे स्वयं अपने साथ ले जाते थे। खेत तीन कोस दूर था। जब हम खेत जाते तो मेरे दादाजी मार्ग में मुझे रामायण, महाभारत की कहानियाँ, नैतिक शिक्षा की बातें, लोक देवताओं के कार्य, देवी-देवताओं के प्रसंग, जीवन के अनुभव आदि सुनाते थे। इसके अलावा माह में दो-तीन बार सरदारशहर या रतनगढ़ जाते थे। प्रायः रविवार को मैं भी उनके साथ जाता। उस समय रेलगाड़ी के अलावा कोई साधन नहीं था। अतः हमें रेलगाड़ी पकड़ने के लिए दुलरासर या खिलेरिया पैदल जाना पड़ता था। दोनों ही ग्रामों की दूरी पगडण्डी मार्ग से तीन किमी थी। यह दूरी तय करते समय भी शिक्षा-दीक्षा का दौर जारी रहता।

यह पन्ना देखकर मुझे वह समय याद आ गया। मैं बचपन से ही लिखने का आदी हूँ। आज की तरह उस समय भी जरूरी बातें, अपनी लेखनी में समेट लेता था। यह कागज मेरी उसी आदत का हिस्सा है। मेरे दादाजी खेत एवं रेलवे स्टेशन मार्ग में जो बातें बताते थे, मैंने उस समय

नोट की थी, यह पन्ना उन्ही पन्नों में से एक है। हालाँकि इसमें अनेक अशुद्धियाँ हैं। कहीं-कहीं तो अर्थ भी स्पष्ट नहीं हो रहा है। दूसरे, मेरे दादाजी, मारवाड़ी(मुड़िया) लिपि में लिखते थे, अतः उस लिपि में भी कहीं-कहीं सुधार किया गया है। किन्तु विगत 40-42 वर्षों में मैंने गुरुजनों के आशीर्वाद से जो कुछ सीखा-समझा, के आधार पर इसमें सुधार कर आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

- परमेश्वर के नाम का स्मरण कर किसी भी कार्य का शुभारम्भ करने से उस कार्य की सिद्ध होती है।
- विद्या पुरुष का अलंकार है, यह गुप्त धन है, विद्या से यश-कीर्ति होती है, विद्यारहित मनुष्य पशु समान है, इसलिए विद्यार्जन जरूरी है।
- व्यक्ति को सदैव कर्म करते रहना चाहिए। कर्म करने से विद्या, लक्ष्मी, यश और मुक्ति की प्राप्ति होती है।
- माता-पिता, गुरु, बड़े भाई, मालिक और आयु एवं पद में जो बड़े हैं, आचरण के आधार पर उनकी सेवा करनी चाहिए। सेवा-धर्म प्राप्ति का सरल मार्ग है।
- बड़पन, विनय, परोपकार, सुपात्र को दान, प्रभुभक्ति, धर्मकार्य में प्रीति, ये ऐसे गुण हैं जो व्यक्ति को महान् बना देते हैं।
- गुरुवचन, संतोष, अच्छी शिक्षा, सृजनता, परोपकार एवं नियम को हृदय में धारण करने से मनुष्य को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।
- सर्वगुण सम्पन्न पण्डित, संतोष करने वाला धनी, चित्त-चंचलरहित मनुष्य सुखी, धन-यौवन-आयु पर विश्वास नहीं करने वाला सावधान, दूसरों को दुःख नहीं देने वाला बुद्धिमान, परोपकार करने वाला महान् सीख की बातें नहीं सुनने वाला गूंगा, कही बात को नहीं समझने वाला वह पशु तथा क्रोध-लोभ से ग्रसित अन्धा तथा ऊँची अपेक्षा-आशा रखने वाला सदैव दरिद्री कहलाता है।
- विश्वासघात करके दुःख के समय मित्र को

अकेला नहीं छोड़ना चाहिए।

• दूसरे को दिया हुआ दुःख शांतचित्त से सहन करना चाहिए किन्तु बदले में उसे दुःख न दें।
ज्ञान बिना मुक्ति एवं दया बिना धर्म नहीं।
धर्म जैसा मित्र और पाप जैसा शत्रु नहीं।
समर्थवान के लिए कोई भी भार नहीं।
मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं।
क्रोध जैसा विष व कामा जैसा अमृत नहीं।
लाभ जैसा दुःख, संतोष जैसा सुख नहीं।
अपने मतलब बिना कार्य उद्यम करे नहीं।
लज्जा बिना संग्राम में कोई चूड़े नहीं।
प्रेम की प्रीति बिना रसपीत जाने नहीं।
शील बिना सत्य के साथ गले मिले नहीं।
नेम धरे बिना निश्चय पद मिले नहीं।
देह धरे बिना परमार्थ साथ मिले नहीं।
ध्यान बिना चंचल मन की गति धर्मे नहीं।
कर्म बिना पुण्य, अपव्यस समान मरण नहीं।

मेरे दादाजी किसी विद्यालय में नहीं गए।
तब विद्यालय थे ही कहाँ? वे बताते थे कि पीने का पानी लेने के लिए जब वे कुँए पर जाते तो उन्हें पानी के लिए इन्तजार करना पड़ता। तब कोयले से बटके पर अक्षरों की आकृतियाँ उकेरते तथा खेलने एवं बंगल (शीज) के लिए जाते तब रेत के धोरों पर शब्द-वाक्य, गिनती आदि लिखते। इसी तरह पढ़ना-लिखना सीख गए। बाद में उन्होंने रामायण, महाभारत, गीता, शिव पुराण, चाणक्य नीति, पंचतंत्र की कहानियाँ आदि सद्गुणों का अध्ययन किया।

कहने का तात्पर्य है कि उस समय आज की तरह न स्कूल थे, न घर पर पानी के नल, न बिजली और न अन्य सुविधाएँ। किन्तु फिर भी घर की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए लोग मेहनत और लगन से किस तरह शिक्षा ग्रहण कर लेते थे। ज्ञान ही नहीं, आज एक विद्यार्थी पूरे साल में मुश्किल से आठ-दस पुस्तकें ठीक से नहीं पढ़ता है, उस समय के लोग पुस्तकों के अध्ययन में कितनी रुचि लेते थे, इसका अंदाजा हम हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन् से लगा सकते हैं। उन्होंने अपने जीवन में जो पुस्तकें पढ़ी, उनका मासिक औसत 80 पुस्तकें था।

उस समय नैतिक शिक्षा ही महत्वपूर्ण थी जिसे ग्रहण कर व्यक्ति अपने जीवन में सुखी रहता था। कल्पना कीजिए उस समय कि जब जीवन सारों सुखों से परिपूर्ण था और एक आज का समय जब समस्त प्रकार की सुविधाएँ होते हुए

भी हम अपेक्षित शिक्षा से वंचित हैं। मानव मूल्यों का हास हो रहा है। स्वस्थ-प्रसन्न रहने के लिए लाखों उपाय करने के बाद भी आज मनुष्य अभावग्रस्त अनुभव कर रहा है।

शिक्षा में संयुक्त परिवार का बड़ा महत्व है। संयुक्त परिवार में रहकर बालक बड़ों के अनुभव एवं उनके मार्गदर्शन में सहज ही बहुत-कुछ सीख लेता है। जहाँ दादी-नानी से कहानियाँ सुनकर शिक्षा ग्रहण करता है, वहीं परिवार के बच्चों के साथ उठने-बैठने, खाने-पीने, खेलने आदि से उसका सर्वांगीण विकास होता है। बच्चा जब दादा की अंगुली पकड़कर सामाजिक कार्यक्रमों में जाता है तो उसका न केवल समाज से जुड़ाव होता है अपितु वह लोगों के आचार-विचार से अपने चाल-चलन को सुधारता है। संयुक्त परिवार के अभाव में आज बालक इन सभी लाभों से वंचित होता जा रहा है।

समय के साथ बदलाव आना स्वाभाविक है। आना भी चाहिए किन्तु अतीत को भूला देना भी उचित नहीं है। आज विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी का समय है किन्तु हमारी पुरानी शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग नैतिक शिक्षा का अध्ययन सामग्री एवं सह शैक्षिक गतिविधियों में समावेश करना नितान्त आवश्यक है।

प्राचीन काल में बच्चा घर-परिवार में जो सीखता था वह तो बाल केन्द्रित ही था लेकिन हमारी शिक्षा पद्धति अप्रत्यापक केन्द्रित थी जिसे बाल मनोविज्ञान के विविध आयामों को दृष्टिगत रखकर बाल केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित बनाया गया है।

बच्चे में असीम क्षमताएँ छिपी होती हैं। बच्चे को प्राथमिक स्तर पर ही उसके अद्भुत गुणों से परिचित करवा दें तो उसका आगे बढ़ने का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त होने लगेगा।

बच्चा सीखना चाहता है पर प्रश्न उठता है कि उसे सिखाएँ कैसे? सीखना एक सतत प्रक्रिया है। सीखने का कार्य केवल शालाओं में ही नहीं होता। पहले भी बच्चा आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता था और आज भी प्रभावी तरीके से सीखने का आधार वही है। अतः बच्चे को संदर्भ से जोड़ा जाना जरूरी है।

(लेखक राज्यस्तरीय प्रमुख शिक्षक हैं।)
राजकीय भाषाई उच्च माध्यमिक विद्यालय
गुवाईवर बड़ा (श्री हरीनाथ) बिकानेर
मो. 9414416259

खुद जिएं सबकी जीना सिखाएं



खुद जिएं सबकी जीना सिखाएं,
अपनी खुशियाँ चली बाँटें।
तोड़ लीं चली सब मिलते,
आओ जुगल पकड़ लीं सब।
इसके हृदय में दीपक जलाएं,
अपनी खुशियाँ.....।

सबके होंठों पे कलियाँ बिखरी हों,
सबकी पंक्तों में खुशियाँ भरी हों।
मिल कर प्यास का मीठा माँ,
अपनी खुशियाँ.....।

कितनी खुशियाँ हैं दुनियाँ में देखो,
कीर्ती हथों को इसके समेटो।
आओ खुशियों की फसलें उगाएँ,
अपनी खुशियाँ.....।

हैं बड़ी खुदखुश कहानी,
जिन्होंने कहते हैं हम शिखरआली।
इसके हृदय पर की मीठी बसाएँ,
अपनी खुशियाँ.....।

नवाचार

शिक्षा में एक प्रयोग ऐसा भी

□ डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली

उच्च शिक्षण संस्थाओं, विशेषकर महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के बारे में यह कहा जाता है कि वे अध्ययन-अधिगम के बारे में गंभीर नहीं होते। कक्षाएं अटेण्ड नहीं करना, उचित गम्भीरता न रखना और यहां तक कि अनुशासनहीनता व अशोभनीय आचरण करते किंचित भी अफसोस नहीं करना जैसे उनकी फितरत बन जाती है। मगर मनोवैज्ञानिक ढंग से उनकी ऐसी क्रियाओं पर लगाम लगाई जा सकती है। ऐसा ही एक अनुभूत प्रयोग शिविरा के नामचीन लेखक शिक्षाविद् डॉ. बद्री प्रसाद जी पंचोली ने हमें भिजवाया है। संस्था प्रधानों एवं शिक्षकों के हित में यह अनुभव यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

-वरिष्ठ संपादक

म हाविद्यालयों में विद्यार्थी पुस्तकें लेकर पढ़ने नहीं आते। पुस्तकें खरीदते ही नहीं। बाजारू पासबुक पढ़ते हैं। कुछ लोग पतली सी कॉपी अवश्य लेकर आते हैं। उसमें अन्तिम पृष्ठ पर कोई सूक्ति सुनी हो तो उसे लिख लेते हैं प्यार का इज़हार करने वाले गीत की पंक्तियां लिख लेते हैं और किसी को गुस्से में गाली देना हो तो वह भी लिख लेते हैं।

कुछ छात्रों में रचनात्मक कौशल होता है। वे अपनी रचना भी अन्तिम पृष्ठ पर ही लिख लेते हैं। अपनी सोच, आत्म साक्षात्कार और आत्म मंथन कराने के लिए एक दिन अपने मित्र प्राध्यापकों से सलाह करके ग्यारह बजे कालांश में सभी कमरों में जाकर छात्रों की कॉपियों का अन्तिम पन्ना फाड़ लिया। दूसरे दिन उन पत्रों की सभा भवन में प्रदर्शनी लगा दी।

छात्रों ने पहले तो प्रदर्शनी देखने से आँखें चुराना चाहा। समझाने पर उनमें प्रदर्शनी देखने की उत्सुकता पैदा हुई। ज्यादा से ज्यादा छात्रों ने प्रदर्शनी देखी। किसी भी पत्र पर छात्र का नाम नहीं लिखवाया गया था। इसलिए यह बताना तो कठिन था किसने क्या लिखा, पर प्रत्येक छात्र ने मन ही मन समझ लिया कि ऐसा प्रयोग करने का कारण क्या था।

कुछ पत्र पर बहुत ही गन्दी और भद्दी भाषा में इबारत लिखी हुई थी। चेहरे पढ़ने से अवश्य लगता था कि नाम भले ही घोषित न किए गए हो, पर वे समझ गए थे कि उन्होंने कैसे अपनी लेखनी का दुरुपयोग किया था। अपवाद रूप में ही सही एक छात्र ने ओम् जय जगदीश हरे! आरती भी लिख रखी थी। वह मन ही मन उसे गाता भी होगा। एक छात्र ने सुभाषचन्द्र वसु का प्रिय गीत भी लिख रखा था-

कदम कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाये जा।
यह जिन्दगी है कौम की, तू कौम पर लुटाए जा।।

कुछ छात्र अपने प्रेरक का मन ही मन कैसे चुनाव कर लेते हैं- इसका पता चला। एक छात्र ने गायत्री मंत्र भी लिख रखा था; पर वह सही लिखा हुआ नहीं था। यह देख कर हमने प्रदर्शनी द्वार पर सही मंत्र और उसका अर्थ मोटे अक्षरों में लिख दिया था। प्रायः सभी छात्रों ने मंत्र और अर्थ को अवश्य पढ़ा-यह हमने प्रत्यक्षतः देखा।

छात्रों ने अपनी रचनाएं भी लिखी थीं। उनका रचना क्षमता को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रों का रचना शिविर लगाया गया। रचना शिविर की सूचना सूचना-पट्ट पर लगाने की पहल प्राचार्य जी को दिखाई गई तो उन्होंने पूछा-पन्द्रह दिन के रचना शिविर का शुल्क कितना रखा। मैंने उत्तर दिया-तीन रुपये। प्राचार्य जी ने कहा- पांच रुपये रखो।

पांच रुपये अधिक राशि नहीं थी। स्वीकार कर ली। शुल्क केवल इसलिए रखा गया था कि छात्र प्रतिबद्धता अनुभव करें। प्राचार्य जी ने भावना को सराहा। कॉलेज के अध्ययन-काल की समाप्ति के उपरान्त शिविर का समय निकाल कर दिया यह कहते हुए कि वे शिविर में प्रथम शिविरार्थी के रूप में भाग लेंगे।

सारी व्यस्तताओं को ताक में रखकर उन्होंने प्रतिदिन शिविर में भाग लिया। इसका एक लाभ हुआ। सारे छात्र दौड़-दौड़ कर समय पर शिविर में आ जाते थे। प्राचार्य के समक्ष रुचि और क्षमता का प्रदर्शन करने की होड़ सी लग गई। प्राचार्य स्वयं अभ्यास कर के उनको प्रोत्साहित करते थे। जो कथनी से नहीं सिखाया जा सकता था वह अभ्यास क्रम के माध्यम से

आसानी से सिखाया जा सकता है- इस तथ्य को प्रत्यक्षतः देखा गया।

मैं पढ़ रहा था तब मेरे गुरु डॉ. रामानन्द तिवारी 'भारती-नंदन' ने कहा था-'शिक्षा आदेश से नहीं, आदर्श से चलती है।' अभ्यास क्रम प्राचार्य करे-यह आदर्श ही तो था। शिविर का समापन समारोह के रूप में मनाया गया। उसमें भी प्राचार्य जी शिविरार्थी के रूप में भाग ले रहे थे। छात्रों के लिए यह आनन्द का विषय था। कुछ संभागी रचनाकारों ने शिविरावधि में तैयार रचनाएं भी प्रस्तुत कीं।

शिविर में उद्यान ते नावयानम्', वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे, स्वस्तिपन्थामनुचरेम' जैसी वैदिक सूक्तियों पर सबको सोचने और बोलने का अवसर दिया गया था। इससे छात्रों को सनातन भारतीय चिन्तन धारा को समझने का अवसर मिला।

प्राचार्य जी का कहना था कि शिविर में कुछ छात्र ऐसे भी थे जो महाविद्यालय में समस्या बने हुये थे। उनमें आश्चर्यजनक परिवर्तन आया। शिविरार्थीनी छात्राओं के अभिभावकों ने सूचना दी कि उनकी पुत्रियों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन आया है और वे गृहकार्य में रुचि दिखाने लगी हैं।

रचना शिविर तो बाद में भी लगाए गए; पर इस प्रथम शिविर की सफलता मेरे लिए भी अद्भुत और प्रेरणाप्रद रही। विशेषतया संभागियों से निकटता बढ़ी। उनके जीवन में झांकने का अवसर मिला। इससे मुझे भी बहुत कुछ सीखने को मिला और यह विश्वास दृढ़ हो गया कि अच्छा शिक्षक वही हो सकता है जो अच्छा विद्यार्थी भी हो।

-बी-6, दातानगर, रेम्बल रोड, अजमेर-01

स्वास्थ्य

सुखी व दीर्घ जीवन के उपाय

□ अभय कुमार जैन

आधुनिक समय में हृदय रोग, मधुमेह, कैंसर तथा विविध कष्ट साध्य, असाध्य प्राण संघातक मनोकायिक व्याधियों से पीड़ित रोगियों की संख्या तीव्र गति से बढ़ी है। इसके अलावा उच्च रक्तचाप, सर्वाइकल, घुटने के दर्द, मोतियाबिन्द, बवासीर, मोटापा आदि ऐसे अनगिनत रोग हैं, जिनकी संख्या में भारी इजाफा हुआ है। महिलाओं के सीजियरियन प्रसव हो रहे हैं। अधिकांश महिलाओं के बच्चेदानी का ऑपरेशन हो रहा है। आज से कुछ वर्षों पूर्व तक इस प्रकार के रोग बहुत कम संख्या में हुआ करते थे। इस प्रकार के रोगों की विकरालता देखकर इस युग को व्याधि युग भी कह दिया जाय तो अनुपयुक्त नहीं होगा। रोगों के बढ़ने के कई कारण हैं। हमारा खान-पान, रहन-सहन, जीवन के तौर-तरीकों में भारी परिवर्तन आया है। हमारा जीवन सुविधा भोगी हो गया है।

आज भी पुराने लोग स्वस्थ, मस्त व दीर्घ जीवी हैं। उनके पीछे कई कारण हैं। आज भी हम जीवन जीने के तौर तरीके, खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार में बदलाव लायें तो हम भी कुछ अर्थों में स्वस्थ, मस्त, प्रसन्न व तनाव रहित रह सकते हैं।

अमेरिका के एक डॉक्टर ने सौ दीर्घजीवी मनुष्यों के अनुभवों को एकत्रित करके यह निष्कर्ष निकाला है कि:-

- चिन्ताओं को अपने पास न फटकने दें। निरन्तर प्रसन्न रहें।
- भोजन को खूब चबा-चबा कर करें। दांतों का काम पेट को ना करना पड़े।
- हरी सब्जियां व फलों का सेवन करें।
- चर्बीयुक्त पदार्थों से दूर रहें।

अमेरिका के डॉ. शरमन 68 वर्ष की आयु में भी नौजवानों की तरह स्फूर्ति, उमंग व उल्लास के साथ में काम करते देखे गये हैं। वे अनुभव के आधार पर कहते हैं कि फल, दूध और छिलके सहित अन्न के सेवन से मनुष्य अपनी आयु को 10 वर्ष बढ़ा सकता है। वे मिल के पीसे आटे और साफ किये चावल को

इस्तेमाल न करने पर जोर देते थे।

अमेरिका के दीर्घजीवी केनबोर्न के शब्दों में “मैंने प्रति सप्ताह 75 कि.मी. चलने का नियम बनाया हुआ है। इसी कारण 72 वर्ष की अवस्था में भी नौजवान जैसा रक्त प्रवाहित होता दिखता है। मेरा अनुभव है कि पैदल चलने से हाजमा बढ़ता है। शरीर के विकार दूर होते हैं। फेफड़े अपना काम अच्छी तरह से करने लगते हैं। यह एक प्राकृतिक व्यायाम है। इसके साथ मद्यपान, धूम्रपान का सम्पूर्ण त्याग तथा चाय भी अल्प मात्रा में ही लेना चाहिए।”

विक्टर डेन स्वास्थ्य को गिराने वाले अन्य तत्वों से बचने का उपाय बताते हुए लिखते हैं “काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि मनोविकारों से दूर रहना चाहिए। इनसे ग्रस्त रहने से शरीर में विष उत्पन्न होता है और परिणाम स्वरूप उम्र कम होती है।

बेलगांव के 80 वर्ष के श्री कोकर्ण का मत है कि खेतों की स्वच्छ हवा सेवन करो, दूध और हरी सब्जियों का प्रयोग भरपूर, रात को जल्दी सोओ और प्रातःकाल जल्दी उठो। यह उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की कुंजी है। आप इसे अपनाकर तो देखिए।

126 वर्ष के एक ईरानी सज्जन की राय है कि चिन्ता रहित रहना ही दीर्घ स्वस्थ जीवन का रहस्य है। काम न करने का मतलब है, शरीर को जंग लगाना। श्रम को पूजा समझकर करना चाहिए। इसीलिये तो कहा जाता है कि “श्रम ही आराधना है, कार्य ही पूजा है।”

अपनी दिनचर्या को नियमित रखना चाहिए। अतः कहा जा सकता है- श्रमशीलता, स्वच्छता, सुव्यवस्था, नियमितता, संतुलित जीवन, सात्विक आहार, पर्याप्त मात्रा में नींद तथा प्राकृतिक तौर तरीके से जीवनयापन ही दीर्घ जीवन का रहस्य है।

आगे लिखी बातें अपनाकर हम तनाव रहित रहकर स्वस्थ व दीर्घ जीवन व्यतीत कर सकते हैं:-

- तनाव रहित रहें। अपने तनाव को

पहचानें।

- महत्वाकांक्षी योजनाएं न बनाएं। अनावश्यक संकल्पों को छोड़ दें।
- नियमित व व्यवस्थित दिनचर्या अपनाएं। आवश्यक व जरूरी कामों की सूची बनाएं।
- जल्दी सोयें व जल्दी उठें।
- एक साथ सभी कार्य हाथ में न लें। एक-एक कार्य को प्राथमिकता के आधार पर करते जाएं।
- काम टालू प्रवृत्ति से बचें। आज का काम आज करें।
- अनावश्यक ऊर्जा का क्षय नहीं करें। फिजूल की बातें, अनावश्यक विवाद व बहस से दूर रहने का प्रयास करें। दूसरों की आलोचना न करें।
- अच्छे मित्र बनायें। फिजूलखर्ची व दिखावे में विश्वास न करें। गलत खान-पान से दूर रहें।
- धैर्य व संतोष रखें। दूसरों की सहायता करें। पीड़ित व परेशान व्यक्ति को सहानुभूति की आवश्यकता रहती है। अतः इसमें कंजूसी न बरतें।
- काम के बीच में थकान अनुभव होने पर काम बंद कर दें। कुछ देर टहलें या लेट जाएं। कुछ समय आंखें बंद कर लें व आराम करें।
- पारिवारिक वातावरण बहुत ही शांत रखें। सभी एक साथ प्रार्थना करें। चर्चा करें, तथा संभव हो तो भोजन भी एक साथ करें।
- साधु संतों का समागम करें। अच्छा साहित्य पढ़ें। अच्छे गीत, स्तवन पढ़ें व संकलन करें। इससे बहुत मानसिक शांति मिलती है।

जीवन सम्बन्धी खोज के विशेषज्ञ डॉ. कार्लसन का कथन है “अल्प मृत्यु और बुढ़ापे को रोकने के लिए सौ दवाओं की एक दवा है, सुविधाजनक जीवन। जिस कार्य से शरीर और

मन पर अत्यधिक दबाव पड़े, उसे छोड़ देना चाहिए। अपनी शक्ति व सामर्थ्य क्षमता तथा उम्र के अनुसार अपने दैनिक कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते रहना चाहिए। इसी सूत्र को पकड़कर मैंने लम्बी उम्र पायी है, और अनेक लोगों को जीवन के कष्टों और रोगों से मुक्ति दिलायी है।

स्वास्थ्य आंकड़ा विशेषज्ञ लुई डबर्लिंग ने अपने आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकाला है कि चिता प्रधान बाल्य जीवन और दुखी संतप्त जीवन कभी भी दीर्घाव, सुंदर, स्वस्थ सुखी जीवन नहीं बन सकता। दीर्घ जीवन का मूलधार चिता और दुखद अनुभूतियों से मुक्त बाल्य जीवन और उन्मुक्त स्वच्छंद भार रहित जीवन।

इसी संदर्भ में डॉ. बी. वैक्टराव (हैदराबाद) ने स्वास्थ्य रक्षा के लिए जो बातें बताई हैं, वह निम्न हैं:-

- प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल प्रार्थना करें। प्रार्थना आत्मा की खुपक है।
- प्रति सप्ताह एक दिन पूर्ण उपवास करें। इससे आत्म शुद्धि होगी।
- दिन में केवल दो बार ही भोजन करें।
- कहा है, 'जल ही जीवन है।' अतः प्रतिदिन 2.5 से 3 लीटर पानी पीएं।
- प्रतिदिन दो बार शौचालय जाएं।
- सप्ताह में एक दिन सम्पूर्ण शरीर पर मालिश व धूप स्नान अवश्य करें। इससे चुस्ती का संचार होगा।
- सूर्योदय के बाद व सूर्यास्त से पूर्व घर में शुद्धता से बनाया गया भोजन ग्रहण करें। होटल-बारों के खाने से बचे।
- साप्ताहिक मनोरंजन करें।
- स्वाध्याय कर अपना ज्ञानवर्द्धन करें। वह हमारे वेदों का संदेश भी है।
- सदैव प्रसन्न रहे। सकारात्मक दृष्टिकोण प्रसन्नता का मूल है। अतः सदैव Positive रहें।

सुखी और दीर्घ जीवन के इन सरल उपायों को हमें अपने जीवन में अपना कर प्रसन्नता और लम्बे जीवन को सुनिश्चित करना चाहिए।

“तुमि” बन्दा रोड,
महानगरम्भी-326502

शिक्षा दिवस : 11 नवम्बर

शिक्षा मनीषी मौलाना अबुल कलाम आजाद

□ नगेन्द्र कुमार मेहता 'धन्य'

मौ लाना अबुल कलाम अहमद यहीउद्दीन का जन्म 11 नवम्बर 1888 ई. को हुआ। ये पढ़ाई में होशियार थे। मात्र 15 वर्ष की आयु में 'दस तिलामी' (अरबी, फारसी, भाषा, दर्शन, तर्क, गणित आदि का संपूर्ण पाठ्यक्रम) समाप्त कर लिया था। यह पाठ्यक्रम ऐसा था, जिसे पूरा करने में सामान्यतः दस-बारह वर्ष लग जाते हैं किन्तु आजाद ने चार वर्ष में ही पूरा करके अपनी विलक्षण योग्यता का परिचय दिया। अध्यापक बनकर पढ़ाने लगे और कम उम्र में ही शिक्षा जगत में धाक जमा ली।



मौलाना आजाद ने 1900 ई. में 'मैरे आत्म', 1901 ई. में 'अस्सबाह' 1903 को लिसानुस-सिद्क, 1912 में 'अल-हिस्लाल' पत्रिका का प्रकाशन किया। देश की उस समय की स्थिति के विषय में खूब लिखा एवं ब्रिटिश सरकार की तीव्र आलोचना की। वे चाहते थे कि हिन्दू और मुसलमान स्वतंत्रता संग्राम में कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें और अंग्रेजी शासन समाप्त करने में एक-दूसरे का भरपूर सहयोग करें। इससे चन साधारण में क्रांति की लहर दौड़ गई। ब्रिटिश शासन बेचैन हो उठा, अंत में उसकी ज्यादातरियों के फलस्वरूप अल-हिस्लाल का प्रकाशन 1914 में बंद करना पड़ा। फिर आजाद ने 'अल-बलाम' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लिखने का उनका क्रम चलता रहा जो सरकार को गवाह नहीं था। अतः अल बलाम पर पाबंदी लगा दी गई। आजाद को कलकत्ता से निष्कासित कर दिया गया। जब पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश और बंबई में भी उनका प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया तब वे 1916 में बिहार में रांची चले गए। छह माह बाद ही उन्हें कैद करके नजरबंद कर दिया गया।

रांची की कैद ने आजाद को राजनीति के क्षेत्र में पूरी तरह उत्तर दिया। जनवरी 1920 में जेल से रिहा किए गए। असहयोग आंदोलन में ब्रिटिश नीकरशाही के विरोध में उन्होंने नई

चेतना जगाने वाले जोशीले भाषण देकर जनता में जागृति पैदा की।

साइमन कमीशन के भारत आने पर कलकत्ता में आजाद की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमें कमीशन का विरोध किया गया। 1939 ई. में मौलाना कलाम आजाद इंडियन

नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। देश की आजादी के बाद प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ही बने। शिक्षा मंत्री के पद पर रहते हुए उनके द्वारा उल्लेखनीय कार्य किए गए वह थे-पूर्व की शिक्षा पद्धति में शोध कार्य पर बल देना, प्रौढ़ शिक्षा व महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करना, ललित कलाओं की उन्नति के लिए अकादमियों की स्थापना करना, उच्च शिक्षा को और अधिक साधन उपलब्ध कराना। युनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन की स्थापना करके विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता की सुरक्षा की व्यवस्था करना भी उनकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। आजाद के शिक्षा मंत्री काल में ही इंस्टीट्यूट ऑफ हायर टेक्नोलॉजी, खड़गपुर की स्थापना हुई। साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, संगीत नाटक अकादमी और ललित कला अकादमी की स्थापना भी उन्हीं के कार्यकाल में हुई जिससे हम भारतवासी आज तक लाभान्वित हो रहे हैं।

मौलाना अबुल कलाम आजाद उद्यम, धार्मिक, सहृदय, कलम के धनी, विद्वानों में सम्मानित, राजकाज में दक्ष, जनप्रिय, लोकप्रिय समाजसेवी, कवि, लेखक, संपादक, वक्ता थे जिनका हर क्षेत्र में बड़ा आदर होता था। उन्होंने कुरान शरीफ का अनुवाद किया और 'गुजारे खातिर' आदि पुस्तकें भी लिखीं। उन्होंने हमारे पथ में रोशनी के दीपक जलते हुए हमें सही मार्ग दिखाया। अब उस मार्ग पर सांगोपांग ढंग से चलना हमें है। लोग मौलाना कलाम आजाद को 'इमाम उस हिन्द' कहते थे। वे वास्तव में हमारे ईसानियत थे।

-श्रीनारायण (पञ.)
मो. 9829968055



विश्व हाथ धुलाई दिवस रखें हम हाथों को स्वच्छ

□ करणी दान कच्छावा

अथं मे हस्तो भगवान् अथं भगवत्तरः।
अथं मे विश्वसेवजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥
यह मेरा हाथ ऐश्वर्यवान् है। यह मेरा दूसरा
हाथ और भी ऐश्वर्यवान् है। वह मेरा हाथ
सब रोगों को औषधित्व दूर करने वाला है। यह
मेरा हाथ सुखयुक्त स्पर्श वाला है।

(ऋग्वेद 10/60/12)

ऋग्वेद के उपर्युक्त श्लोक में वर्णित हाथ
की महिमा पढ़कर अपने हाथों पर गर्व होना
स्वाभाविक है। जितने हाथ, वह उतना ही
महिमावान्। हाथों के महत्व के कारण ही देवी
देवताओं के अनेक हाथ होते थे। चार भुजा
अर्थात् चतुर्भुज तो हमारे यहाँ सामान्य बात रही
है। माँ दुर्गा के दस हाथ हैं। फिलहाल हम मनुष्य
के दो हाथों तक ही इस चर्चा के सीमित कर लेते
हैं। इन दो हाथों की महिमा बताने के लिए ऋग्वेद
का उपर्युक्त श्लोक पर्याप्त है।

हाथ के प्रमुख काम हैं—अपनी
आजीविका कमाने के लिए काम करना, अपने
स्वयं के काम यथा खाना-पीना, लिखना-
पढ़ना, नहाना, वाहन चलाना, वाहन में सवार
होने में सहायता करना आपात काल में स्वयं की
रक्षा करना, दूसरों की सहायता करना आदि।
भारतीय संस्कृति परहितकारी रही है। यहाँ अर्बन
का प्राथमिक उद्देश्य दूसरों की मदद करने का रहा है
और हाँ दूसरों की मदद करने के अमृतभाव को
सफलीभूत करते रहने के लिए खुद को तैयार रखने
जितना स्वयं पर लगाने का भाव रहता है। यहाँ एक
हाथ से कमाने तथा दूसरे हाथ से दूसरों की मदद
करने का भाव रहा है। इस सिद्धान्त को व्याख्याहित
करते हुए (अथर्ववेद 3/24/5) में कहा गया है—
शत्रुहस्त सभाह्व सङ्गस्वहस्त संकिन अर्थात्
सैकड़ों हाथों से अर्बन करो तथा हजारों हाथों से
दूसरों की सहायता करने के लिए विसर्जन करो।

चम हाथों की इतनी महिमा है तो इनकी
सुरक्षा एवं सार सम्भार करना भी हमारा नैतिक
कर्तव्य बनता है। विभिन्न काम करते समय
हमारे हाथ खराब होते रहते हैं। यहाँ तक कि
छोटी मोटी चोट भी लगती रहती है। अतः

आवश्यक है कि हम अपने हाथों की छंग से
सफाई करते रहे तथा चोट लगने पर उपचार
करवाएं। कुल मिलाकर बड़ी बात हाथों की
धुलाई की है। हाथों को सर्वश्रेष्ठ चम्मच और
हथियार कहा गया है (Our HANDS are the
best spoons and best weapons) इसका
आशय यह है कि भोजन करने में हाथ ही
सर्वाधिक मददगार बनते हैं। अधिकांश लोग तो
भोजन करते ही हाथ से हैं। मगर चम्मच, छूरी
काटि का उपयोग करने में भी मददगार तो हाथ ही
बनते हैं। बिना हाथ के चम्मच, छूरी, कटि क्या
कर सकते हैं? इसी प्रकार हमारे काम को
आसान बना देने में मदद करने वाले उपकरण
यथा विभिन्न प्रकार के बाइन, मशीनें, कम्प्यूटर,
फोन, मोबाइल आदि का उपयोग करने में
आधार तो हमारे हाथ ही बनते हैं। अतः हाथों
की सुरक्षा व साफ सफाई अनिवार्य है। बच्चों में
बाल्यकाल से ही इसके प्रति जागरूकता पैदा की
जानी चाहिए।

इस वर्ष (2014) में भारत में इंडियन
मेडिकल काउंसिल ने एक सर्वे करवाया। इस
सर्वे के परिणामों के अनुसार देश में चार वर्ष से
14 वर्ष की आयु के 45 प्रतिशत बच्चे हाथ साफ
नहीं करने के कारण बीमार पड़ते हैं। यह बहुत
अलमर्गिंग है। इसलिए इंडियन मेडिकल
काउंसिल ने व्यक्तिगत साफ-सफाई के
सिलसिले में हाथ साफ रखने पर विशेष बल
दिवा है। इस सर्वे रिपोर्ट में कहा गया है कि हाथों
के माध्यम से ही वैक्टीरिया पेट में पहुँचते हैं जो
अन्ततः डायरिया के कारण बनते हैं। दूषित हाथों
से खाना-पीना करने से टी.बी. के संक्रमण का
भी खतरा रहता है। इतना ही नहीं हाथों के रास्ते
पेट तक पहुँची गन्दगी हमारी पाचन क्रिया को
प्रभावित करती है। इससे पाचन क्रिया कमजोर
हो जाती है।

विकिसक बराते हैं कि बालक दिन भर
में संक्रमण फैलाने वाली कई चीजों को छूते रहते
हैं। उनको खेलते, छींकते, दोस्तों से हाथ
मिलाते, खांसते और यहाँ तक कि समूह में

बैठकर बातचीत करने के दौरान हवा में
वैक्टीरिया हाथों के सम्पर्क में आते हैं। इस दृष्टि
से यदि भोजन करने से पहले हाथों को ठीक तरह
से धोवा नहीं जावे तो वे वैक्टीरिया पेट में पहुँच
कर बीमारी का कारण बनते हैं।

हाथों के गंदा होने से हो सकने वाली
बीमारियों से बचाव के लिए जागरूकता पैदा
करनी परमावश्यक है। यही कारण है कि विश्व
स्वास्थ्य संगठन की ओर से 15 अक्टूबर का दिन
International Hand Wash Day के रूप में
घोषित किया गया है। अतः आवश्यक है कि
सरकारी एवं प्राइवेट स्कूलों में हाथों की धुलाई
के लिए जागरूकता बढ़ाई जावे। बच्चे अक्सर
मिट्टी में खेलते हैं। इससे मिट्टी के जीवाणु पेट में
पहुँच कर हेमवर्मी अथवा पेट में कीड़ों की
समस्या का कारण बनते हैं। सार्वजनिक स्थानों
पर होने के दौरान बार-बार मुँह और नाक को
हाथ से नहीं छूना चाहिए। डायरिया जैसे रोग होने
पर बालकों का विकास प्रभावित होता है तथा
बयस्कों की प्रतिरोधात्मक क्षमता घटती है।

अतः हाथों की समुचित सफाई पर पर्याप्त
ध्यान देना चाहिए। हाथों को धोने का उचित
तरीका बच्चों को बताया जाना चाहिए। एक
आदर्श हाथ धुलाई विधि में हाथों को पहले पानी
से धोना चाहिए। इसके उपरान्त पर्याप्त मात्रा में
लिक्रिड साबुन लगाकर हथेलियों पर रगड़ना
चाहिए। एक हाथ को उल्टा करके दूसरे हाथ से
अंगुलियों के बीच साबुन मसें, फिर दूसरे हाथ के
साथ भी यही ऐसा करें। अन्त में दोनों हथेलियों
को आपस में फिर रगड़ें। इस क्रिया के दौरान
दोनों हथेलियों को आपस में फिर रगड़ते हुए
साफ करें। अन्त में निर्मल चल से दोनों हाथों को
भली भाँति धोएँ। ऐसा करके आप स्वच्छ हाथ-
स्वच्छ शरीर का लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।
विद्यालयों में टिफिन से पूर्व तथा पश्चात् बच्चों
की हाथ धुलाई पर शाला प्रशासन को विशेष
ध्यान देना चाहिए।

—प्राध्यापक (भौतिक शास्त्र)
राज. फोर्ट उ.मा. विद्यालय, बीकानेर
फोन. 9214633947

शिक्षक और विद्यार्थी का पवित्र रिश्ता है जो भावना से जुड़ा होता है। इसी भावना और पवित्र रिश्ते से विद्यार्थी का मूल्य-संस्कार-आदर्श युक्त एक उच्च चरित्र बना जाता है। विद्यार्थी का उच्च चरित्र सामाजिक संरचना में सद्भावना, सहयोग, प्रेम, करुणा, त्याग, स्वदेशी भावना, राष्ट्र हित और विकास के रथ को गतिशील रखता है। इसी कारण उच्च चरित्र निर्माता शिक्षक को समाज निर्माता माना जाता है। अपने विद्यार्थी के चरित्र को गढ़ने से पूर्व शिक्षक को स्वयं सुदृढ़ व्यक्तित्व का धनी होना आवश्यक है। जब बालक विद्यालय गमन करता है, उस समय उसमें अनुकरण की क्षमता सर्वोपरि होती है। प्रायः देखा जाता है कि बालक शिक्षक के हाव-भाव, भाषा शैली, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि का अनुकरण करके स्वयं वैसा बनने का प्रयास करता है।

यथार्थ है कि शिक्षक का व्यक्तित्व विद्यार्थी को सर्वाधिक प्रभावित करता है। विद्यालयी जीवन में अनेक शिक्षकों का सम्पर्क विद्यार्थी से होता है। किन्तु कुछ शिक्षक विद्यार्थी के मानस पटल पर छा जाते हैं। यह आदर्श अध्यापक का व्यक्तित्व ही होता है। ऐसे अध्यापक से विद्यार्थी बार-बार मिलना और बात करना चाहता है। उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। जब भी उसे देखता है तो उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और मन में श्रद्धा की भावना स्फुरित हो उठती है। वस्तुतः वह कौनसी वस्तु या तथ्य है जो बालक को स्वतः ही उस शिक्षक की ओर खिंचते हैं, इस प्रश्न का उत्तर अत्यन्त ही सहज है-शिक्षक का स्वभाव।

शिक्षक का स्वभाव प्रायः दो प्रकार का होता है-सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक भावी शिक्षक का चेहरा खिला हुआ, हंसमुख स्वभाव और मृदु भाषा हमेशा विद्यार्थी के आकर्षण का केन्द्र रहती है। इसके विपरीत नकारात्मक भावी शिक्षक छोटी-छोटी बातों पर बिगड़ते रहते हैं, विद्यार्थी को प्रायः डाट देते हैं। ऐसे शिक्षकों से प्रायः विद्यार्थी कनी काटते रहते हैं।

विद्यार्थी का मन अत्यन्त संवेदनशील होता है। अतः संवेदनशील मन पर शिक्षक के हाव-भावों का प्रभाव स्वभावतः पड़ता ही है। मैं यहाँ कुछ ऐसी बातें करना चाहूँगा जो सकारात्मक और नकारात्मक व्यक्तित्व के परिणामस्वरूप जन्मती है जिनको प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यालय

शिक्षक का व्यक्तित्व और विद्यार्थी का चरित्र

□ दयाराम

में देखता है-

सकारात्मक व्यक्तित्व का प्रभाव-

1. शिक्षक अपने विद्यार्थी की पूरी बात सुनता है, उसके चेहरे के भाव मुस्कान युक्त होते हैं। इससे विद्यार्थी का मनोबल बढ़ता है।
2. जब शिक्षक अपने विद्यार्थी की समस्या को तन्मयता से हल करता है तो विद्यार्थी बार-बार आने वाली छोटी-छोटी समस्याओं को मुक्त मन से शिक्षक के समक्ष रखता है।
3. शिक्षक और विद्यार्थी के बीच बार-बार संवाद होने से दोनों के संबंधों में मधुरता आती है जो क्रमशः धीरे-धीरे आदर, सम्मान का रूप लेकर प्रकट होती है।
4. शिक्षक और विद्यार्थी के संबंधों की घनिष्ठता से विद्यार्थी में अनुशासन पैदा होता है। जो कक्षा कक्ष, विद्यालय परिसर के साथ-साथ समाज में भी देखा जा सकता है।
5. कक्षा कक्ष में उसकी और उसके शिक्षक की आदर्श छवि सतत् बनी रहे इसलिए वह गृहकार्य, अध्ययन कार्य प्रतिदिन पूर्णकर विद्यालय आता है।
6. विद्यार्थी के हाव-भाव, रहन-सहन, विचारशैली में व्यापक बदलाव आता है।

नकारात्मक व्यक्तित्व का प्रभाव-

1. शिक्षक के बार-बार डांटने, जोर से बोलने आदि से विद्यार्थी याद किया हुआ कार्य भूल जाता है और प्रश्न पूछने पर कांपने लगता है। फलतः वह अपनी बात नहीं कह पाता है। इससे विद्यार्थी में भय की भावना पैदा होती है।
2. विद्यार्थी अपनी अध्ययन संबंधी समस्याओं का निवारण नहीं कर पाता है।
3. शिक्षक-विद्यार्थी के आपसी संबंधों में घनिष्ठता नहीं आती है जिससे विद्यार्थी में अनुशासन की कमी अवश्य झलकती है।
4. विद्यार्थी की रुचि नकारात्मक भावी शिक्षक के विषय के प्रति धीरे-धीरे खत्म होती जाती है।
5. बालक अनुकरण से सीखता है। फलतः कुछ विद्यार्थी नकारात्मक व्यक्तित्व के अनुकरण से नकारात्मक सोच वाले भी हो सकते हैं।

6. विद्यार्थी और शिक्षक में संवाद स्थापित नहीं हो पाते हैं जिससे विद्यार्थी की झिझक यथावत बनी रहती है।

ये कुछ सामान्य-सी बातें हैं जो सकारात्मक और नकारात्मक व्यक्तित्व की प्रति छाया के रूप में प्रायः विद्यार्थी में देखी जाती है। यह पूर्ण सत्य है कि बालक जब विद्यालय में आता है तो वह खाली होता है। उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति में किताबी ज्ञान के साथ-साथ अच्छी व बुरी बातों का आगमन होता है। एक आदर्श शिक्षक की प्रेरणा से वह बुरी बातों को त्याग सकता है। आदर्श शिक्षक के उत्तम व्यक्तित्व की छवि विद्यार्थी के चरित्र को दृढ़ता देती है। इससे विद्यार्थी का चरित्र उत्तम गुणों के पुंज के साथ संस्कारशील बनता है। विद्यार्थी देश का कर्णधार होता है। वह इसी चरित्र से उन्नत एवं आदर्श सामाजिक संरचना बुनता है। हमारे इतिहास में ऐसे पर्याप्त उदाहरण देखने को मिलते हैं-श्री कृष्ण और अर्जुन, द्रोणाचार्य और एकलव्य, गुरु विशिष्ट और राम आदि।

आज की अर्थवादी संस्कृति में उत्तम व्यक्तित्व वाले शिक्षकों की महती आवश्यकता है। आधुनिक विद्यार्थी वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण और बाजारवाद की गिरफ्त में है। उसका धर्म, चरित्र नैतिक मूल्य आधुनिकता के नाम पर छले जा रहे हैं। चारों तरफ आपाधापी, अराजकता का कुहासा छाया हुआ है। ऐसे जलते समय में युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का दायित्व शिक्षक का बनता है। निष्कर्षतः शिक्षक पठन-पाठन से ऊपर उठ कर, कुछ निजी हितों को तिलांजलि देकर, स्वयं का सुदृढ़ एवं उत्तम व्यक्तित्व तैयार करे जिसका अनुकरण उसके विद्यार्थी कर सके। इसी अनुकरण से विद्यार्थी स्वयं के चरित्र को मूल्यों से सराबोर करके समाज को सभ्य एवं संस्कार युक्त सामाजिक संरचना का उपहार देने में सक्षम हो पायेगा। इन्हीं संभावनाओं की तलाश में शिक्षक के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठाया विद्यार्थी के चरित्र में देखी जा सकेगी।

-प्राध्यापक (हिन्दी)

रा.उ.मा.वि., गोलुवाला (हनुमानगढ़)

मो. 9462205441

ए जुकेशन शब्द लैटिन भाषा के (एजुकेटम) शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है- 'अन्दर से बाहर की ओर' अर्थात् बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का बाह्य आवरण में विकास हो।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, 'बच्चे में पूर्व से निहित पूर्णता का प्रत्यक्षण ही शिक्षा है' तेजी से विद्यालयों की बढ़ती संख्या के कारण शिक्षा, शिक्षा के बढ़ते सार्वजनीकरण से भारत में 6-14 आयु वर्ग के अधिकांश बालक-बालिका स्कूल जा रहे हैं। बढ़ती शिक्षा की रफ्तार से अब गुणात्मक शिक्षा की आवश्यकता महसूस होने लगी है। गुणात्मक शिक्षा द्वारा बालक को एक आदर्श नागरिक बनाया जा सकता है। स्वावलंबन की भावना पैदा हो, अच्छा चरित्र निर्माण हो, बालक की सृजनात्मक शक्ति बढ़े वह सामाजिक उत्तरदायित्वों को स्वीकार करे शिक्षा में स्थायित्व हो, जीवन के लिए शिक्षा हो तथा मुक्ति के लिए शिक्षा यह सब गुणात्मक शिक्षा द्वारा ही संभव है।

गुणात्मक शिक्षा न केवल व्यक्ति को सशक्त बनाती है बल्कि व्यक्तिगत और सामूहिक हकों के साथ-साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेने और उत्पादक रोजगार के लिए अवसर पैदा करती है। यह सामाजिक परिवर्तन को हवा देती है और आर्थिक विकास को उत्प्रेरित करती है।

बदलते परिवेश में अब गुणात्मक शिक्षा की आवश्यकता और अपेक्षा दोनों हैं। इसे प्राप्त करने में शिक्षार्थी, शिक्षक, संसाधन, शिक्षण गतिविधियों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। ये आयाम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्वपूर्ण घटक हैं। इन आयामों की ऐसी सुदृढ़ व्यवस्था हो कि लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

इन आयामों का संगठन सुनियोजन परस्पर समन्वय इनकी सक्रियता आपसी सहभागिता गुणात्मक शिक्षा को बढ़ावा देगी।

शिक्षार्थी (छात्र)- बालक गुणात्मक शिक्षा का केन्द्र है। बालक की सक्रियता, नियमितता, जागरूकता, ज्ञान प्राप्ति के प्रति इच्छा शक्ति गुणात्मक शिक्षा का मुख्य आधार है। 1762 ई. में रूसो ने बाल केन्द्रित शिक्षा की अवधारणा पर जोर दिया था और कहा था, 'शिक्षक बालकों में सीखने के प्रति प्रबल इच्छा व रुचि और जिज्ञासा पैदा करें।'

बालक को पूर्ण भयमुक्त एवं खुला वातावरण उपलब्ध कराया जाए उसे आयु और

शिक्षा दर्शन

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आयाम

□ सीताराम उपाध्याय

समय के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाए। विद्यालयों में वह अपने घर जैसा महसूस करे तभी वह गुणात्मक शिक्षा को समझ आगे बढ़ पायेगा। इन सबके अभाव में वह प्रारम्भिक समस्याओं से ग्रसित और भयभीत रह विद्यालय में उसे अरुचि उत्पन्न हो जाएगी अतः बालक को भयमुक्त रुचि अनुसार खुशनुमा माहौल देने का हर सम्भव प्रयास करें।

शिक्षक- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है, 'जन्मजात अध्यापक वह आदमी होता है जिसके भीतर आदिम बालक बच्चों की आवाज का तुरंत जवाब देता है।' शिक्षक को बालक को रुचि अनुसार अध्यापन कार्य करवाना चाहिए इस हेतु उन्हें अधिक से अधिक शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करें। शिक्षक को अपना कर्तव्य बोध हो उनके पास ज्ञान का नवीनीकरण और भंडार हो, बालक में घुलमिलने की ललक हो, वे बालकों में वैज्ञानिक सोच विकसित कर परिवेश से जोड़कर ज्ञात से अज्ञात, मूर्त से अमूर्त, स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ना सिखाये। शिक्षक अपने ज्ञान और कौशल में पूर्ण नवीनता लिए हो तभी वह 21वीं सदी के बालक की आशा और आकांक्षाओं को पूरा कर सकता है। शिक्षक हो सके तो अब्राहम लिंकन के वे पत्र जो उन्होंने अपने बेटे के विद्यालय के प्रधानाध्यापक को लिखे अपने शिक्षण कार्य में जरूर अपनाना।

शिक्षण संस्था (संसाधन)- गुणात्मक शिक्षा हेतु बदलते शैक्षिक तकनीकी युग में संसाधनों का होना आवश्यक है। खूबसूरत मनोरम हरित स्वच्छ विद्यालय का भवन एवं वातावरण सुसज्जित सुविधायुक्त कक्षा-कक्ष, साफ-सुथरे बालक-बालिका पृथक शौचालय, वाचनालय भव्य पुस्तकालय, शुद्ध पेयजल, खेल-मैदान, नवीन तकनीक (कम्प्यूटर) उपकरण से युक्त विद्यालय शिक्षण सामग्री एवं पर्याप्त शिक्षकों की उपलब्धता भी गुणात्मक शिक्षा को सबल प्रदान करेगी। पर्याप्त भौतिक एवं मानवीय संसाधनों के अभाव में गुणात्मक शिक्षा की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। वर्तमान में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा

अभियान एवं सर्व शिक्षा अभियान से विद्यालयों को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हो रहे हैं। ऐसे में निश्चय ही आने वाले वर्षों में गुणात्मक शिक्षा में उल्लेखनीय प्रगति होगी।

शिक्षण विधियां एवं शैक्षिक नवाचार- नवीन और प्रभावी शिक्षा विधियां गुणात्मक शिक्षा में और निखार लायेगी। समय-समय पर उच्च स्तरीय शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हो इससे शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता बढ़ेगी जिसका सीधा असर गुणात्मक शिक्षा पर होगा। शिक्षक बालकों को जिज्ञासु, खोजी आलोचनात्मक एवं नवाचारी बनाये। उनमें ऐसी इच्छा उत्पन्न करे बालक स्वयं आगे आये और स्वयं आगे बढ़े। सूचनी तकनीकी ने ज्ञान और अवसर के भंडार खोल दिये हैं ऐसे में अब उन्हें प्रायोगिक पद्धति से नया करने का मौका दिया जाए शिक्षक स्वयं प्रशिक्षित हो बालकों में यह धारणा विकसित करे- 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् ज्ञान वही है जो मुक्त करे।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते' (गीता 4/38) अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। नवीन तकनीकी युग में शिक्षक स्वयं प्रशिक्षित हो अब बालक पर ज्ञान थोपा नहीं जाय, रटन विद्या न अपनायी जाय बल्कि स्वयं उसे करके सीखने के अवसर दिये जाय वह स्वयं वातावरण के साथ तादात्म्य बनाकर स्वावलंबी बन सके।

विश्व के अधिकांश देश अपनी शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार हेतु नवीन कदम उठा रहे हैं। प्रतिस्पर्द्धा की जगह सहयोग पर बल दिया जाता है। किसी भी स्कूल में फीस लेने की इजाजत नहीं है। बालक की सम्पूर्ण शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार द्वारा वहन की जाती है। गुणात्मक शिक्षा आज की प्रथम आवश्यकता है और ये सभी आयाम (घटक) जब पूर्णतः सक्रिय और परिपूर्ण होंगे तो स्वतः गुणात्मक शिक्षा का स्वरूप निखरता संवरता चला जाएगा।

-प्राध्यापक

रा.उ.मा.वि., कोथून (चाकसू) जयपुर

राणाप्रताप सागर बांध और यहां के पन बिजली घर से विद्युत उत्पादन के जरिए प्रदेश का कोना-कोना उजाले से रोशन है। इनके अलावा इस जिले में जाखम बांध सिंचाई परियोजना पर भी एक लघु पनबिजलीघर लगाया गया है जिसकी विद्युत उत्पादन क्षमता पांच मेगावाट है। एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में रावतभाटा स्थित दूरदर्शन प्रसारण केन्द्र सौर ऊर्जा से चलता है। देश और प्रदेश सरकार की सौर ऊर्जा उत्पादन की दिशा में विशेष प्राथमिकता की दृष्टि से यह प्रसारण केन्द्र एक मिसाल मानी जा सकती है।

दर्शनीय स्थल

चित्तौड़गढ़ जिला अपने महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों के लिए अगर सैलानियों को आकर्षित करता है तो भक्ति और भारत की संस्कृति के ज्ञान पीपासु तीर्थयात्रियों को भी पल-पल आमंत्रण देता अनुभव होता है। भारतीय स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने के रूप राणा कुंभा का महल अपनी बेजोड़ निर्मिति का उदाहरण देता है तो इसी महल में स्थित भूमिगत कोठियों के साथ रानी पद्मिनी और वीरांगनाओं के जौहर की गाथा तीर्थ यात्रियों को भारत की स्वाभिमानी नारी शक्ति के दर्शन कराती है। यहां स्थित पद्मिनी महल भी पर्यटकों और संस्कृतिविदों के लिए प्रमुख आकर्षण है। इसी पद्मिनी महल में राणा रतनसिंह ने मुगलशासक अलाउद्दीन खिलजी को रानी पद्मिनी की एक झलक दिखाई थी। उसके बाद ही अलाउद्दीन ने चित्तौड़गढ़ के विनाश की तरफ कदम बढ़ाए। सूरजपोल की ओर जाने वाले मार्ग पर जैन कीर्तिस्तम्भ आता है। बारहवीं शताब्दी में दिगम्बर जैन संप्रदाय के बघेरवाल महाजन सानाय के पुत्र जीजा ने इस 75 फीट ऊँचे स्तम्भ का निर्माण कराया। यह स्तम्भ जैन धर्मावलम्बियों के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का स्मारक है। स्तम्भ के चारों ओर भगवान आदिनाथ की दिगंबर मूर्तियां उत्कीर्ण है। गोमुख कुण्ड, कालिका माता का मन्दिर, सांवरिया सेठ तीर्थ जहां आध्यात्मिक आनन्द की सरिता प्रवाहित करते हैं वहीं भैंसरोड़गढ़ के चूलिया और मेनाल जल प्रपात में प्रकृति अपना परम वैभव लुटाने के दीदार कराती है।

अमर कीर्ति गाथा के दो प्रेरणा स्तम्भ

चित्तौड़गढ़ जिले का नाम आते ही

विजय स्तम्भ तथा यहां के दुर्ग की स्मृतियां मानस और हृदयपटल पर उमड़-धुमड़कर छा जाती हैं। हृदय आकाश से चित्त की धरती पर पराक्रम की वृष्टि मन के उद्यान को आनन्द के फूलों से हरा-भरा कर जाती है।

विजय स्तम्भ

विजय स्तम्भ का वास्तु शिल्प सूत्रधार मंडन ने तैयार किया था। अद्भुत और अनुपम वास्तुशास्त्र तथा अप्रतिम स्थापत्य के लिए विख्यात मंडन सोमपुरा ब्राह्मण था और वास्तुशास्त्र के कई ग्रंथों का रचयिता भी। 70 मीटर ऊंचे नौ मंजिला वाली इस इमारत के रूप में विजय स्तम्भ महज निर्जीव निर्माण न होकर आज भी आबाल-वृद्ध सभी में संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्राण फूंकने वाला संजीवनी स्रोत है।

मालवा व गुजरात पर आधिपत्य वाले मुगल शासकों को रणांगन में शिकस्त देकर उन पर विजय श्री वरण कर क्षत्रियोचित शौर्य और पराक्रम का परचम लहराने का जश्न मनाने के लिए मेवाड़ के शक्तिशाली शासक महाराणा कुंभा ने विजय स्तम्भ का निर्माण सन 1440 में करवाया। विजय स्तम्भ पर हिंदू देवी-देवताओं की उत्कृष्ट मूर्तियां बनी हुई हैं। ये मूर्तियां रामायण और महाभारतकालीन वृत्तांतों का चित्रण करती हैं। देवी-देवताओं के विविध स्वरूपों का पाठ इन मूर्तियों से पढ़ा जा सकता है।

बसन्त हो या पतझर दोनों ही विगत 6 शताब्दियों से मातृभूमि और देश के स्वाभिमान की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग के प्रतीक विश्वविश्रुत इस निर्माण से भक्ति और शक्ति का युगल गीत सुनते आ रहे हैं।

चित्तौड़गढ़ का दुर्ग

यह स्वतंत्रता और स्वाभिमान के संघर्ष का प्रतीक है। राणा कुंभा और सांगा के पराक्रम तथा स्वातंत्र्य चेतना का प्रतीक चित्तौड़गढ़ दुर्ग सदियों बाद भी शौर्य की गाथाएं सुनाता जान पड़ता है। रानी पद्मिनी का जौहर, वीरा गौरा बादल, पराक्रमी कल्ला राठौड़, जयमल व पत्ता सिसोदिया के अपूर्व पराक्रम का प्रतीक यह दुर्ग स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। इसकी भव्यता और गौरवशाली अतीत ने कीर्ति की सारी सीमाएं कुछ ऐसी लांघी कि 'गढ़ तो

चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया' की उक्ति लोक जिह्वा पर किसी घोष की तरह सवार है। 8 किमी. लम्बे और 2 किमी. चौड़े परिक्षेत्र में फैले विशेष सामरिक महत्व की ऐतिहासिक गाथा संजोए चित्तौड़गढ़ का दुर्ग का निर्माण मौर्य शासक चित्रांगद ने करवाया था। चित्तौड़गढ़ का दुर्ग अजमेर खंडवा रेलमार्ग चित्तौड़गढ़ जंक्शन से लगभग 4 किमी. दूर गंभीरी और बेड़च नदियों के संगम स्थल पर अरावली पर्वतमाला की उत्तुंग शैल शिखर पर स्थित है। इस दुर्ग के साथ इतिहास प्रसिद्ध तीन जौहर का हिन्दुस्तानी नारी के परम सतीत्व का वक्त के शिलालेख पर लिखा अमिट घटनाक्रम जुड़ा है।

इनमें भी अव्वल

अध्यात्म, संस्कृति और इतिहास में ख्याति लब्ध चित्तौड़गढ़ अन्य क्षेत्रों में अव्वल है। प्रदेशवासियों को चीनी की मिठास का एहसास 1932 में चित्तौड़गढ़ के भूपालसागर में 'दी मेवाड़ शुगर मिल्स' नाम से निजी क्षेत्र की पहली चीनी मिल ने ही करवाया। 'काला सोना' शब्द भी कानों में पड़ते ही चित्तौड़ के खेतों में श्वेत पुष्पों के साथ दुग्ध दरिया की छटा बिखरती तस्वीर अफीम उत्पादन में अग्रणी जिले का उल्लेख बनकर चर्चा ए आम हो जाती है।

मक्का उत्पादन में सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले जिले के रूप में चाहे उदयपुर का नाम आता हो परन्तु उत्पादन में अव्वल होने का रिकॉर्ड तो चित्तौड़ के ही नाम है। सम्पन्न-विपन्न सभी को अपनी हैसियत के मुताबिक आश्रय की बात चले और चित्तौड़गढ़ का जिक्र न हो ऐसा कैसे सम्भव है। राजस्थान में सीमेंट उत्पादन में चित्तौड़ जिला सबसे अग्रणी है। सीमेंट उत्पाद के तीन प्रमुख कारखाने बिड़ला समूह, जे.के. समूह और चित्तौड़गढ़ सीमेंट वर्क्स यहीं पर स्थापित हैं।

इस प्रकार चित्तौड़गढ़ अपनी आन, बान एवं शान के लिए राजस्थान को न केवल देश में ही अपितु पूरे विश्व में पहचान दिलाता है जिसे प्रतिदिन यहां आने वाले सैलानी प्रमाणित करते हैं।

-प्रधानाचार्य,

राजकीय मॉडल स्कूल, घाटोल (बांसवाड़ा)

मो. 9414101857

यह रहस्य तपोनिष्ठ मा जानती है या संवेदनशील, कर्णामय, निर्लिप्त, निर्भयानी सम्पूर्ण समर्पित साहित्य, कला और संगीत का पारखी सुचनकार कि अमृत है तो कहाँ? जिस कर्मोत्सवी परमानंद में आलुप्त हो सुचनकार अपने को भूलकर उसमें लीन हो जाता है जो उसके होने का हेतु है और जहाँ से सत्व, शिव और सुन्दर की समन्वित मनुभूत, अनाहतवाद् त्रिवेणी का अन्तर्प्रवाह अनाविल मलयानिल बन लयाबद्ध हो उठता है, वहाँ अमृत है, वहीं अक्षर है।

शिक्षा, संस्कृति एवं साहित्य के तपी-दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन का जन्मोत्सव इसी अक्षर परम्परा का साक्ष्य है। अक्षरानुभूति पथ का अनुगामी है। फलतः उनका जन्मोत्सव शिक्षा-साहित्य, संगीत कला आदि का महायज्ञ है।

राजस्थान का शिक्षा विभाग सुचनकार शिक्षकों तथा मंत्रालयिक शब्दतुरणी, सूचकों के साथ इस कड़ी का महोत्सव साहित्य प्रकाश के माध्यम से विगत 47 वर्षों से निरन्तर मनाता आ रहा है। इस वर्ष भी पाँच सितम्बर को प्रकाशित साहित्य की पंच दीपमालाओं की अन्तःच्योति उसी का प्रतिफल है।

सत्व को जानना है तो साहित्य को जानो, शिव का अनुभव करना है तो साहित्य के अन्तर्गत की गहराइयों का मंथन करो और सुन्दर का अनुभव करना है तो साहित्य को आत्मसात् करो। ऐसा प्रतीत होता है इसी अन्तःप्रेरणा की विज्ञप्ति से शिक्षक दिवस पर शिक्षा विभाग सुचन का उपहार प्रस्तुत कर रहा है।

ध्यातव्य है, साहित्य अपने समय का दस्तावेज है। आज हम जिन परिस्थितियों, अन्तर्विरोधों, विषमताओं और चटिलताओं के साथ विकास यात्रा के हमराही बने हुए हैं, उसके अन्तर्गमन के संवाद की प्रस्तुति साहित्य ही है। मेरे सामने पंच मणिमालाएँ हैं। उनके क्रम को उलटने का दुस्साहस मैंने किया है।

इन पाँचों पुस्तकों का प्रकाशन माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर के तत्वावधान में शिविर प्रकाशन ने किया है जिनकी संक्षिप्त समीक्षा इस प्रकार है:-

शिक्षक दिवस प्रकाशन 2014

सृजन ही अमृत है

□ डॉ. राधेन्द्र मोहन भट्टनागर

शिक्षक दिवस प्रकाशन श्रृंखला के अन्तर्गत इस वर्ष शिक्षक दिवस, 5 सितम्बर 2014 को प्रकाशित पाँच पुस्तकों की समीक्षा विश्वविद्यालय के सुपरिचित अध्यापक डॉ. राधेन्द्र मोहन भट्टनागर के कलम की कृपा की है। उनके प्रति विभक्त कृतज्ञता के साथ यह समीक्षा यहाँ प्रस्तुत है।

—वरिष्ठसम्पादक

सृजन संवाद (हिन्दी विविधा)

संपादक : शुभू पटवा पृ.सं. : 240

संस्करण : 2014 मूल्य : ₹83.00



सर्वप्रथम मैंने 'सृजन संवाद' को लिया है। इसका संपादन विख्यात साहित्यकार-संपादक श्री शुभू पटवा ने अत्यन्त सृजनात्मक और क्रम से किया है। आपने सृजन की यात्रा में संवाद को बीच मंत्र माना है और अंतः संवाद की निरन्तरता अनन्त बनी रहे को आवश्यक। निस्संदेह साहित्य हड़बड़ी में नहीं, गहन शान्ति, विवेक और अनुभूति से जन्मता है। साहित्यकार को प्रसव पीड़ा से गुजरना पड़ता है।

'सृजन संवाद' में विभिन्न गद्य विधाओं में 65 रचनाएँ हैं। उनके चयन में संपादक को काठिनाई आयी है क्योंकि वह ऐसे साहित्यकार की रचनाओं का चयन कर रहा है जो उनका विश्लेषक भी है। 'एक हाईटेक गाँव' कहानी लगती है 'दददा' की अग्रोन्मुख होती हुई और समदर्शिता तक जाती है मानव-मन के उद्वेलनों से गुजरते हुए। उसमें नई शिक्षा भी है लघुकथा के रूप में। आलेख अन्तर्गत साहित्य में व्यंग्य विधा, मूखों की संवेदनशीलता, नय-नय राजस्थान, मुस्कराह्वे और चुस्त हो चाहिये, सुख की तलाश कर यथार्थ बालिका श्रृणु हत्या और

हिंदी कवियों का आक्रोश और स्वस्तिक पहुँचते-पहुँचते सत्व से साक्षात्कार करने का प्रयत्न करती है। व्यंग्य में 'हँ इलाल घरती के लाल', 'मैं जिन्दा हूँ', 'मेरे अच्छे डॉक्टर' आदि रचनाएँ सच बोलना चाहती हैं। दमसल सभी रचनाएँ कुछ न कुछ कहती हैं। उसके लिए ऐसा वैयक्तिक खोबी पाठक चाहिए जो कुछ में से सब कुछ पाने के निकट पहुँच सके।

अनुभूति के आयाम (हिन्दी कविता)

संपादक : भवानीशंकर व्यास पृ.सं. : 192

संस्करण : 2014 मूल्य : ₹60.00



'अनुभूति के आयाम' के अनुभव, चर्चित और विशिष्ट साहित्यिक अंशकरणों के धनी संपादक-साहित्यकार श्री भवानीशंकर व्यास हैं। उन्होंने माना है कि अनेक कविताएँ जीवनानुभवों को काव्यानुभव में रूपान्तरित करने में सफल रही हैं। आपने 128 कविताओं से इस संकलन की प्रस्तुति की है। स्वयं विख्यात कवि होने के साथ छोटे-मोटे अनुभवों से गुजरते हुए अपने वक्तव्य में आज के जीवन की सभी गंभीरताओं का स्वागत किया है।

मैं यह अनुभव कर सका हूँ कि कविता तप चाहती है। वह तप जिससे विचार और भावों में कशमकश की पीड़ा से जो मिल सके, वह असंतोष में संतोष की छगर की ओर संकेत कर सके। और ऐसा हुआ प्रायः सभी कवियों ने कविता को जीना चाहा है और अपने युग से संवाद करने में चूक भी नहीं की है। उनमें अंधेरा हटाने दो में मुझे वहाँ ले चलो, चहाँ बहुत अंधेरा हो, बेटियाँ, हिम्मत, दर्द का अहसास, गल्ल (सारा जग है साथ इसके कहीं अकेली हूँ गजल) बिगड़लपन, समय को जानना आदि कविताएँ सोचने को विवश करती हैं अनेक विम्वर रूपों को सहजते हुए।

इन कविताओं में पदी, हाइकु और मुक्तक में आठ चतुष्पदी में पंक्ति हो पंथ से परिचय सदा ही प्राप्त करना या बिना विश्वास के फिर लक्ष्य पाना कैसे संभव हो। 'हाइकु' जो राष्ट्रभक्त, अरिहंत, जयवंत और वशोवंत की पहचान देता और उजाले बुझते नहीं की ओर ले

बारा मन ऐसा दीपक बने सभी हम के द्वार पर दस्तक देता है। अणु समान शिक्षक की हस्ती (हे सदगुरु तेरा क्या कहना) संयम अपना अनुपम गहना) 'भारत भूमि पर अमन रहे', 'वीर शहीदों को सलाम' आदि कविताएं आश्चर्य करती हैं कि जीना है तो ऐसे काव्यात्मक परिवेश के संस्कार का अभ्यास उन कविताओं के लिए जरूरी है जो छन्द के विरोध का परन्तु लिए कविता की सीमाओं का अतिक्रमण करती हैं।

शिक्षा और चिन्तन (शैक्षिक चिन्तन)

संपादक : डॉ. कृष्णाकान्त पाठक पु.सं. : 224
संस्करण : 2014 मूल्य : ₹77.00

तृतीय मणिमाला 'शिक्षा और चिन्तन'



का संपादन बरास्वी साहित्यकार डॉ. कृष्णाकान्त पाठक ने अत्यन्त मनोयोग से किया है। आपने विप्लव की सम्पदा के क्रम को खंगालते 'नेहरू बनाम नरकर' के अन्तर्मुखी द्वन्द्व घाघणों के मध्य शिक्षक को संयोजकाल्पक भूमिका के लिए स्मरण किया है। निष्कर्ष यह रेखांकित किया है कि 'जिन जीवों का अन्त खाल नहीं रखा गया, उन्हें सालों बाद रुग पावेंगे, तब तक पीढ़ियां बदल चुकी होंगी।'

इस मणिमाला में 48 निबंध हैं जो शिक्षा के बहिरंग तथा अन्तरंग स्वरूप पर शोधपरक दृष्टि डालते हैं। इसमें चिन्तन की गहरी पर चिन्ता हावी होती प्रतीत हुई है। 'शिक्षा में नवाचार', 'शिक्षा संस्कार', 'अध्यापक शिक्षा और नवाचार' आदि में सतही पकड़ होते हुए भी, नवाचाराल्पक प्रवृत्ति के प्रति चमत्क आस्था की धड़कन मंद नहीं होने पाई है। 'शिक्षा की वाणी', 'जीवन जीने की कला है शिक्षा', 'शिक्षकों की गुणवत्ता' से लेकर शिक्षा को प्रभावी बनाने वाले तत्वज्ञ-मनीषियों की शिक्षा पद्धति पर विचार किया गया है यथा-रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन, विवेकानन्द एक महान संत शिक्षक। इनमें विज्ञानावृत्ति का अन्तरालाप अपनी भूमिका के साथ न्याय करता है।

शिक्षा की सार्थकता पर विचार सार्थक शिक्षा : नैतिक शिक्षा का महत्व इत्यादि में संवाद की पृष्ठभूमि तैयार करता है। कुल

मिलाकर शिक्षक अपने चिंतन मनन से पठनीय बिकेक और समालोचकीय दृष्टि से अक्षय्य प्रभावित कर सका है।

मायङ्ग रा मिणियां (राजस्थानी विविधा)

संपादक : डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य पु.सं. : 160
संस्करण : 2014 मूल्य : ₹55.00

चौथी मणिमाला 'मायङ्ग रा मिणियां'

का संपादन प्रसिद्ध संपादक और अनुभवी शिक्षा मनीषी डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य ने इस आशा से किया है कि यह राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करवाने की अहम भूमिका निभा सकेगा। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि राजस्थानी भाषा में उन सभी विधाओं (जैसे कहानी, निबंध, वाता, रेखाचित्र, गजल, गीत आदि) में चक प्रक्रिया को अत्यन्त सटीक रखा है। संग्रहीत रचनाएं इसका प्रमाण भी हैं।



इस संग्रह में कुल 66 रचनाएं हैं। 'आखड़ी बूँ', 'ऊकली-रेखा', 'देव दाता अर पेट फूटे भण्डारी री' आदि कहानी, लघुकथा के उदाहरण हैं। इनमें राजस्थानी कथा परम्परा का स्पर्श 'अक हो बामण, नाब फक्रिरा राम' से होता है। 'राजस्थानी संस्कृति' राजस्थान कलात्मक साहित्य री ओळखाण, वचनिका (निबंध), नेटा-नेटी एक समान (एकांकी), 'धाम हसाव' (वाता वातांत) आदि के साथ कविता-गीत खण्ड अपनी गद्दी और घनी आत्मरस सरिता का प्रवाह लिए हैं। 'मे पड़बा जाठंगी', 'आतम राग', 'सरदी', 'लाइली बेटी', 'महारो राजस्थान' (दूहा) प्रभृति इसके उदाहरण हैं। कुल मिलाकर तदन्तर्गत रसात्मक लय के साथ चार टका की बात 'तिकड़म बोड़ तोड़ री' आदि का यथार्थ राव की नै कोई दूषण तो धन धान्य वां पर चवै और 'राज में झूठ नी कैवणी' पर आ टिका है। वह सकल प्रवास अतीत और वर्तमान का सेतु बन उभरने का है।

बाल फुलवारी (बाल साहित्य)

संपादक : डॉ. कृष्णा माहेस्वरी पु.सं. : 96
संस्करण : 2014 मूल्य : ₹30.00

पांचवीं मणिमाला 'बाल फुलवारी' का

संपादन डॉ. कृष्णा माहेस्वरी ने बड़े हुनर और कौशल के मणि कांचन संयोग से किया है। उन्होंने कविता खण्ड और गद्य खण्ड की रचनाओं के चयन में खासी सफलता प्राप्त की है। 'ईश बंदना करना रे बच्चो', 'मोहन से जो बना महात्मा', 'हमें वचन से अनुराग', 'खेल का मैदान', 'बिजली', 'ओ पतंग तुम', 'भीटी सी मनुहार', 'चौदनी', 'गणित पहेलियां' आदि की रसात्मकता और प्रसन्न-चिन्तास मन मोह लेती है। गद्य खण्ड में गांधी की सदाशयता, 'भोलू कुम्हार', 'सबक', 'मानू' इत्यादि रचनाएं बालकों के केन्द्र में रही हैं।

डॉ. माहेस्वरी का यह सुझाव है कि सूचनकारों को अपनी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में भेजकर आत्मविश्वास की परीक्षा लेनी चाहिए। वह सुझाव उनकी रचनाधर्मिता के लिए पुरस्कार से बढ़कर सिद्ध हो सकता है, महत्वपूर्ण है।

अन्ततः यह कहना चाहेंगे कि इन संग्रहों में यदि विभागत कौशल से बोझा हटकर मूल्यांकन करना चाहे तो विषयगत संघेतना अपना महत्त्व रखती है और इनमें से कतिपय ग्रीह सुचनकारों की रचनाएं तो आज के साहित्य में अपनी विस्मयनीय दखल देती प्रतीत होती है। प्रायः सभी रचनाएं भविष्य का संभावना बगाती है। उनमें प्रेम की विविधविधा का आलोक झलकता है। एक तरह से ये साहित्य अपने समय की प्रासंगिकता को न केवल बनाए रखने में सफल रहा है बल्कि अनागत के संदर्भों की ओर भी संकेत दे सका है। आज बाजारवाद, वैश्वीकरण, पूंजीवादी, उपनिवेशवाद, उपभोक्तावादी, फैशनोनुमुखी संस्कृति आदि का जोर है। व्यक्ति और राष्ट्र (देश) के केन्द्र में धन, सत्ता और पद है। इन सबका परिणाम अराजकता, प्रकृति-संपदा का दोहन, चीन हिंसा, अस्थिर होता भविष्य और गिरते मानव मूल्यों पर इस साहित्य में गहरी चिंता व्यक्त हुई है। निस्संदेह यह साहित्य बीसिस, एंटी बीसिस और सिन्थेसिस के संवाद उठाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

-105, सेक्टर-9 ए, द्विज मगरी,
उदयपुर-313002
दूरभाष : 0294-2583848

हनुमानगढ़

रा.उ.प्रा.वि., रातसर को जन सहयोग से 80 सेट लोहे के मेज व स्टूल जिसकी लागत 95000 रुपये तथा इसके अलावा 5000 नकद व 1500 रुपये का इनाम छात्रों हेतु भी प्राप्त हुए। **रा.बा.उ.प्रा.वि., रामगढ़** को श्री सुरेन्द्र माहर द्वारा एक वाटर कूलर + मोटर फीटिंग मय स्टोर निर्माण कार्य करवाया गया जिसकी लागत 125000 रुपये, कक्षा 8 की छात्राओं द्वारा एक गोदरेज अलमारी लागत 2500 रुपये, श्री हरि सिंह कुलडिया व श्रीमती दलजीत कौर से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा जिसकी लागत प्रत्येक की 1400 रुपये, सर्व श्री रूलीचन्द लकेसर (पटवारी) माय कौरी देवी, अमीन खाँ, महेन्द्र देव, श्योराम भांभू, प्रताप सहीरण, से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा प्राप्त हुआ। श्री रतनलाल मांगेराम विनोद मांझू से एक छत पंखा, श्री जयलाल खाती से एक लकड़ी की बड़ी मेज लागत 2500 रुपये, सर्व श्री खेताराम सिंगाठिया, अशोक कुमार, मिट्ठलाल, रामसिंह कस्वां नरेन्द्र कुमार, महावीर, जसवन्त भामू, शिवनारायण स्वामी, मदनलाल अग्रवाल, राम कुमार से प्रत्येक से एक-एक लोहे की मैज प्रत्येक की लागत 1100 रुपये, विनोद कुमार मांझू से 7 लोहे की गद्दी वाली कुर्सी सप्रेम भेंट, रोहिताश कुमार हलवाई से एक पंखा व दो कुर्सी प्राप्त हुई।

जयपुर

बाबा नारायणदस रा.उ.मा.वि., साईबाड़ पं.स. शाहपुरा को श्री मनोज कुमार शर्मा ('ए' क्लाश कॉन्ट्राक्टर) से 11 बजाज कम्पनी के छत पंखे लागत 22000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., सुन्दर पुरा (जयपुर-II)** को श्री पूर्ण चन्द "व्याख्याता" से प्रधानाचार्य की एक चेयर लागत 3,400 रुपये, श्री प्रभुदयाल गुर्जर से एक फर्श निर्माण में सहयोग 2,200 रुपये, श्री अमीचन्द मीना से एक सिलिंग पंखा लागत 1,450 रुपये। **रा.मा.वि., हथरोई** को मांपाक कवर हिम्मत सिंह ग्लूण्डिया मेमोरियल ट्रस्ट गोपाल बाड़ी जयपुर द्वारा 150 विद्यार्थी को स्वेटर लागत 21,000 रुपये, विद्यालय में रंग रोगन मय खिड़की दरवाजे लागत 45,000 रु., 8 पंखे लागत 8400 रुपये, द्यूब लाइट नग 10

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रुपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग भी इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

लागत 4000 रुपये। **रा.बा.उ.प्रा.वि. जैतपुरा वाया चौमूं पं.स. गोविन्दगढ़** को एम.जी. केबल्स एण्ड कम्प्यूनिकेशन लिमिटेड उद्योग विहार जैतपुरा प्रबन्ध निदेशक श्री अरुण माहेश्वरी द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत 70 बालिकाओं को विद्यालय ड्रेस एवं स्वेटर वितरित।

हमारे भामाशाह

चूरू

रा.उ.मा.वि., छापरा को श्री कैलाश कुमार पेड़ीवाल से पाँच पंखे ओरियन्ट लागत 6220 रुपये, खिलाड़ियों को विशेष भत्ता 3000 रुपये, कक्षा 10 के छात्रों हेतु गणित विषय की अतिरिक्त व्यवस्था हेतु 3000 रुपये, श्री बाबूलाल सारड़ा द्वारा नवनिर्मित कमरे के लिए सहयोग राशि 11,111 रुपये, दो Cord less Mouth लागत 2700 रुपये, कार्यक्रम संचालन व्यय 24,000 रुपये, श्री काली देवी हुक्मराम दाधीच चैरिटेबल ट्रस्ट, छापरा बड़ौदा से प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक वाकपीठ-2014 में भाग लेने वाले सभी सज्जनों को हेंडबैग लागत 16050 रुपये, श्री भीखाराम डूडी (समाज सेवी) प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक वाकपीठ-2014 सफल संचालन में सहयोग राशि 11100 रुपये, श्री जीतमल चोरड़िया, दिल्ली द्वारा 100 छात्रों हेतु विद्यालय पौशाक लागत 45000 रुपये, श्री भंवर लाल वापड़िया से बैडमिन्टन खेल हेतु टिनशैड लागत 465000

रुपये, चार टंकण मशीने लागत 32400 रुपये तथा पुरानी टंकण मशीनों की मरम्मत लागत 13000 रुपये, शिवरतन सत्यनारायण पाण्डिया से विद्यालय के खिलाड़ियों के लिए खेल सामग्री लागत 16470 रुपये, टंकण कक्ष एवं कम्प्यूटर रूम हेतु 3 पंखे, लागत 4500 रुपये शशिकान्त शर्मा, मुम्बई से छात्रों के लिए खेल सामग्री लागत 11,000 रुपये, सुनील जड़िया से टेबल-टेनिस के खिलाड़ियों हेतु बेट-1 लागत 5000 रुपये, श्री सत्यनारायण (अग्रवाल) संजय कुमार सुरेखा (अग्रवाल) से टेबिल टेनिस खिलाड़ियों के लिए एक बेट लागत 5000 रुपये, श्री सत्यनारायण बाबूलाल जाजू से बास्केट बॉल के 12 खिलाड़ियों के जूता का आधा मूल्य 6000 रुपये, श्री महावीर प्रसाद सारड़ा से 20 छात्रों हेतु शुल्क 7000 रुपये, श्री कैलाश चन्द्र रतावा से खिलाड़ी (छात्रों) को समर केम्प के दौरान चना व दूध लागत 21320 रुपये, खेल सामग्री लागत 5400 रुपये, चार टाइप राइटर 32800 रुपये, श्री अरुण चाण्डक सी.ए. नई दिल्ली द्वारा समर कैम्प के दौरान खिलाड़ियों को दूध 18000 रुपये, 21 छात्रों का शुल्क 7000 रुपये, शैक्षणिक व्यवस्था हेतु आर्थिक सहयोग 12000 रुपये, श्री नरेन्द्र कुमार नाहटा से 23 छात्रों हेतु शुल्क एवं 21 खिलाड़ियों हेतु पोशाक लागत 15900 रुपये, श्री सुमित कुमार शर्मा से विद्यालय भवन के मुख्य भाग के दरवाजों एवं खिड़कियां के पेंट लागत 20000 रुपये, स्व. बगसी राम रतावा परिवार द्वारा बेडमिन्टन कोर्ट का निर्माण लागत 10000 रुपये, स्व. भीकम चन्द सोनी (भरत गुरु) व शा.शि.रा.उ.मा.वि., छापरा स्मृति क्रीडा कक्ष में निम्न भामाशाहों द्वारा कराया गया कार्य श्री चन्द गजानन्द दुधोड़िया (पूर्वछात्र) 21000 रुपये, श्री असोक कुमार सुंठवाल (पूर्व छात्र) 20000 रुपये, श्री गुप्त दान दाता (2 पूर्व छात्र) 15000 रुपये, श्री प्रदीप कुमार रतावा (पूर्व छात्र) 13000 रुपये, श्री काली देवी हुम्मा राम दाधीच चैरिटेस्ट से 11000 रुपये, श्री रामजी लाल शर्मा से 11000 रुपये, श्री दामोदर प्रसाद स्वामी से 11000 रुपये, श्री राकेश कुमार शर्मा (पूर्व छात्र) से 10,000 रुपये, श्रीमती मंगली देवी दुधोड़िया से 9000 रुपये, श्री गुप्तदान दीक्षा (पूर्व छात्र से 8000 रुपये।

ज्ञा न-विज्ञान के इस चमत्कारी युग में दाँतों तले अँगुली दबाने जैसे अनेक आश्चर्यजनक आविष्कार हुए और निरंतर हो रहे हैं। आज उपलब्ध किसी सुविधा के विरुद्ध न जाने ऐसी कौन सी नई सुविधा का आविष्कार भविष्य में हो जाए, के बारे में आज कदाचित हम कल्पना भी नहीं कर सकते। अपनी बात के समर्थन में, मैं यह कहना चाहूँगा कि दैनिक जीवन में जो सुविधाएं यथा कम्प्यूटर, एस.एम.एस., मोबाइल आदि आज हमें उपलब्ध हैं, कि दो पीढ़ी पहले के हमारे पूर्वजों ने शायद कल्पना ही नहीं की होगी। यह ज्यादा पुरानी बात नहीं है, जब वायरलेस संदेश यंत्र केवल पुलिस-प्रशासन के पास होते थे। आज तो हर व्यक्ति की जेब में वायरलेस मोबाइल उपलब्ध है। कहां पहले बड़े-बड़े वायरलेस संदेश यंत्र होते थे और कहां अब छोटे से छोटे यहां तक कि पेन अथवा घड़ी की शक्ल में मोबाइल यंत्र हो गए हैं और उनमें बात करने के अलावा फोटो खींचने, वीडियो फिल्म बनाने, रिकॉर्डिंग, केलकुलेटर, डायरी, संदेश, ई-मेल, वीडियो गेम और न जाने क्या-क्या सुविधाएं छिपी है। एक अध्ययन के अनुसार मोबाइल फोन में उपलब्ध सुविधाओं में से 70 प्रतिशत का उपयोग हम करते ही नहीं हैं।

यह तो हुई विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विस्मयकारी आविष्कारों की बात जिसने कहने को हमारा जीवन हसीन और सुखमय बना दिया है। अब जरा, इसके अपोजिट पक्ष पर विचार कर लेते हैं। प्रकृति का यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि हर एक वस्तु के दो पक्ष होते हैं, यदि अंधेरा है तो उजाला भी होगा। सुख और दुख को एक ही सिक्के के दो पहलू कहा गया है। कम्प्यूटर, मोबाइल के जरिए उपलब्ध ई-मेल, एस.एम.एस., जैसी सुविधाओं के कारण पहले की तरह परिजनों को पत्र लिखने तथा पत्रों की इन्तजारी जैसे काम अब समाप्त प्रायः हो गए हैं।

कोई समय था, जब सुबह डाक बँटने के समय डाकघर के आगे उन बड़े बुजुर्गों का ताता लगा जाता था, जिनके परिवार के सदस्य बाहर रह रहे होते थे। वे उनकी कुशलक्षेम के पत्रों का इंतजार करते। डाकघर के कमरे की खिड़की से डाकिया आवाज लगा-लगाकर पत्र सौंपता और पत्र प्राप्त करने वाले खुश हो जाते। पत्र लेकर सीधे घर जाते और घर का एक-एक सदस्य उसे ऐसे पढ़ता जैसे पत्र भेजने वाले से साक्षात गले मिल रहा हो। डाक लेकर जब डाकिया गली में आता तो

उसका ऐसे स्वागत होता जैसे आसमान से कोई फरिश्ता उतर आया हो। निरक्षर परिजन पत्र पढ़कर सुनाने की जिद करते। बाहर रह रहे परिजनों के पत्रों के लिए देवताओं को अरदास की जाती और यहां तक कि प्रसाद चढ़ाए जाते। मुझे याद आ रहा है, जब मैं 12-13 वर्ष का था, तब मेरे बड़े भाई दिल्ली में रहा करते थे। उनका सामान्यतः सप्ताह में एक पत्र आ जाता था। यदि किसी सप्ताह पत्र नहीं आता तो मां चिन्ताग्रस्त हो जातीं। वे प्रसाद बोलतीं। सोमवार से पत्र का पता करने डाकघर जाने वाला व्यक्ति प्रसाद की राशि साथ लेकर जाता और यदि पत्र प्राप्त हो जाता तो लौटते समय प्रसाद लेकर आता। घर में प्रसाद चढ़ाने के पश्चात माँ उस पत्र को पढ़ती। सच तो यह है कि उस पत्र की पूजा की जाती और प्रसाद अर्पण के साथ उसे पढ़ा जाता। उस दौर में डाकघर एवं डाकिये की क्या महिमा थी। लोग भले ही मन्दिर ना जाएं मगर डाक वितरण के समय डाकघर जरूर जाते। तब डाकघर जीवन्त हो उठता था। कस्बे में डाक की

प्रतिध्वनि

पत्रों का संसार

गली मशहूर होती थी। डाकिए के हाथ में पत्र देखकर लोगों के चेहरे खिल उठते थे। तब डाकघर और डाकिये के बारे में लेख लिखे जाते थे। डाकिया अंकल को गांव का बच्चा-बच्चा पहचानता था। पुरानी पीढ़ी के लोगों में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने The Postman is an honest Govt servant नहीं याद किया हो। आज की पीढ़ी भी डाकघर एवं डाकिये से कुछ-कुछ परिचय रखती है, लेकिन यदि ये ही हालात रहे तो शर्तिया मानो कि भावी पीढ़ी डाकघर, डाकिये और चिट्ठी-पत्री से सर्वथा अनजान होगी। तब कदाचित डाकघर, डाकिये और चिट्ठी-पत्री का इतिहास पढ़ाया जाएगा।

वर्तमान में प्रचलित पाठ्यपुस्तकों में कक्षा-8 की हिन्दी की पुस्तक वसन्तः भाग-3 में श्री अरविन्द कुमार सिंह का लेख चिट्ठियों की अनूठी दुनिया (पाठ-5) इसी ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करता है। इस लेख में अरविन्द बाबू ने चिट्ठी-पत्री परम्परा का बहुत रोमांचक वर्णन किया है। वे लिखते हैं-

- पत्र व्यवहार की परम्परा भारत में बहुत पुरानी है पर इसका असली विकास आजादी के

बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर-घर तक इसकी पहुंच है। संचार के तमाम उन्नत साधनों के बाद भी चिट्ठी-पत्री की हैसियत बरकरार है।

- हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतजार करते हैं, उसकी कोई मिसाल नहीं।
- महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी, इण्डिया लिखे आते थे और वे जहां भी रहते थे, वहां तक पहुंच जाते थे। ...पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था। कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे।

श्री अरविन्द कुमार सिंह अपने पत्र में पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे पत्र अवश्य लिखें। इसी लेख से प्रेरणा पाकर जालोर माण्डवला गांव में स्थित भरत विद्या मन्दिर के बीस छात्रों ने पत्र लिखने का निश्चय किया। यह उनका पहला पत्र था। पहला पत्र किसे लिखें..., विचारों की इस घाणमथाण में आखिर यह पत्र शिविर सम्पादक को लिखे जाने का निर्णय उन्होंने लिया हमारे लिए इससे अधिक प्रसन्नता और सौभाग्य की बात भला और क्या होगी? इन विद्यार्थियों के लिए असीम शुभकामनाएं। इन बच्चों ने बहुत महत्वपूर्ण विषय पर पहल की। उनके गुरुजन भी साधुवाद के पात्र हैं। उनका यह कदम और शिविर के इस कॉलम में यह चर्चा रंग लाए, यही परमात्मा से प्रार्थना है।

निसंदेह समाचार प्रेषण का श्रेष्ठ जरिया पत्र ही है। दूरभाष, मोबाइल, फैक्स, ई-मेल, एस.एम.एस. की उपस्थिति के बावजूद पत्रों का महत्व कम नहीं है। पत्रों में स्थायित्व होता है, उनमें लिखने वाले की आत्मा के दर्शन होते हैं और लिखित में होने के कारण अभिलेख रहता है। यही कारण है कि राजकीय एवं प्राइवेट कार्यालयों, राजनीति तथा कला, साहित्य व संस्कृति के क्षेत्रों में कार्यों के प्रमुख आधार पत्र ही बनते हैं। संचार के आधुनिक साधनों का सम्मान करते हुए हमें पत्र लिखने की अपनी परम्परा को कायम रखना चाहिए। इससे पत्र लिखने और पढ़ने वाले के मध्य आत्मीयता और स्नेह में सम्बन्ध और प्रगाढ़ होंगे।

-ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह, 2014

सम्मानित कर्मचारियों की चित्रावली



हमारी सांस्कृतिक धरोहर



विश्व विरासत : दुर्ग-ए-चित्तौड़

मद तो चित्तौड़गढ़, बाकी सब मदेया

यह है चित्तौड़ का विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक किला जिसके आंचल में बचतंत्रता, बचामिमा, बचहंस एवं आत्मोत्थर्म के अनेक आख्यात लिपे हैं। चित्तौड़गढ़ के इस भव्य किले का विस्तार लम्बाई एवं चौड़ाई में क्रमशः 13 किमी. एवं 2 किमी. है। महाबाणा प्रताप और बामा के अद्भुत शौर्य एवं पराक्रम का बख्शी चित्तौड़ का यह किला जहां महारानी पद्मिनी के जौहर की नमरण कराता है, वहीं जयमल-नरकाव, गौरा बादल एवं कल्ला बठौड़ की अपूर्व कीर्ति का जीवन्त दस्तावेज है। किले के बिकसित कहलामे वाले चित्तौड़ किले की वर्ष 2013 में विश्व विरासत बथलों में शुमार कर लिया गया है। चित्तौड़गढ़ का यह भव्य दुर्ग अजमेर-वृण्डवा रेल मार्ग पर चित्तौड़ जंक्शन से लगभग चार किमी. दूर गम्भीरी एवं बेहच नदियों के संगम पर अरावली पर्वतमाला पर अवस्थित है।

स्रोत : बगदीन बन्धु कोरा, प्र.अ., रा.प्र.वि. दुर्ग, चित्तौड़गढ़ मो. 8094918107